वर्ष-34, अंक-395

संपर्क भाषा भारती

वर्ष 1990 से प्रकाशित साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, सितंबर—2023, RNI-50756

"तक़लीफ़ें ज़िंदगी और लेखन को तराशती हैं" भूमिका द्विवेदी अश्क...

अपनी बात...

प्रवास के पहले दिन 16 अगस्त को श्री कृष्ण कुमार यादव जी के वाराणसी कैंट स्थित कार्यालय समय से पूर्व पहुंच गए थे। दिन में भोजन नहीं लिया था।

एक ऑटो वाले से अच्छे भोजनालय के बारे में पूछा तो उसने कहा चलिए रामकटोरा लिए चलता हूं, वहां बहुत बढ़िया भोजनालय है।

सो उसके साथ अन्नपूर्णा भोजनालय पहुंचे।

भोजन अच्छा, जेंट्री अच्छी, वातानुकूलित वातावरण। पर एक सज्जन, भोजन देर से परोसे जाने से कुपित हो कर पूरे रेस्त्रां में हल्ला मचाए हुए थे। भोजन करने वाले उन्हें नजरंदाज किए रहे।

इंसान, भूख में पागल हो जाता है। इसीलिए शास्त्रों में भोजन करते हुए, मद्यपान करते हुए और संभोगरत को देखने की मनाही करता है। उस समय वे, स्व में नहीं रहते।

17 अगस्त को मुझे कबीर चौरा निकलना था। 2006–2007 में नेशनल फिल्म आर्काइव, पुणे से सितारा देवी की फिल्मोग्राफी पर फेलोशिप मिलने के बाद कबीर चौरा के दसियों चक्कर लगे थे।

सितारा देवी, मुगले आजम बनाने वाले के आसिफ की पहली पत्नी थीं और मशहूर कथक नृत्यांगना भी।

हालांकि वे उन दिनों पैडर रोड, मुंबई में रहती थीं। पर उनका दिल बनारस के कबीर चौरा में रहता था।

वे मूलतः कबीर चौरा की ही थीं। उनके परिवार के अन्य सदस्य कबीर चौरा में ही रहते थे। मैं माधव मिश्रा से मिलने यहीं आया करता था।

अति लोकप्रिय, प्रसिद्ध तबलावादक पंडित किशन महाराज भी उसे गली में कुछ आगे चलकर रहते थे।

पृष्ठ 10 पर जारी

संपर्क भाषा भारती

प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा

दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

संपर्क भाषा भारतीय

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

आशा शैली : शैलसूत्र त्रैमासिक पत्रिका —सम्पादन

इन्दिरा नगर-2, लाल कुआं, हल्द्वानी-263402 उत्तराखंड

फोन नंबर : 7055336168/9456717150

ईमेल : sha.shaili@gmail.com

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन

जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश

फोन नंबर : 8461912125

ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

सितंबर——2023

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		2
2	सभा/समाचार	डा सविता चडढा सम्मानित	6-7
3	पंडित बृज मोहन अवस्थी सम्मान		8-9
4	काशी प्रवास		10-15
5	श्री कृष्ण कुमार यादव सम्मानित		16
6	विश्व पटल पर हिन्दी के बढ़ते कदम	कृष्ण कुमार यादव	17-22
7	कहानी : वो कौन था जो	आशा शैली	23-25
8	कविता	शील निगम	26
9	कविता	सूर्य प्रकाश मिश्र	26
10	कविता	कृष्ण चन्द्र महादेविया	26
11	कहानी : रिश्तों की मधुरता	अंजना छलोत्रे 'सवि'	27-29
12	कहानी : संबित मिश्र के पास जब मैं नहीं थी	पारमिता षड़ंगी	31-39
13	कविता	डॉ शरद श्रीवास्तव शरद	39
14	कविता	प्रसन्नवदन चतुर्वेदी 'अनघ'	39
15	प्रकाश स्तम्भ की भांति है शिक्षक	अकांक्षा यादव	40-42
16	कविता	अलंकृता राय	43
17	कविता	कंचन सिंह परिहार	43
18	कविता	अनिल कुमार मिश्र	43
19	तकलीफ़ें ज़िंदगी और लेखन को तराशती हैं॥	डॉ अरविंद कुमार	44-47
20	कहानी : गुलाबी आँखों का दर्द	प्रतिमा पुष्प	48-50
21	कहानी : मटियामेट	प्रभुदास पटेल	51-53
22	कविता	सूर्य प्रकाश मिश्र	54
23	कविता	संतोष कुमार प्रीत	54
25	कविता	चंद्रकांता सिवाल 'चंद्रेश'	54
26	जन हितैषी वाले कुछ देश	शेर सिंह	55-57
27	कविता	प्रतिभा प्रभा	58
28	कविता	विकास पाण्डेय 'विदीप्त'	58
29	तुम कब आओगे?	रामानुज अनुज	59-61
30	कविता	बाबा कल्पनेश	62

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713

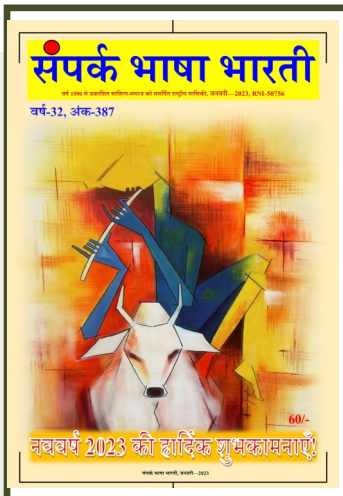

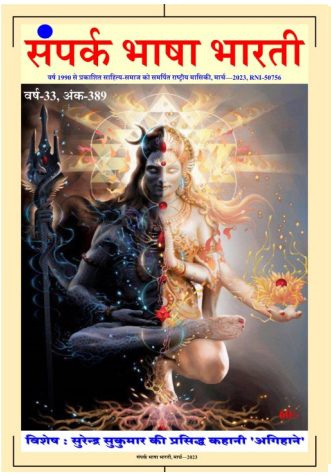

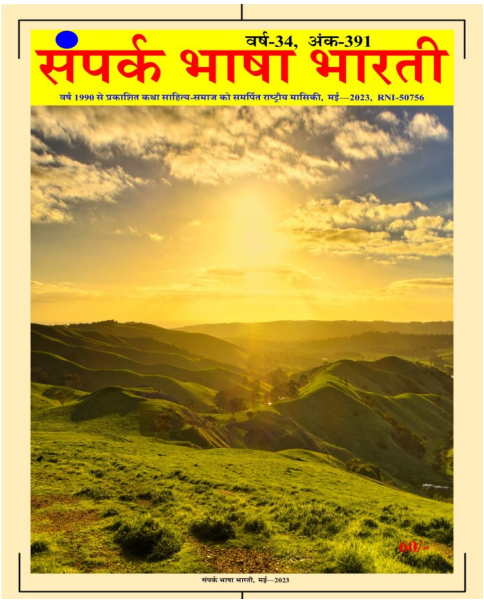

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

सभा समाचार

डा सविता चडढा को अंतरराष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन मॉरीशस में मिला राष्ट्र गौरव साहित्यिक सम्मान

मारीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री पृथ्वीराजसिंह रूपन ने किया डॉक्टर सविता चड्ढा की पुस्तक का लोकार्पण

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन में भारत से सहभागिता कर रही डॉ सविता चड्ढा को राष्ट्रीय गौरव साहित्यिक सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मारीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री पृथ्वीराजसिंह रूपन ने सविता चड्डा की सद्य प्रकाशित कृति "दशरथ महल" का लोकार्पण भी किया। इस अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ माधुरी रामधारी जी एवं मॉरीशस के उच्चाधिकारियों के साथ-साथ महामहोपाध्याय, आचार्य इंदु प्रकाश मिश्रा, ज्योतिषाचार्य की उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय रही । भारत के साहित्यकार के लिए यह बहुत ही गौरव के पल थे। डॉक्टर सविता चडढा ने इस दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य सम्मेलन में सहभागिता करते हुए "हिंदी साहित्य में कहानी की भूमिका" पर अपना शोध पत्र भी प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर सामाजिक सरोकारों से संबंध

आईपी फाउंडेशन की अध्यक्षा डॉ स्मिता मिश्रा ने डॉ सविता चड्डा के उज्जवल भविष्य की कामना की और उन्हें हिंदी साहित्य के क्षेत्र में किए गए रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्य, भारतीय संस्कृति को अक्षुण्य रखने में आपके प्रशंसनीय कार्यों की सराहना करते हुए राष्ट्र गौरव साहित्यिक सम्मान अर्पण किया।

उल्लेखनीय है कि श्रीमती सविता चड्डा पिछले चार दशकों से निरंतर लेखन कार्य कर रही हैऔर विभिन्न विषयों पर उनकी अब तक 50 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। लेखिका को 1995 में मैसूर प्रचार परिषद के द्वारा हिंदी सेवी सम्मान भी दिया जा चुका है।

डॉ सविता चड्ढा को पिछले वर्ष हरियाणा साहित्य अकादमी से हरियाणा गौरव सम्मान मिला है इसके अलावा उन्हें देश भर से साहित्य सृजन के लिए अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं साहित्य की कई विधाओं की लेखिका

डॉ सविता चड्ढा साहित्य सृजन के साथ-साथ समाज सेवा में भी कई दशकों से कार्य कर रही हैं।

डॉ. सविता चड्ढा एक संवेदनशील और जागरूक लेखक हैं जिन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखकर अपने विशिष्ट पहचान बनाई है। 28 अगस्त, 1953 को जन्मी श्रीमती सविता चड्ढा ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है। एम. ए. अंग्रेजी, एम. ए. हिंदी, के साथ-साथ आपने पत्रकारिता, विज्ञापन और जनसंपर्क में डिप्लोमा और दो वर्षीय कमर्शियल प्रैक्टिस डिप्लोमा, प्रथम डिवीजन में विशेष योग्यता के साथ पास किया है।

जहां आपका लेखन बहुआयामी है वहीं आपकी 8 बाल कहानियां एनसीआरटी दवारा पाठ्यक्रम में चयनित हैं। आपकी लिखित तीन कहानियों पर टेलीफिल्म निर्माण हो चुका है और कई कहानियों पर नाटक मंचन हो चुका है। आप 60 से अधिक कहानियां आकाशवाणी पर पढ़ चुके हैं , वहीं कक्षा 6 ,7 ,8 के पाठ्यक्रम में भी आपकी तीन बाल कहानियों को शामिल किया गया है। आपकी कहानियां अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू भाषा में अनुवादित है । आपकी पत्रकारिता की तीन पुस्तकों को दिल्ली विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय और देश के कई पत्रकारिता विश्वविद्यालयों में सहायक ग्रंथों के रूप में शामिल किया गया है और पढ़ाया जा रहा है । आपकी कहानियों पर विश्वविद्यालयों में शोध हो चुका है और हो भी रहा है। आपके व्यक्तित्व और कृतित्व पर कई पुस्तकें और पत्रिकाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। लोक सभा, राज्य सभा टीवी और दूरदर्शन पर " पत्रिका कार्यक्रम " में और कई समाचारपत्रों में आपके इंटरव्यू प्रकाशित हो चुके हैं।

(साहित्य सृजन के अलावा आपने देश के प्रतिष्ठित बैंक, पंजाब नेशनल बैंक के राजभाषा विभाग में वरिष्ठ प्रबंधक के रूप में कार्य किया है और दिल्ली बैंक नगर राजभाभाषा कार्यान्वयन समिति के माध्यम हिंदी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिसके लिए आपको बैंक ने समय समय पर सम्मानित किया हैं। केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् में साहित्य मंत्री के रूप में आपकी सेवाएं और बैंक और देश की कई पत्रिकाओं के संपादन कर अपने हिंदी भाषा की अप्रतिम सेवा भी की है।) आपने कई देशों की साहित्यिक यात्राएं की हैं और विभिन्न विषय पर अपने लेख, व्याख्यान, पर्चे प्रस्तुत किए हैं।

हिंदी अकादमी, दिल्ली का 1987 में साहित्यिक कृति पुरस्कार, हरियाणा साहित्य अकादमी का हरियाणा गौरव सम्मान, वूमेन केसरी, साहित्य गौरव, राष्ट्र रत्न , साहित्य सुधाकर , साहित्य शिखर सम्मान, दिल्ली गौरव के अलावा देश विदेश की 60 से भी अधिक संस्थाओं ने आप को सम्मानित किया है।

इस अवसर पर देश से पधारे अनेक साहित्यकार इस सम्मान समारोह में सम्मिलित हुए जिन्हें सम्मानित किया गया विशेष रुप से शारदा मित्तल, प्रीति मिश्रा, मुकेश गंभीर, राजपाल यादव, चंद्रमणि सिंह, कविता सिंह प्रभा, के नाम प्रमुख हैं।

पण्डित बृजमोहन अवस्थी सुस्मृति संस्थान :

1 सितम्बर को कुलपहाड़ (महोबा) में आयोजित सारस्वत समारोह

बुंदेलखंड के ख्यातिलब्ध साहित्यकार एवं समाजसेवी पंडित बृजमोहन अवस्थीजी का जन्म 1 सितंबर, 1937 को नाथ बाबा की वंशबेल की दसवीं पीढ़ी में अपने पैतृक निवास 'शिवदीन वाटिका' कुलपहाड़ (महोबा) के शिक्षित व कुलीन कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आपके पिता पण्डित श्री महेश प्रसाद अवस्थी धर्म परायण, परोपकारी, हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा के विद्वान थे। आपकी मां श्रीमती सुमित्रा देवी अवस्थी धर्मपरायण, संस्कारित और विदुषी महिला थीं। पांच भाइयों एवं दो बहनों में आपका स्थान तीसरा था। आपकी अग्रजा श्रीमती सावित्री देवी दीक्षित इंदौर में अपने पुत्रों के साथ रहतीं हैं, अग्रज पण्डित मदन मोहन अवस्थी, मां शारदा के अनन्य भक्त थे, आप मैहर में गोलोकवासी होने तक रहे। आपकी अनुजा श्रीमती गायत्री देवी शुक्ला मध्य प्रदेश पुलिस सेवा से अवकाश प्राप्त कर खजुराहों में मां जानकी का भव्य मन्दिर व आश्रम बनवाकर गोलोकवासी हुईं। अनुज व आग्ल भाषा के विद्वान, श्री चंद्रमोहन अवस्थीजी एन सी एल से अवकाश प्राप्त कर बेढ़न जिला सीधी में निवास कर स्वाध्याय कर रहे हैं। चौथे भ्राता श्री कृष्ण मोहन अवस्थीजी भी एन सी एल से अवकाश प्राप्त कर लखनऊ में रह रहे हैं। सबसे छोटे अनुज प्रो. नरेंद्र मोहन अवस्थीजी प्रधानाचार्य पीजी कॉलेज से अवकाश प्राप्त हैं। आप भाषा, साहित्य एवं आध्यात्म के प्रकांड विद्वान हैं। आपकी भूगोल, पर्यावरण की दो दर्जन कृतियां पाठ्यक्रम में हैं। आपके दो कहानी संग्रह एवं आध्यात्म पर भी पुस्तकें प्रकाशित हैं। यूट्यूब चैनल में आपके आध्यात्मिक विचार लोकप्रिय हैं। आप टीकमगढ़ नई निवास और कभी कभी बैंगलौर पुत्र शेखर के यहां एवं अपने पैतृक घर कुलपहाड़ में रहते हैं।

पण्डित बृजमोहन अवस्थीजी की प्रारंभिक शिक्षा कुलपहाड़ में एवं बाद की शिक्षा मौदहा, लखनऊ एवं कानपुर में हुई थी। आपने बिलासपुर (छतीसगढ़) में लगभग दस वर्ष मत्स्य विभाग में नौकरी की और अपने पिताजी पंडित महेश प्रसाद अवस्थी जी के आदेश पर नौकरी से 1971 में त्यागपत्र देकर आजीवन कृषि कार्य देखने लगे, साथ ही आपने अपनी रचनाधर्मिता नहीं छोड़ी। विद्यार्थी जीवन से ही आप खेलकूद एवं साहित्य के पठन-पाठन से जुड़े रहे, इन्हीं दिनों से आपने आलेख, कहानियां लिखना प्रारंभ किया। आपके अनेक आलेख बुंदेलखंड से प्रकाशित दैनिक पत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं। आपके द्वारा लिखा गया काल-चिंतन काफी लोकप्रिय रहा है। आपने अपने जीवनकाल में कुल बारह पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें से 'बुंदेलखंड का सेनापति महल', 'बुंदेलखंड की ऐतिहासिक सुंगिरा की गढ़ी' एवं 'बुंदेलखंड की मस्तानी एवं पेशवा बाजीराव' अभी तक प्रकाशित हो चुकी हैं। आपकी समस्त रचनाओं को प्रकाशित करने का बीड़ा मुंबई के 'प्रलेक प्रकाशन' ने उठाया है। इसी क्रम में 'पंडित बृजमोहन अवस्थी

रचनावली' के प्रथम भाग का लोकार्पण उनके जन्मदिन एक सितम्बर,2021 को हो चुका है। आप समाज सेवी भी थे। आपके जीवन का उद्देश दूसरे की खुशियों में खुश होना रहा है। आपने अपने जीवन काल में कभी भी किसी को दुखी नहीं किया, बल्कि, सदैव दूसरों के दुख को कम करने का प्रयास करते रहे। आपके लेखन में अध्यात्म, साहित्य और पर्यावरण की चेतना की झलक के साथ ही बुंदेलखंड के वैभवशाली इतिहास का दिग्दर्शन होता है। आपके जन्मदिन के शुभ अवसर पर वृक्षारोपण एवं निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन भी किया जाता है। आपके माता-पिता, पितामह, परपितामह एवं सभी चाचाओं का समाज के प्रति कोई न कोई योगदान रहा है। इस कारण पण्डित बृजमोहन अवस्थी सुस्मृति संस्थान की ओर से प्रत्येक वर्ष सारस्वत समारोह आयोजित कर उन सभी के नाम से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व योगदान हेतु विभूतियों को सम्मानित किया जाता है।

आगे की भावी पीढ़ी में आपके प्रिय भांजे डॉ अवधेश दीक्षित श्री योगेन्द्र शुक्ला, प्रो राजेश दीक्षित, श्री सर्वेश शुक्ला, श्री अनुज शुक्ला, प्रो राजीव दीक्षित

प्रिय भांजियों श्रीमती बीना दीक्षित, श्रीमती चित्रा शुक्ला। प्रिय भतीजे श्री राजू अवस्थी, श्री राजीव अवस्थी, श्री विनय अवस्थी, श्री आशीष अवस्थी, श्री संजीव अवस्थी, श्री शेखर अवस्थी, प्रिय भतीजियां श्रीमती आराधना अग्निहोत्री (गोलोकवासी), रुचि पांडेय, श्रीमती साधना द्विवेदी, श्रीमती अल्पना अवस्थी, श्रीमती वंदना नायक, श्रीमती अर्चना मिश्रा, श्रीमती अर्चना अवस्थी, श्रीमती सुमन द्विवेदी, श्रीमती प्रतिभा जोशी अपने अपने परिवार के साथ खुशहाल हैं। आगे की पीढ़ी में अंबुज दीक्षित, मोनू शुक्ला, शिवसागर अवस्थी, श्रीमती सुरभि, सिद्धार्थ दीक्षित, सौरभ दीक्षित, सौरभ शुक्ला, श्रीमती अंशुल, आदित्य शुक्ला, अभिषेक शुक्ला, सुयोग दीक्षित, प्रह्लाद मिश्रा, सुयश दीक्षित, श्रीमती दीपा पांडेय, श्रीमती शिल्पा शुक्ला, श्रीमती आस्था शुक्ला, शिवा नायक, श्रीमती धारा, सृष्टि पांडेय, अंकिता अग्निहोत्री, प्रेम सागर अवस्थी, वासु अवस्थी, केशव अवस्थी, बिंदा अवस्थी, कृष्णा पांडेय, वैष्णवी अवस्थी, सौम्या दीक्षित, श्रद्धा दीक्षित, डॉ साध्या शुक्ला, माधव अवस्थी, आशुतोष अग्निहोत्री, श्रेया मिश्रा, डॉ. आराध्या शुक्ला, ईशता द्विवेदी, प्रखर द्विवेदी, वैष्णव अवस्थी, पूजा अवस्थी, सिद्धार्थ अवस्थी, श्रेयांश मिश्रा, अमर शुक्ला, ॐ अवस्थी दिव्यांशी, भाव्या शुक्ला, निश्चय जोशी, आशुतोष अवस्थी, शिवम् अवस्थी, खुशी अवस्थी, हर्षित जोशी, समृद्धि अवस्थी, गौरी अवस्थी, रुद्रांश अवस्थी, मयूख अवस्थी एवं शिवांश अवस्थी (शिवसागर अवस्थी के प्रथम पुत्र अर्थात पण्डित मदनमोहन अवस्थी का प्रपौत्र 31 अगस्त सोमवार छतरपुर में जन्म हुआ) आदि प्रभु कृपा से मानवता, समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए अपने कुल, परिवार व देश का नाम रोशन करेंगे। पण्डित बृजमोहन अवस्थी जी का स्वप्न अखंड भारत का रहा है। उन्होंने भारत पाक बांग्ला देश एकीकरण पर शोधपरक ग्रन्थ की रचना भी की है।

नगर पंचायत कुलपहाड़ द्वारा श्री प्रदीप जैन (तत्कालीन केंद्रीय राज्य मंत्री) से पण्डित बृजमोहन अवस्थी जी की स्मृति में विवेकानंद मार्ग का उद्घाटन कराया गया।

आपकी चार बेटियां श्रीमती ममता मिश्रा झांसी, श्रीमती सरिता अग्निहोत्री कानपुर, डॉ सविता शुक्ला लखनऊ एवं श्रीमती विनीता मिश्रा छतरपुर (म.प्र.) में अपने परिवर्बके साथ प्रसन्न हैं। आपके तीन बेटे महेन्द्र, शैलेन्द्र एवं डॉ भूपेंद्र हैं। वर्तमान में आपके कुल सत्रह पौत्र, पोत्रियां एवं छह संती/संतियां हैं। सभी सुखी व स्वस्थ हैं। मैं अकिंचन महेन्द्र भीष्म ऐसी दिव्यात्मा का ज्येष्ठ पुत्र हूँ।

महेन्द्र भीष्म मो.7607333001

काशी प्रवास...

सितारा मानती थीं कि वह किशन महाराज की प्रेमिका भी थीं।

किशन महाराज तो नहीं उनके पुत्र पूरन महाराज से अवश्य यहां मुलाकात होती थी।

पूरन महाराज अवसाद में रहते थे, उनकी पत्नी उन्हें छोड़ कर किसी और के साथ जा बसी थीं।

कलाकारों में घर टूटना बहुत आम है। वे लोग इसे समस्या नहीं opportunity मानते हैं।

कलाकर जिससे प्रभावित होते हैं उसके साथ जा बसते हैं।

दिलीप कुमार की छोटी बहन शादीशुदा के आसिफ की दूसरी बीवी बन गई तो आसिफ ने सितारा उर्फ अल्ला रक्खी को छोड़ दिया।

अल्ला रक्खी को जरा मलाल नहीं हुआ, उसने दिलीप कुमार से प्रेम करना शुरू कर दिया जिसे सायरा बानू ने तोड़ा। फिर सितारा ने चंदर बारोट से फेरे ले लिए।

खैर, कबीर चौरा मैं अपराह्न एक बजे पहुंच गया।

माधो मिश्र का निधन 2016 में हो चुका था।

उनके बेटे विशाल मिश्रा को मैंने 2007 में देखा था।

बहुत सुंदर, एक दम कमसिन कन्या की तरह। वही हावभाव।

मुझे बताया गया कि वो घर पर नहीं हैं।

मैं पूरन महाराज के घर की तरफ बढ़ गया।

थोड़ी देर दरवाजा खटखटाने के बाद एक 48 वर्षीया सी दिखने वाली औरत ने दरवाजा खोला और आने का सबब पूछा।

मैंने कहा कि पूरन महाराज जी से बरसों पहले मिला था, अब फिर मिलना चाहता हूं।

उन्हों ने कहा कि वे अभी घर पर नहीं हैं।

फिर उन्हों ने पूरन महाराज जी को फोन लगा दिया।

पूरन जी से राम राम हुई। उन्हों ने आने का कारण पूछा।

मैंने बताया, बस यूं ही बातचीत के लिए दिल्ली से आया था।

वे बोले अब मैं बिना दक्षिणा लिए कुछ नहीं बोलता।

मैंने कहा आप चुप ही रहिए।

फिर, मैं वहां से निकल आया।

ऐसी ही मांग मुझ से सितारा ने भी की थी, तब मैंने उन्हें वह कहानी भेज दी थी जो उन पर सादत हसन मंटो ने लिखी थी।

मंटो ने बड़ी निर्लज्जता से सितारा के सारे वस्त्र उतार दिए थे।

उसके बाद से सितारा मुझसे हमेशा मिलती रहीं।

पूरन महाराज के घर से बाहर निकला, विशाल मिश्रा के घर से दो कदम आगे बढ़ा ही था कि विशाल का फोन आगया।

पूछने लगे कि आप घर आए थे, मैं ऊपर के कमरे में था इस वजह से मुलाकात नहीं हो पाई। इस समय आप कहां हैं?

मैंने जवाब दिया, आप के घर के ठीक बाहर।

विशाल से एक घंटे, अच्छी मुलाकात रही।

मैंने उसेवसीतारा देवी की पुस्तक दिखलाई और बताया कि अगला प्रोजेक्ट सितारा देवी, किशन महाराज, कंठे महाराज, राजन–साजन मिश्र जैसे कलाकारों की अगली पीढ़ी पर केंद्रित होगा।

उन्हों ने सभी नवोदितों के नंबर दिए और अगले दिन होने वाले तबला वादन कार्यक्रम केलिए निमंत्रित भी किया। उन्हों ने बताया कि

उस कार्यक्रम में पूरन महाराज की बेटी भी तबला वादन करेंगी।

उन्हों ने यह भी बताया कि जिस महिला से आप अभी मिल कर आ रहे हैं वह पूरन महाराज की दूसरी पत्नी हैं।

विशाल से मिल कर बाहर निकलनेवाला था कि बनारस में मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई।

मुझे 4 बजे सांय DLW पहुंचना था जहां मेरे सम्मान में एक काव्य गोष्ठी का आयोजन DLW परिसर के पुस्तकालय में आयोजित होना था।

कबीर चौरा से साढ़े चार बजे निकल पाया।

पूरा बनारस डेढ़ घंटे की बारिश में जल प्लावित हो गया।

मुश्किल से एक ऑटो वहां तक ले जाने केलिए तैयार हुआ, उसने 4 किलोमीटर केलिए 300 रुपए लिए और 6 बजे गंतव्य पर पहुंचाया।

इस बीच आयोजकों से अनेकों बार बात हुई।

अंततः उनसे अनुरोध किया कि कार्यक्रम शुरू कर दें, जैसे ही ट्रैफिक सुधरेगा हम पहुंच जाएंगे।

बारिश के चलते सड़क में दोनों तरफ दो फुट के लगभग पानी खड़ा हो गया था।

कई चाइनीज रिक्शा बैट्री समेत पानी में डूब

गए थे। युवक उन्हें धकेल कर आगे पीछे कर रहे थे।

बहुत बुरा हाल था।

किसी तरह जब 6 बजे आयोजन स्थल पर पहुंचे तो काव्य गोष्ठी पुनः आरंभ की गई।

चलिए पुनः लौटता हूं 16 अगस्त की तारीख को।

मैंने काशी के अपने प्रस्तावित कार्यक्रम की जानकारी युवा और संजीदा लेखक काशिफ़ हयात को दे दी थी।

काशिफ़, BHU से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और साथ ही साथ लेखन से भी जुड़े हुए हैं। काशिफ़ अपना मीडिया चैनल भी चलाते हैं।

डॉक्टर सत्या सिंह जी की हिंदी संस्थान से पुरस्कृत एक पुस्तक है "भारतीय कानून में महिलाओं के अधिकार", काशिफ़ इस पुस्तक को इंग्लिश भाषा में अनुदित कर चुके हैं। पुस्तक शीघ्र ही पाठकों के समक्ष होगी।

मेरे काशी आने की जानकारी ने काशिफ़ के उत्साह को चौगुना कर दिया है।

उन्हों ने मुझ से कहा कि वे मुझे लेने स्टेशन पर

पहुंच जाएंगे।
मैंने उनसे विनम्रता से कहा कि ऐसा श्रम न उठाएं।
हम 11 बजे मिलते हैं।
वे निश्चित समय पर उपस्थित हो गए।
उन्हों ने बताया, उनके बड़े भाई फ्रैंक हसरत BHU से पहले ही उर्दू में Phd कर रहे हैं और उनके एक मित्र भी हैं क्या वे गोष्ठी में आ सकते हैं? मैंने कहा क्यों नहीं।
तो उपरोक्त गोष्ठी में वे सब मौजूद रहे।
गोष्ठी को आयोजित करने का सारा श्रेय श्री सूर्य प्रकाश मिश्र जी को जाता है। श्री मिश्र, सेवा निवृत्त वरिष्ठ बैंक अधिकारी हैं। विगत 12 वर्षों से उन्हों ने नवगीत क्षेत्र में प्रवेश किया है और अब तक लगभग 900 ज़मीन से जुड़े अद्वितीय गीत वे रच चुके हैं।
बनारस से लगे हुए, कारपेट नगरी भदोही से लब्ध प्रतिष्ठित कथाकार और कवयित्री सुश्री प्रतिमा पुष्प भी इस आयोजन में विराजमान थीं। भीषण वर्षा के चलते श्री मधुकर मिश्र सदृष्य कई ख्यातनाम गीतकारों के सान्निध्य से वंचित रहना पड़ा किंतु यह काव्य गोष्ठी जिसमें फ्रैंक हसरत ने अपनी तीन ग़ज़लें सुनाई। उनके साथ पधारे श्री ने चार खूबसूरत गीत पढ़े। इसके बाद सर्व श्री...
ने अपनी कविताओं का पाठ किया।
गोष्ठी का संचालन श्री ने किया और कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री महेश अलंकार ने की।
कार्यक्रम के बाद प्रतिमा जी का आग्रह रहा कि बनारस स्वीट्स से छैने वाले दही बड़े अवश्य लिए जाएं।
तो हमने निश्चय किया कि रात का पारंपरिक खाना त्याग कर यही कुछ लिया जाय। सो, छैने वाले दही बड़े के साथ टमाटर चाट और टिक्की को भी पैक करवा लिया गया।
जहां प्रतिमा जी ने अपनी कार से उतारा वहीं से हमें तत्काल ऑटो मिल गया और हम रात दस बजे के लगभग गेस्ट हाउस वापस लौट आए।
18 अगस्त को एक अन्य गोष्ठी थी। सूर्य प्रकाश मिश्र जी ने अपराह्न 2 बजे तैयार रहने को कहा था।

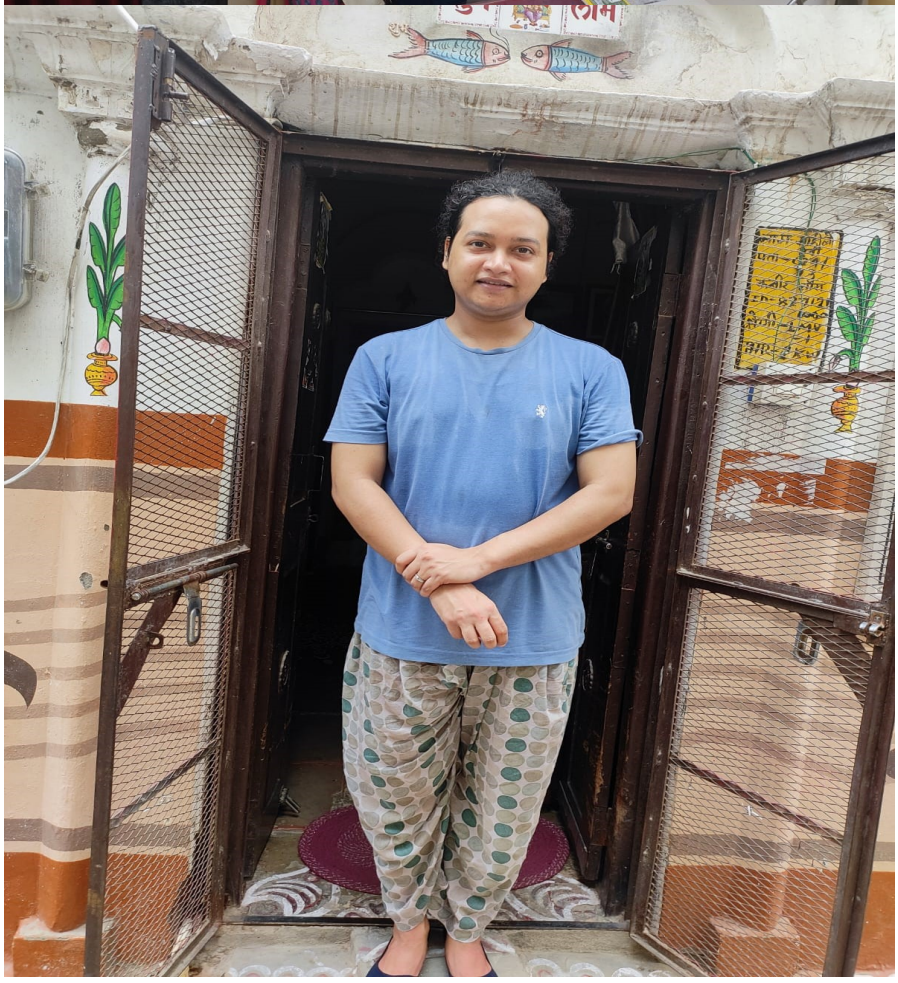

कल मूसलाधार बारिश के बावजूद बनारस का मौसम उमस भरा बना हुआ था। बादल आसमान में आंख मिचौनी खेल रहा था। सूरज के ढंकते ही मौसम सुहाना लगने लगता किंतु अगले ही पल सूरज का ताप बनारस को झुलसाने लगता।

जीवन में छाया प्रदान करने वाली सुखकर बदलियां ज्यादा देर तक रुक कर नहीं रहतीं। ठीक 2 बजे सूर्य प्रकाश जी गेस्ट हाउस पहुंच गए।

हम पहले से ही तैयार बैठे थे। दरअसल रेलवे के अधिकारियों का यह गेस्ट हाउस वाराणसी कैंट रेलवे स्टेशन से बाहर निकलते ही बना हुआ है। स्वच्छ, साफ सुथरा। कमरे बड़े बड़े हैं। फुरसत में एक दिन कमरे का नाप लिया था। 14X20 फुट का कमरा था, आधुनिक चमकदार टाइलें लगी हुई थीं। उसके साथ संलग्न वाश रूम लगभग 6.5X20 फुट का। कमरा स्वस्थ रूप से नए एसी युक्त था जो 2 टन का था।

24 के तापमान पर कमरा खासा अच्छा ठंडा

वाश रूम साफ, एंटी स्किड टाइल वाला था। गीज़र काम कर रहा था और ठंडा गर्म पानी मिल रहा था।

स्टेशन के समीप होने की वजह से चारों तरफ भोजन की पर्याप्त सुविधा और विकल्प उपलब्ध होने की वजह से गेस्ट हाउस का किचन शायद यहां ठहरने वाले कम ही करते होंगे। ऐसा तब पता चला जब एक रात, 8 बजे उनसे एक थाली भोजन के लिए कहा। हमें पता चला कि भोजन की बुकिंग शाम 6 बजे तक ही स्वीकार की जाती थी। हां! चाय हर समय उपलब्ध रहती थी। एक थाली भोजन का मूल्य 150 रुपए और चाय का मूल्य 10 रुपए उद्धृत था। गेस्ट हाउस से केवल चाय की सुविधा का ही लाभ लिया गया। नाश्ते के लिए स्टेशन के बाहर के प्रोविजन स्टोर से 20 रुपए वाले ब्रेड पैक और अमुल के 100 ग्राम वाले मक्खन का उपयोग बेहतर रहा, मक्खन शायद 56 रुपए का होगा।

तो, 18 अगस्त को 2 बजे सूर्य प्रकाश मिश्र

सूरज के ढंकते ही मौसम सुहाना लगने लगता किंतु अगले ही पल सूरज का ताप बनारस को झुलसाने लगता।

जीवन में छाया प्रदान करने वाली सुखकर बदलियां ज्यादा देर तक रुक कर नहीं रहतीं।

ठीक 2 बजे सूर्य प्रकाश जी गेस्ट हाउस पहुंच गए।

हम पहले से ही तैयार बैठे थे। दरअसल रेलवे के अधिकारियों का यह गेस्ट हाउस वाराणसी कैंट रेलवे स्टेशन से बाहर निकलते ही बना हुआ है। स्वच्छ, साफ सुथरा। कमरे बड़े बड़े हैं। फुरसत में एक दिन कमरे का नाप लिया था। 14X20 फुट का कमरा था, आधुनिक चमकदार टाइलें लगी हुई थीं। उसके साथ संलग्न वाश रूम लगभग 6.5X20 फुट का। कमरा स्वस्थ रूप से नए एसी युक्त था जो 2 टन का था।

24 के तापमान पर कमरा खासा अच्छा ठंडा हो जाता था।

जी के साथ अर्दली बाज़ार के लिए निकले। वहां के शासकीय पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री कंचन सिंह परिहार हमारी ही प्रतीक्षा में थे। उनके साथ सर्व श्री प्रसन्नवदन चतुर्वेदी जो कि अधिवक्ता हैं, डॉक्टर शरद कुमार शरद जो स्थानीय कॉलेज में इंग्लिश के लेक्चरर हैं, केशव शरण जो भारतीय डाक तार विभाग से सेवानिवृत्त हुए हैं और ,, भी मौजूद थे। बाद में अमर उजाला के वरिष्ठ पत्रकार श्री चेतन स्वरूप भी इस आयोजन में शामिल हो गए। श्री कंचन सिंह परिहार जी बहुत उत्साही अधिकारी हैं जो बेहतरीन काम कर रहे हैं। जब से उन्हों ने इस पुस्तकालय की जिम्मेदारी उठाई है, उन्हों ने इसका काया कल्प कर दिया है। जर्जर पड़े पुस्तकालय में उन्हों ने प्राणघोष कर दिया है।

18 अगस्त को एक अन्य गोष्ठी थी। सूर्य प्रकाश मिश्र जी ने अपराह्न 2 बजे तैयार रहने को कहा था।

कल मूसलाधार बारिश के बावजूद बनारस का मौसम उमस भरा बना हुआ था। बादल आसमान में आंख मिचौनी खेल रहा था।

वाश रूम साफ, एंटी स्किड टाइल वाला था। गीज़र काम कर रहा था और ठंडा गर्म पानी मिल रहा था।

स्टेशन के समीप होने की वजह से चारों तरफ भोजन की पर्याप्त सुविधा और विकल्प उपलब्ध होने की वजह से गेस्ट हाउस का किचन शायद यहां ठहरने वाले कम ही करते होंगे। ऐसा तब पता चला जब एक रात, 8 बजे उनसे एक थाली भोजन के लिए कहा। हमें पता चला कि भोजन की बुकिंग शाम 6 बजे तक ही स्वीकार की जाती थी। हां! चाय हर समय उपलब्ध रहती थी। एक थाली भोजन का मूल्य 150 रुपए और चाय का मूल्य 10 रुपए उद्धृत था। गेस्ट हाउस से केवल चाय की सुविधा का ही लाभ लिया गया। नाश्ते के लिए स्टेशन के बाहर के प्रोविजन स्टोर से 20 रुपए वाले ब्रेड पैक और अमुल के 100 ग्राम वाले मक्खन का उपयोग बेहतर रहा, मक्खन शायद 56 रुपए का होगा।

तो, 18 अगस्त को 2 बजे सूर्य प्रकाश मिश्र जी के साथ अर्दली बाज़ार के लिए निकले। वहां के शासकीय पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री कंचन सिंह परिहार हमारी ही प्रतीक्षा में थे। उनके साथ सर्व श्री प्रसन्नवदन चतुर्वेदी जो कि अधिवक्ता हैं, डॉक्टर शरद कुमार शरद जो स्थानीय कॉलेज में इंग्लिश के लेक्चरर हैं,

केशव शरण जो भारतीय डाक तार विभाग से सेवानिवृत्त हुए हैं और श्री संतोष कुमार दीप भी यहां मौजूद थे। बाद में अमर उजाला के वरिष्ठ पत्रकार श्री चेतन स्वरूप भी इस आयोजन में शामिल हो गए।

श्री कंचन सिंह परिहार जी बहुत उत्साही अधिकारी हैं जो बेहतरीन काम कर रहे हैं। जब से उन्हों ने इस पुस्तकालय की जिम्मेदारी उठाई है, उन्हों ने इसका काया कल्प कर दिया है। जर्जर पड़े पुस्तकालय में उन्हों ने प्राणघोष फूंक दिया है।

पुस्तकालय की हर पुस्तक का डाटा कंप्यूटर पर तैयार है।

पुस्तकालय को बहूप्योगी बनाने केलिए उनके पास कई योजनाएँ हैं और वे उन पर हर संभव अमल कर रहे हैं...

वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव को सिक्किम के राज्यपाल लक्ष्मण आचार्य ने 'साहित्य शिल्पी सम्मान' से किया सम्मानित

चर्चित ब्लॉगर और साहित्यकार एवं सम्प्रति वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव को विशिष्ट कृतित्व, रचनाधर्मिता और प्रशासन के साथ-साथ सतत् साहित्य सृजनशीलता हेतु सिक्किम के राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य ने 'साहित्य शिल्पी सम्मान' से सम्मानित किया। राष्ट्रीय मासिक पत्रिका 'सच की दस्तक' द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर में आयोजित सम्मान समारोह में 28 अगस्त को उक्त सम्मान प्रदान किया गया। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री कृष्ण कुमार यादव की विभिन्न विधाओं में सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। देश-विदेश की तमाम पत्र-पत्रिकाओं और इण्टरनेट पर निरंतर प्रकाशन के साथ आकाशवाणी व दूरदर्शन से भी विभिन्न विधाओं में आपकी सृजनात्मकता का प्रसारण होता रहता है। आपके कृतित्व पर एक पुस्तक 'बढ़ते चरण शिखर की ओर : कृष्ण कुमार यादव' भी प्रकाशित हो चुकी है। गौरतलब है कि श्री कृष्ण कुमार यादव लोकप्रिय प्रशासक के साथ ही सामाजिक, साहित्यिक और समसामयिक मुद्दों से सम्बंधित विषयों पर प्रमुखता से लेखन करने वाले साहित्यकार, विचारक और ब्लॉगर भी हैं। देश-विदेश में विभिन्न प्रतिष्ठित सामाजिक-साहित्यिक संस्थाओं द्वारा आपको शताधिक सम्मान और मानद उपाधियाँ प्राप्त हैं। उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव द्वारा ''अवध सम्मान'', पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी द्वारा ''साहित्य-सम्मान'', छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री शेखर दत्त द्वारा ''विज्ञान परिषद शताब्दी सम्मान'' से विभूषित आपको अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉगर्स सम्मेलन, नेपाल, भूटान और श्रीलंका में भी सम्मानित किया जा चुका है। विभागीय दायित्वों और हिन्दी के प्रचार-प्रसार के क्रम में अब तक श्री यादव लंदन, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड, दक्षिण कोरिया, भूटान, श्रीलंका, नेपाल जैसे देशों की यात्रा कर चुके हैं। आपके परिवार को यह गौरव प्राप्त है कि साहित्य में तीन पीढ़ियाँ सक्रिय हैं। आपके पिताजी श्री राम शिव मूर्ति यादव के साथ-साथ आपकी पत्नी श्रीमती आकांक्षा भी चर्चित ब्लॉगर और साहित्यकार हैं, वहीं बड़ी बेटी अक्षिता (पाखी) अपनी उपलब्धियों हेतु भारत सरकार द्वारा सबसे कम उम्र में राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित हैं।

इस अवसर पर प्रो. गोपबन्धु मिश्र, पूर्व कुलपति श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात, प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, अन्तर विश्वविद्यालय, अध्यापक शिक्षा केन्द्र (बी.एच.यू.), वाराणसी, डॉ. नागेन्द्र सिंह, महामना मदन मोहन मालवीय हिन्दी पत्रकारिता संस्थान, श्री रमेश जायसवाल, विधायक, पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर सहित तमाम गणमान्य जन उपस्थित रहे।

विश्व पटल पर हिन्दी के बढ़ते कदम

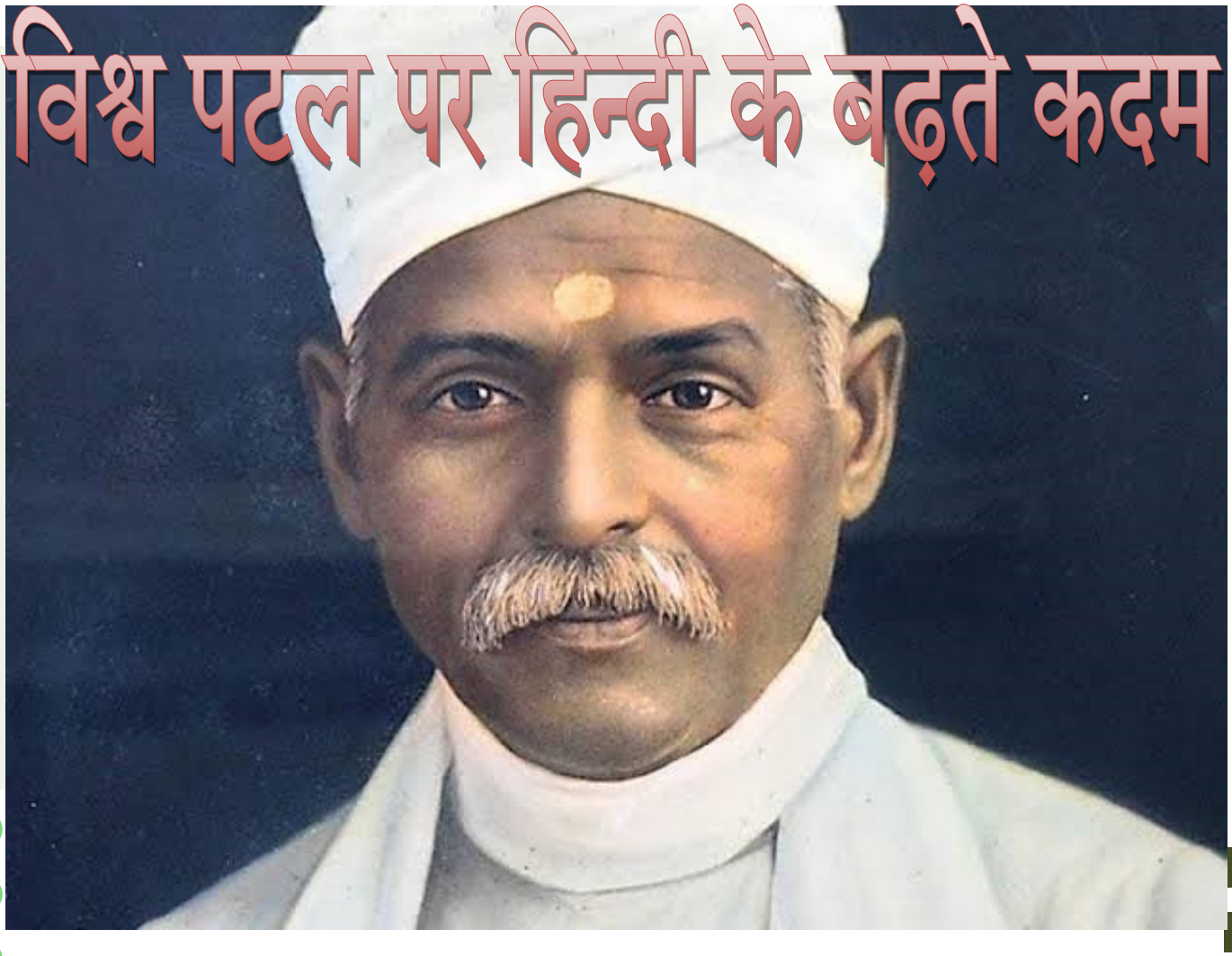

हिन्दी दिवस (14 सितंबर) पर विशेष

कृष्ण कुमार यादव

किसी भी राष्ट्र की उन्नति का सीधा सम्बन्ध उसकी भाषा से होता है। भाषा ही वह तत्व है जो एक राष्ट्र को अन्य से अलग करते हुए उसे एक विशिष्ट पहचान देती है। तभी तो कहा गया कि निज भाषा उन्नति अहै। सब भाषन को मूल। भारत प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक गतिविधियों और परम्पराओं में विश्व का अग्रणी राष्ट्र रहा है। प्राचीन भारतीय चिन्तकों। ऋषि-मुनियों। विचारकों व विद्वानों ने देश में सामाजिक-सांस्कृतिक-शैक्षणिक-धार्मिक- आध्यात्मिक इत्यादि क्षेत्रों में ऐसी गतिविधियों की नींव रखी। जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होकर अक्षुण्ण परम्पराओं के कालक्रम में सदैव जीवंत रहीं। यही कारण था कि समय-समय पर तमाम आक्रमणकारियां ने भारतीय संस्कृति पर हमला करना चाहा। पर अपनी निरंतरता और जीवंतता के चलते भारतीय संस्कृति ने उन सभी को आत्मसात् कर लिया। विश्वप्रसिद्ध तमाम विद्वानां और मनीषियों ने भारतीय संस्कृति की गहराई को परखने के लिए यहाँ आकर अध्ययन किया और इसकी महिमा अपने देशों तक फैलायी। इकबाल ने यूँ ही नहीं कहा कि- ‘‘सारे जहां से अच्छा। हिन्दोस्तां हमारा।‘‘

भूमण्डलीकरण। उदारीकरण। उन्नत प्रौद्योगिकी एवं सूचना-तकनीक के बढ़ते इस युग में सबसे बड़ा खतरा भाषा। साहित्य और संस्कृति के लिए पैदा हुआ है। इतिहास साक्षी है कि जब-जब समाज पथभ्रमित हुआ है या अपसंस्कृति हावी हुयी है तो साहित्य ने ही उसे संभाला है। कहा भी गया है कि-‘साहित्य समाज का दर्पण है।’ साहित्य का सम्बन्ध सदैव संस्कृति से रहा है और हिन्दी भारतीय संस्कृति की अस्मिता की पहचान है। संस्कृत वांग्डमय का पूरा सांस्कृतिक वैभव हिन्दी के माध्यम से ही आम जन तक पहुँचा है। हिन्दी का विस्तार क्षेत्र काफी व्यापक रहा है। यहाँ तक कि

उसमें संस्कृत साहित्य की परंपरा और लोक भाषाओं की वाचिक परम्परा की संस्कृति भी समाविष्ट रही है। स्वतंत्रता संग्राम में भी हिन्दी और उसकी लोकभाषाओं ने घर-घर स्वाधीनता की जो लौ जलायी वह मात्र राजनैतिक स्वतंत्रता के लिए ही नहीं थी। वरन सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए भी थी। भारत में साहित्य। संस्कृति और हिन्दी एक दूसरे के दर्पण रहे हैं ऐसा कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय हिन्दी भाषा हुई। कबीर की निर्गुण भक्ति एवम् भक्ति काल के सूफी-संतों ने हिन्दी को काफी समृद्ध किया। कालांतर में मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत और गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की अवधी में रचना कर हिन्दी को और भी जनप्रिय बनाया। अमीर ख़ुसरो ने इसे 'हिंदवी' गाया तो हैदराबाद के मुस्लिम शासक कुली कुतुबशाह ने इसे 'जबाने हिन्दी' बताया। स्वतंत्रता तक हिन्दी ने कई पड़ावों को पार किया व दिनों-ब-दिन और भी समृद्ध होती गई। आज संसार भर में लगभग 5000 भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। उनमें से लगभग 1652 भाषाएँ व बोलियाँ भारत में सूचीबद्ध की गई हैं जिनमें 63 भाषाएँ अभारतीय हैं। चूँकि इन 1652 भाषाओं को बोलने वाले समान अनुपात में नहीं हैं अतः संविधान की आठवीं अनुसूची में 18 भाषाओं को शामिल किया गया जिन्हें देश की कुल जनसंख्या के 91 प्रतिशत लोग प्रयोग करते हैं। इनमें भी सर्वाधिक 46 प्रतिशत लोग हिन्दी का प्रयोग करते हैं अतः हिन्दी को राजभाषा को रूप में वरीयता दी गयी।

भारत में हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेजी को वरीयता देने का एक फैशन सा चल पड़ा है। पर तमाम शोधों ने सिद्ध कर दिया है कि स्वंय ब्रिटेन तक में हिन्दी की शुरूआत प्रिंटिंग प्रेस क्रान्ति के साथ ही सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में ही हो गयी जबकि उस समय भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव पड़नी अभी आरम्भ ही हुई थी। सन् 1560 में ब्रिटेन में देवनागरी में छपाई का कार्य आरम्भ हो चुका था जबकि तब तक वह भारत में हाथ से ही लिखी जा रही थी। कालान्तर में जे। विल्किंसन व जार्ज फॉस्टर ने क्रमशः श्रीमद्भागवत गीता व अभिज्ञान शाकुन्तलम से प्रभावित होकर हिन्दी सीखी और उनका अंग्रेजी में अनुवाद किया। सन् 1800 के दौरान स्कॉटलैण्ड के जॉन बोथनिक गिलक्राइस्ट ने देवनागरी और उसके व्याकरण पर तमाम पुस्तकें लिखीं तो डॉ. एल. एफ. रूनाल्ड ने 1873 से 1877 तक भारत प्रवास के दौरान हिन्दी व्याकरण पर काफी कार्य किया और लंदन से इस विषय पर एक पुस्तक भी प्रकाशित करायी। सन् 1865 में एक राजाज्ञा के तहत लंदन की रॉयल एशियाटिक सोसायटी में हिन्दी सहित भारत में मुद्रित सभी भाषाओं के अखबार। पत्रिकायें व पुस्तकें आने लगीं। 1935 में बेल्जियम के नागरिक डॉ। कामिल बुल्के इसाई धर्म प्रचार के लिए भारत आए पर फ्रेंच। अंग्रेजी। फ्लेमिश। आर्यरिश भाषाओं पर अधिकार होने के बाद भी हिन्दी को ही अभिव्यक्ति का माध्यम चुना। अपने हिन्दी ज्ञान में वृद्धि हेतु उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम। ए। किया और तुलसी दास को अपने प्रिय कवि के रूप में चुनकर 'रामकथा उद्भव और विकास' पर डी। फिल की उपाधि भी प्राप्त की। स्पष्ट है कि हिन्दी एक लम्बे समय से विदेशियों को भी आकर्षित करती रही है।

देश में नई पीढ़ी पर भले ही अंग्रेजी का भूत चढ रहा हो विदेशों में हिंदी की महत्ता पिछले सालों में काफी बढ़ी हैं। आज हिन्दी भारत ही नहीं बल्कि पाकिस्तान, नेपाल बांग्लादेश, इराक, इंडोनेशिया, इजरायल ओमान, फिजी, इक्वाडोर, जर्मनी, अमेरिका, फ्रांस, ग्रीस, ग्वाटेमाला, सउदी अरब, पेरू, रूस, कतर, म्यंमार, त्रिनिदाद-टोबैगो, यमन इत्यादि देशों में जहाँ लाखों अनिवासी भारतीय व हिन्दी-भाषी हैं। में भी बोली जाती है। मॉरीशस, त्रिनिदाद-टोबैगो। सूरीनाम, गुयाना।, फीजी। द. अफ्रीका जैसे देशों में 'गिरमिटिया' के रूप में गए भारतीय अपनी संस्कृति व हिन्दी को सहेजना चाह रहे

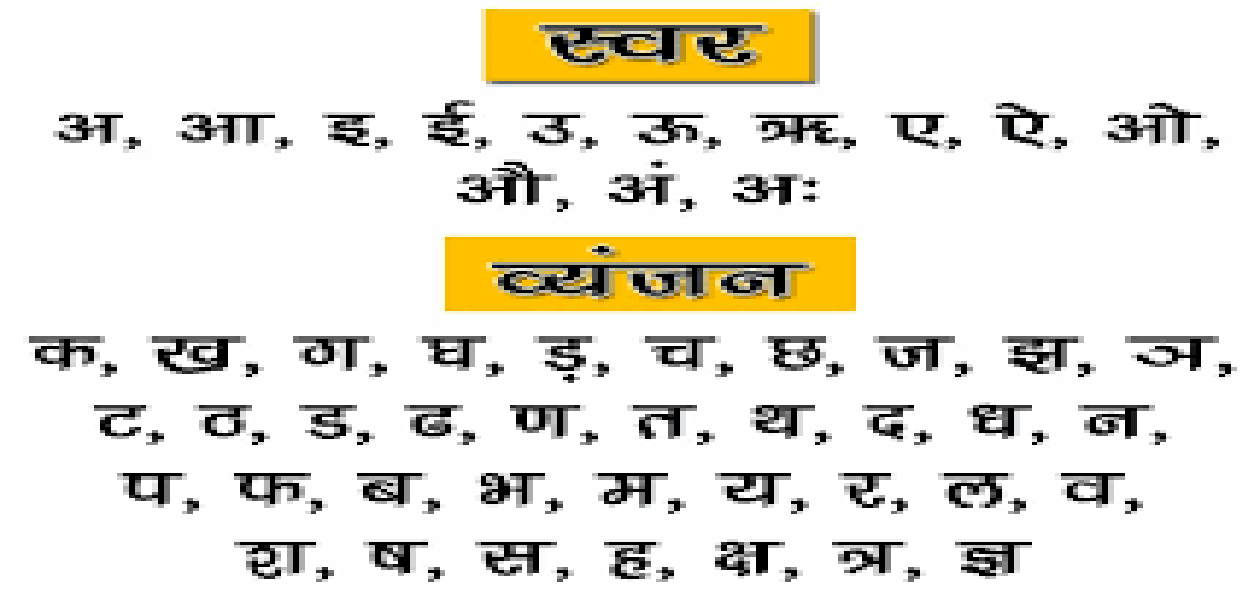

हैं। विदेशों विश्वविद्यालयों ने इसे एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में अपनाया है। आज 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है।

अमेरिका में भाषा आधारित गणना की एक रिपोर्ट के अनुसार वहाँ 65 लाख लोग हिन्दी बोलते हैं। जबकि 8 लाख से ज्यादा लोग भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ बोलते है। गौरतलब है कि अमेरिका में 32 विश्वविद्यालयों ओर शिक्षण संस्थानों में हिंदी की पढ़ाई होती है। अमेरिका में टेक्सास के स्कूलों में पहली बार 'नमस्ते जी' नामक हिन्दी की पाठ्यपुस्तक को हाईस्कूल के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। 480 पेज की इस पुस्तक को भारतवंशी शिक्षक अरूण प्रकाश ने आठ सालों की मेहनत से तैयार की है। अरूण प्रकाश 80 के दशक में पढ़ाई और व्यापार के लिए अमेरिका गए थे। 1989 में जब पहली बार उन्होंने टेक्सास के एक स्कूल में हिंदी पढ़ाना शुरू किया तो उनकी कक्षा में केवल आठ छात्र पहुँचे। इनमें से सात भारतीय मूल के थे। तभी से उन्होंने इस संबंध में प्रयास शुरू कर दिये।

ब्रिटेन के लंदन विश्वविद्यालय। कैंब्रिज और यॉर्क विश्वविद्यालय में भी हिंदी का अध्ययन होता है। जर्मनी के 15 शिक्षण संस्थानों ने हिन्दी भाषा तथा साहित्य के अध्ययन को अपनाया है। यहां कई संगठन हिंदी के प्रचार का काम करते हैं। हॉलैण्ड में 1930 से हिंदी का अध्ययन हो रहा है। आज यहाँ के चार विश्वविद्यालयों ने इसे प्रमुख विषय के रूप में अपना रखा है। चीन की बात करें तो यहां 1942 में हिंदी को अध्ययन का एक प्रमुख विषय मानने की शुरूआत हुई। चीन में पहली बार हिंदी रचनाओं का अनुवाद कार्य 1957 में शुरू हुआ और इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए बीजिंग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर विड हान ने तुलसीदास कृत रामचरित मानस का चीनी भाषा में अनुवाद किया। इटली के लोग भी भारत की संस्कृति से रूबरू होने के लिए हिंदी सीखने की इच्छा रखते हैं। रूस में बड़े स्तर पर हिंदी रचनाओं और ग्रंथों का रूसी भाषा में अनुवाद कार्य होता है। यहां के लोगों में हिन्दी सीखने की अत्यधिक ललक है। रूसी लोग हिंदी फिल्मों और हिंदी गीतों के दीवाने हैं। फ्रांस के पेरिस विश्वविद्यालय की बात करें तो वहाँ हर साल 60-70 विद्यार्थी हिंदी अध्ययन के लिए प्रवेश लेते हैं। ऑस्ट्रेलिया के कैनबरा और मेलबर्न विश्वविद्यालय में भी हिंदी पढ़ाई जाती है। विएना विश्वविद्यालय और बेल्जियम के तीन विश्वविद्यालयों में भी हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। जापान में भी हिंदी का अहम स्थान है। जापान रेडियो से पहला हिंदी कार्यक्रम 1950 में प्रसारित हुआ था। फिजी में व्यापार। बाजार। कारखानों जैसे सभी क्षेत्रों में हिन्दी का दबदबा है। मारीशस में भी हिंदी काफी लोकप्रिय है। यहां के 260 प्राथमिक स्कूलों में नियमित तौर पर हिंदी की पढ़ाई होती है।

ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों-कॉलेजों में भी हिंदी की पढ़ाई शामिल की जा रही है और दक्ष प्रवासी भारतीयों की इसमें मदद ली जा रही है। मेलबर्न के 'ऑस्ट्रेलिया इंडिया इंस्टीट्यूट' (एआइआइ) ने सरकार को सौंपी अपनी रिपोर्ट में तर्क दिया है कि स्कूलों के पाठ्यक्रम में हिंदी को शमिल किया जाए और ऑस्ट्रेलिया की एशिया नीति का यह अनिवार्य हिस्सा होना चाहिए। ऑस्ट्रेलिया के जाने-माने पत्रकार हमिश मैकडोनल्ड की रिपोर्ट में सरकार द्वारा वर्ष 2012 में पेश किये गए एशिया श्वेतपत्र में हिंदी को चार प्राथमिक भाषाओं (चाइनीज। जापानी। इंडोनेशियाई) के रूप में माना गया था।

भूमण्डलीकरण एवं सूचना क्रांति के इस दौर में जहाँ एक ओर 'सभ्यताओं का संघर्ष' बढ़ा है। वहीं बहुराष्ट्रीय कम्पनियां

की नीतियों ने भी विकासशील व अविकसित राष्ट्रों की संस्कृतियों पर प्रहार करने की कोशिश की है। सूचना क्रांति व उदारीकरण द्वारा सारे विश्व के सिमट कर एक वैश्विक गाँव में तब्दील होने की अवधारणा में अपनी संस्कृति। भाषा। मान्यताओं। विविधताओं व संस्कारों को बचाकर रखना सबसे बड़ी जरूरत है। एक तरफ बहुराष्ट्रीय कम्पनियां जहाँ हमारी प्राचीन सम्पदाओं का पेटेंट कराने में जुटी हैं वहीं इनके ब्राण्ड-विज्ञापनों ने बच्चों व युवाओं की मनोस्थिति पर भी काफी प्रभाव डाला है। निश्चिततः इन सबसे बचने हेतु हमें अपनी भाषा की तरफ उन्मुख होना होगा। यदि भारतीय फिल्में विदेशों में अच्छा व्यवसाय कर रही हैं तो विदेशों में बसे भारतीयों का प्रमुख योगदान है। यह वर्ग ऐसा है जो रोजगार की खोज में विदेशों में भले ही जा बसा। पर मातृभूमि से लगाव जस का तस है। उनकी रोजी-रोटी की भाषा भले ही दूसरी हो। पर उनका मन हिन्दी में ही रमता है। हम इस तथ्य को नक्कार नहीं सकते कि हाल ही में प्रकाशित ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोष में हिन्दी के तमाम प्रचलित शब्दों। मसलन-आलू। अच्छा। अरे। देसी। फिल्मी। गोरा। चड्डी। यार। जंगली। धरना। गुण्डा। बदमाश। बिंदास। लहंगा। मसाला इत्यादि को स्थान दिया गया है।

अमेरिका जैसा देश भी हिंदी के प्रभाव से अछूता नहीं है। तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा कार्यक्रम के तहत अपने देशवासियों से हिन्दी। फारसी। अरबी। चीनी व रूसी भाषायें सीखने को कहा। अमेरिका जो कि अपनी भाषा और अपनी पहचान के अलावा किसी को श्रेष्ठ नहीं मानता। हिन्दी सीखने में उसकी रूचि का प्रदर्शन निश्चिततः भारत के लिए गौरव की बात है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने स्पष्टतया घोषणा की कि-"हिन्दी ऐसी विदेशी भाषा है। जिसे 21वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका के नागरिकों को सीखनी चाहिए।" इसी क्रम में अगले अमरीकी राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा ने भी अपने चुनावी घोषणा पत्र की प्रतियां अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी और मलयालम में भी छपवाकर वितरित कीं। बराक ओबामा के राष्ट्रपति चुनने के बाद सरकार की कार्यकारी शाखा में राजनैतिक पदों को भरने के लिए जो आवेदन पत्र तैयार किया गया उसमें 101 भाषाओं में भारत की 20 क्षेत्रीय भाषाओं को भी जगह दी गई। इनमें अवधी। भोजपुरी। छत्तीसगढ़ी। हरियाणवी। माघी व मराठी जैसी भाषायें भी शामिल हैं। जिन्हें अभी तक भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान तक नहीं मिल पाया है।

इसी प्रकार जब दुनिया भर में अंग्रेजी का डंका बज रहा हो। तब अंग्रेजी के गढ़ लंदन में बर्मिंघम स्थित मिडलैंड्स वर्ल्ड ट्रेड फोरम के अध्यक्ष पीटर मैथ्यूज ने ब्रिटिश उद्यमियों। कर्मचारियों और छात्रों को हिंदी समेत कई अन्य भाषाएं सीखने की नसीहत दी है। यही नहीं। अन्तर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान हिन्दी का अकेला ऐसा सम्मान है जो किसी दूसरे देश की संसद। ब्रिटेन के हाउस ऑफ लॉर्ड्स में प्रदान किया जाता है। आज अंग्रेजी के दबदबे वाले ब्रिटेन से हिन्दी लेखकों का सबसे बड़ा दल विश्व हिन्दी सम्मेलन में अपने खर्च पर पहुँचता है। स्पष्ट है कि हिन्दी आज

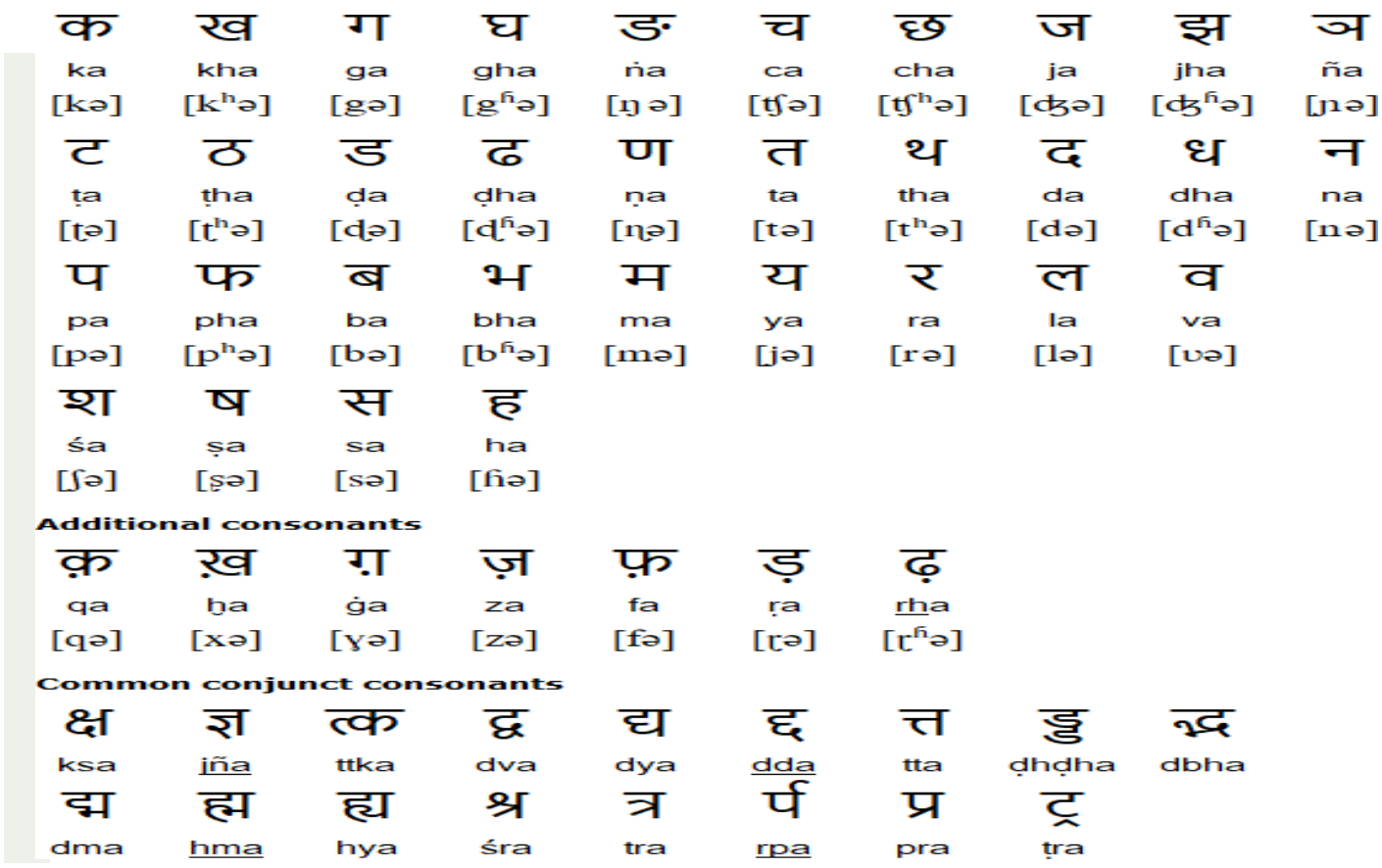

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
ka	kha	ga	gha	ṅa	ca	cha	ja	jha	ña
[kə]	[kʰə]	[gə]	[gʱə]	[ŋ ə]	[ʧə]	[ʧʰə]	[ʤə]	[ʤʱə]	[ɲə]
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
ṭa	ṭha	ḍa	ḍha	ṇa	ta	tha	da	dha	na
[ʈə]	[ʈʰə]	[ɖə]	[ɖʱə]	[ɳə]	[t̪ə]	[t̪ʰə]	[d̪ə]	[d̪ʱə]	[n̪ə]
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	
pa	pha	ba	bha	ma	ya	ra	la	va	
[pə]	[pʰə]	[bə]	[bʱə]	[mə]	[jə]	[rə]	[lə]	[ʋə]	
श	ष	स	ह						
śa	ṣa	sa	ha						
[ʃə]	[ʂə]	[sə]	[ɦə]						

Additional consonants

क़	ख़	ग़	ज़	फ़	ड़	ढ़
qa	ḫa	ġa	za	fa	ṛa	ṛha
[qə]	[xə]	[ɣə]	[zə]	[fə]	[ɽə]	[ɽʱə]

Common conjunct consonants

क्ष	ज्ञ	त्क	द्व	द्य	द्द	त्त	ड्ढ	द्भ
ksa	jña	ttka	dva	dya	dda	tta	ḍhḍha	dbha
द्म	ह्म	ह्य	श्र	त्र	र्प	प्र	ट्र	
dma	hma	hya	śra	tra	rpa	pra	ṭra	

दूसरे देशों में भी अपनी कीर्ति-पताका फहरा रही है। विदेश मंत्रालय ने इसी रणनीति के तहत प्रति वर्ष दस जनवरी को 'विश्व हिन्दी दिवस' मनाने का निर्णय लिया है। जिसमें विदेशों मे स्थित भारतीय दूतावासों में इस दिन हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है।

हाल ही में विश्व बैंक ने अपनी छवि को अधिक लोकतांत्रिक बनाने की नीति के तहत 'ओपन डाटा' नामक एक कार्यक्रम की शुरूआत की है। इसके जरिए विश्व बैंक दुनिया भर में अपनी वित्तीय पोषित परियोजनाओं की नवीनतम जानकारी एन्ड्रॉयड फोन। आईफोन और आईपैड पर मुफ्त में मुहैया कराएगा। खास बात यह है कि विश्व बैंक से जुड़ी वित्तीय जानकारियाँ अब हिंदी में भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। अभी तक यह होता रहा है कि विश्व बैंक से जुड़े आंकड़े अंग्रेजी भाषा की समाचार एजेंसियों में आने या उनके अनुवाद के बाद ही हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो पाते थे। निश्चिततः इससे हिंदी पत्रकारिता की दुनिया में एक बड़ा परिवर्तन आयेगा और हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराए जाने से अंग्रेजी पर निर्भरता भी कम होगी।

निश्चिततः भूमण्डलीकरण के दौर में दुनिया के सबसे बडे लोकतंत्र। सर्वाधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र और सबसे बड़े उपभोक्ता बाजार की भाषा हिन्दी को नजर अंदाज करना अब सम्भव नहीं रहा। प्रतिष्ठित अंग्रेजी प्रकाशन समूहों ने हिन्दी में अपने प्रकाशन आरम्भ किए हैं तो बीबीसी। स्टार प्लस। सोनी। जीटीवी। डिस्कवरी आदि अनेक चैनलों ने हिन्दी में अपने प्रसारण आरम्भ कर दिए हैं। हिन्दी फिल्म संगीत तथा विज्ञापनों की ओर नजर डालने पर हमें एक नई प्रकार की हिन्दी के दर्शन होते हैं। यहाँ तक कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियां के विज्ञापनों में अब क्षेत्रीय बोलियों भोजपुरी इत्यादि का भी प्रयोग होने लगा है और विज्ञापनों के किरदार भी क्षेत्रीय वेश-भूषा व रंग-ढंग में नजर आते हैं। निश्चिततः मनोरंजन और समाचार उद्योग पर हिन्दी की मजबूत पकड़ ने इस भाषा में सम्प्रेषणीयता की नई शक्ति पैदा की है।

आज की हिन्दी वो नहीं रही। । । । ।

बदलती परिस्थितियों में उसने अपने को परिवर्तित किया है। विज्ञान-प्रौद्योगिकी से लेकर तमाम विषयों पर हिन्दी की किताबें अब उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय अखबारों का प्रचलन बढ़ा है। इण्टरनेट पर हिन्दी की बेबसाइटों में बढ़ोत्तरी हो रही है। सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कई कम्पनियों ने हिन्दी भाषा में परियोजनाएं आरम्भ की हैं। सूचना क्रांति के दौर में कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रतिष्ठान सी-डैक ने निःशुल्क हिन्दी साफ्टवेयर जारी किया है। जिसमें अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं। माइक्रोसाफ्ट ने ऑफिस हिन्दी के द्वारा भारतीयों के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग आसान कर दिया है। आईबीएम द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर में हिन्दी भाषा के 65। 000 शब्दों को पहचानने की क्षमता है एवं हिन्दी और हिन्दुस्तानी अंग्रेजी के लिए आवाज पहचानने की प्रणाली का भी विकास किया गया है जो कि शब्दों को पहचान कर कम्प्यूटर लिपिबद्ध कर देती है। एचपी कम्प्यूटर्स एक ऐसी तकनीक का विकास करने में जुटी हुई है जो हाथ से लिखी हिन्दी लिखावट को पहचान

कर कम्प्यूटर में आगे की कार्यवाही कर सके। चूँकि इण्टरनेट पर ज्यादातर सामग्री अंग्रेजी में है और अपने देश में मात्र 13 फीसदी लोगों की ही अंग्रेजी पर ठीक-ठाक पकड़ है। ऐसे में गूगल द्वारा कई भाषाओं में अनुवाद की सुविधा प्रदान करने से अंग्रेजी न जानने वाले भी इण्टरनेट के माध्यम से अपना काम आसानी से कर सकते हैं। आज पूरी दुनिया में ब्लॉगिंग और सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स का क्रेज छाया हुआ है। ब्लॉगिंग में भाषा की वर्जनाएं टूट रही हैं। तभी तो हिन्दी देश-विदेश व उत्तर-दक्षिण की सीमाओं से परे सरपट दौड़ रही है। आज एक लाख से भी ज्यादा हिंदी ब्लॉग हैं। इंटरनेट पर हिन्दी का विकास तेजी से हो रहा है। गूगल से हिन्दी में जानकारियाँ धड़ल्ले से खोजी जा रही हैं। पहले जहाँ तमाम फॉण्ट के चलते हिन्दी का स्वरूप एक जैसा नहीं दिखता था। वहीं वर्ष 2003 में यूनीकोड हिंदी में आया और इसके माध्यम से हिन्दी को अपने विस्तार में काफी सुलभता हासिल हुई। इसने जहाँ वर्णमाला के जटिल शब्दों को अपने में समेट लिया है। वहीं भारत सरकार भी वेदों। उपनिषदों। पुराणों इत्यादि में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को इसमें जोड़ने की कोशिश कर रही है। 14 सितम्बर। 2011 को सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट ट्विटर ने हिंदी में भी सीधे लिखने की सुविधा प्रदान कर दी है।

इंटरनेट के इस दौर में महत्वपूर्ण हिन्दी किताबों के ई प्रकाशन के साथ-साथ तमाम हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं भी अपना ई-संस्करण जारी कर रही हैं। जिससे वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा व साहित्य को नए आयाम मिले हैं। आज हिन्दी के वेब पोर्टल समाचार। व्यापार। साहित्य। ज्योतिषी। सूचना प्रौद्योगिकी एवं तमाम जानकारियां सुलभ करा रहे हैं। इंटरनेट पर उपलब्ध प्रमुख हिन्दी पत्रिकाएं हैं- हिंदी का पहला पोर्टल वेब दुनिया। अनुभूति। अभिव्यक्ति। सृजनगाथा। हिन्दयुग्म। रचनाकार। साहित्य कुंज। साहित्य शिल्पी। लघुकथा डॉट काम। स्वर्गविभा। हिंदी नेस्ट। हिंदी चेतना। हिंदीलोक। कथाचक्र। काव्यालय। काव्यांजलि। कवि मंच। कृत्या। कलायन। आर्यावर्त। नारायण कुञ्ज। हंस। अक्षरपर्व। अन्यथा। आखर (अमर उजाला)। उदन्ती। उद्गम। कथाक्रम। कथादेश। गर्भनाल। जागरण। तथा। तद्भव। तहलका। ताप्तिलोक। दोआबा। नया ज्ञानोदय। नया पथ। परिकथा। पाखी। दि संडे पोस्ट। प्रतिलिपि। प्रेरणा। बहुवचन। भारत दर्शन। भारतीय पक्ष। मधुमती। रचना समय। लमही। लेखनी। लोकरंग। वागर्थ। शोध दिशा। संवेद। संस्कृति। समकालीन जनमत। समकालीन साहित्य। समयांतर। प्रवक्ता। अरगला। तरकश। अनुरोध। एक कदम आगे। पुरवाई। प्रवासी टुडे। अन्यथा। भारत दर्शन। सरस्वती पत्र। पांडुलिपि। हिंदी भाषी। हिंदी संसार। हिंदी समय। हिमाचल मित्र इत्यादि। इसी कड़ी में 'कविता कोश' और 'गद्य कोश' ने भी हिन्दी साहित्य के लिए मुक्ताकाश दिया है। यहाँ तमाम पुराने और प्रतिष्ठित साहित्यकारों की विभिन्न विधाओं में रचनाओं के संचयन के साथ-साथ नवोदित रचनाकारों की रचनाएँ भी पढ़ी जा सकती हैं। निश्चिततः इससे हिन्दी भाषा को वैश्विक स्तर पर एक नवीन प्रतिष्ठा मिली है। यह अनायास ही नहीं है कि 51 करोड़ लोगों तक पहुँच के साथ अंग्रेजी यदि दुनिया की सबसे बड़ी संपर्क-भाषा है तो 49 करोड़ के साथ हिन्दी दूसरी संपर्क-भाषा है। कभी ब्रिटेन ने हम पर राज किया था पर जब वहीं के एक प्रोफेसर रूपर्ट स्नेल हिन्दी के पक्ष में बोलते हैं। तो गर्व होना लाजिमी भी है- "हिन्दी जिंदगी का हिस्सा है। हिन्दी जिंदा है। हिन्दी किसी एक वर्ग या वर्ण या जाति या धर्म या मजहब या मार्ग या देश या संस्कृति की नहीं है। हिन्दी भारत की है। मारीशस की है। इंग्लैंड की है। सारी दुनिया की है। हिन्दी आपकी है। हिन्दी मेरी है।"

वो कौन था जो उस कमरे में गया था

आशा शैली

कभी-कभी जीवन में ऐसी घटनाएँ होती हैं जिन्हें हम चाहकर भी झुठला नहीं सकते। ऐसे समय हमारा सारा का सारा ज्ञान-विवेक, सारी विद्या और अनुभव धरा का धरा रह जाता है। यह सृष्टि विचित्र सहस्यों से भरी पड़ी है। मेरे आदरणीय गुरु जी, डॉ. महाराज कृष्ण जैन हमेशा ऐसी कोई बात उठने पर झट से कह देते, 'अरे! बहन जी, मत पड़िए इन बातों में।' पर उन्हें मैं कभी यह बता नहीं पाई कि ऐसा होता है और न ही मैं अपने साथ हुई घटनाओं को झुठला पाई। आज मैं अपने जीवन की एक सत्य घटना पर बात करने जा रही हूँ। वैसे संस्मरण में सत्य ही तो होता है , ऐसा सत्य जो हमारे अनुभव से गुज़रा हो।

वैसे तो माता-पिता को अपनी प्रत्येक संतान प्रिय होती है, फिर भी कोई बच्चा थोड़ा अधिक ध्यान खींचता है या माता-पिता के अधिक निकट होता है या यह भी कह सकते हैं कि समय की मांग होती है। या यह भी हो सकता है कि जो हो रहा है, वह सहज स्वाभाविक रूप से हो रहा हो। जो भी हो, मेरा छोटा पुत्र महेंद्र विलक्षण बुद्धि का स्वामी था। कभी दूसरी श्रेणी में पास नहीं हुआ, फेल होना तो दूर की बात थी उसके लिए। उस समय ट्यूशन का तो प्रश्न ही नहीं था और हम खेती-किसानी वाले लोग मच्चों पर अधिक ध्यान भी नहीं दे पाते थे। छोटी कक्षाओं से ही अध्यापकों से उलझना कोई बड़ी बात नहीं थी उसके लिए और कक्षा में नेतागीरी तो उसका शग़ल था। तर्क-कुतर्क हर बात में आगे ही आगे। शैतान भी था ही। ख़ैर! हमारे गाँव गौरा में तब आठवीं तक स्कूल था। इसके बाद अब शहर तो जाना ही था।

जब तक वह गाँव में पढ़ रहा था, तब तक तो उसे हमारा थोड़ा-घना भय रहता पर शहर जाकर वह और खुल गया। वैसे ही उसे साथी भी मिल गए। तब तक बड़े बेटे हेमन्त का विवाह हो गया था। वह महेंद्र की तरह खिलंदड़ा नहीं था, फिर विवाह के बाद उसका स्वभाव भी काफी बदल गया था, वह छोटे भाई के खर्चे आदि पर कुढ़ने भी लगा था।

हेमन्त, जहाँ पिता के साथ सेब के बाग़ और अन्य कारोबार देखता था वहीं महेंद्र जो मात्र अट्ठारह वर्ष का था, बिल्कुल भी गम्भीर नहीं था। आप सोच रहे होंगे यह तो हर घर में होता है। बेकार का रोना है यह। परन्तु यह बताना इस कहानी के लिए अति आवश्यक है क्योंकि मेरे पति दोनों भाइयों के बीच बढ़ती खाई के कारण अत्याधिक चिन्तित थे और यह घटना भी इसी चिन्ता से जुड़ी हुई है। बेटी तो मात्र दस वर्ष की थी और शिमला हॉस्टल में रहकर पढ़ रही थी। ऐसे ही समय में वह मनहूस दिन हमारी ज़िंदगी में आया और सब कुछ बिखर गया।

वह सन् 1982 के सितम्बर महीने की सोलह तारीख थी। भला वह तिथि भी कभी भुलाई जा सकती है? उसके अगले दिन वर्ष का अन्तिम श्राद्ध था। मेरे पति सेब बेचने के लिए ट्रक लेकर चण्डीगढ़ की मंडी गए हुए थे। वे उस दिन वापस आने वाले थे। कह कर गए थे कि ब्राह्मणों को श्राद्ध का न्योता दे देना और

सारी तैयारी करके रखना हम समय पर लौट आएँगे। महेंद्र हॉस्टल से घर आया हुआ था। हर बच्चे की तरह ही उसे देर तक सोना अच्छा लगता था। घर में मैं थी, छोटे बेटे महेंद्र, बेटे-बहू के अतिरिक्त माघी और भास्कर नाम के दो गोरखा नौकर भी थे जिनमें से माघी काफी छोटे-से कद का था। सुबह सबसे पहले मैं उठी और नहाकर पूजा के लिए फूल तोड़ रही थी उस समय माघी उठकर अपने कमरे से बाहर आया। अभी मुश्किल से छः बजे होंगे। इतनी जल्दी उठना हमारा रोज़ का काम ही था। सेब तोड़ने वालों के लिए भी खाना बनाना होता। खाना अभी लकड़ी पर ही बनता था, गाँव में गैस नहीं आई थी।

अभी मैं माघी से रसोईघर के लिए लकड़ियाँ लाने को कह ही रही थी कि महेंद्र कुमार जी, गुस्से में उफनते हुए अपने कमरे से बाहर निकले और बाहर आते ही उबलना शुरू कर दिया, ''कितनी बार कहा है कि मुझे आठ बजे से पहले मत उठाया करो, पर नहीं। कोई नहीं सोचता कि मुझे रात को पढ़ना होता है। कौन आया था मेरे कमरे में?''

मैं और माघी दोनों एक-दूसरे का मुँह देखने लगे, क्योंकि अभी तक तो घर में हम दो ही जगे थे। मैंने माघी से पूछा, ''क्यों रे! तू गया था क्या छोटे बाबू के कमरे में? क्यों गया था, तुझे पता था न वो गुस्सा करेगा??'' माघी कुछ बोलता उससे पहले ही मेरा बेटा भिन्नाने लग गया, ''मूर्ख समझा है क्या मुझे? अरे ये जरा-सा लड़का नहीं गया था, कोई बड़ा था। आप लोग मुझे चैन से पढ़ने भी नहीं देते। मेरी नींद पूरी नहीं होगी तो मैं कैसे पढ़ूँगा?''

''पर कौन जाता तेरे कमरे में? अभी तो हम दोनों ही जगे हैं। मैं गई नहीं, माघी गया नहीं तो कौन गया होगा। सपना देखा है तुमने और सुबह सवेरे सबका मूड खराब करने आ गए हो। जाओ, जाकर सो जाओ।'' मैंने कहा तो माघी भी बोल पड़ा, ''नहीं बीबी जी! मैं भाई जी के कमरे में नहीं गया। सच कह रहा हूँ।''

महेंद्र फिर बिफर गया, ''तो क्या मैं झूठ कह रहा हूँ? बड़े आदमी और छोटे कद का पता नहीं चलता क्या? मैं सो थोड़ी न रहा था। अच्छे से जाग रहा था, जब मैंने अन्दर आने वाले के पैरों की आवाज़ सुनी तो मुँह पर रज़ाई डालकर, जान-बूझकर आँखें बंद कर लीं। आने वाले ने मेरे मुँह पर से रज़ाई उठाई और आँखें बंद देखकर फिर वापस डाल दी और बाहर निकल गया। मुझे पता होता कि आप झूठ बोलेंगे तो मैं उसी वक्त न उठ जाता और आप को झूठ नहीं बोलना पड़ता।''

''पर बेटा, मैं सचमुच ही तुम्हारे कमरे में नहीं गई। तुम्हें पता नहीं क्यों वहम हो रहा है?'' मैं भी हैरान थी कि वह इतनी दृढ़ता से लड़ने की हद तक अपनी बात पर कायम था, जबकि इतनी बहस के बाद भी न तो भास्कर जागा था और न ही हेमन्त और उसकी पत्नी। आखिरकार विश्वास और अविश्वास के बीच गोते खाते हम तीनों अपने काम में उलझ गए।

हेमन्त वगैरह के जागने पर हमने उनसे भी यह बात पूछी तो वे हँसने लगे। हेमन्त ने तो झट कह दिया, ''कोई फिल्म-विलम देखी होगी जिसका असर है इस पर।'' बात आई-गई हो गई। थोड़ी ही देर बाद, लगभग आठ बजे बाज़ार से हमारा पुराना ड्राइवर, बहुत निकट सम्पर्क के एक पिता-पुत्री और कुछ बाजार के और लोग घर पर आ गए तो हमें आश्चर्य हुआ कि आज सुबह-सवेरे ये सब लोग क्यों? तभी कुछ गाँव के लोग आने लग गए। काफी अजीब लग रहा था, तभी बाजार से आई एक लड़की ने जिसका नाम राजेश था, धीरे से कहा, ''चाची जी! चाचा जी की गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया है। मैं बैंक से छुट्टी लेकर आई हूँ। शायद आपको मेरी जरूरत हो।''

''अरे नहीं! कुछ खास नहीं। बस ज़रा सी टक्कर लगी है।'' लड़की के पिता ने बात सम्भालने की कोशिश की। मैं बात को समझने की कोशिश कर रही थी। तभी हमारा पुराना ड्राइवर मेरे सामने सिर झुकाकर चुपचाप खड़ा हो गया।

''हाँ जी! पंडित जी, आप कुछ बोल नहीं रहे।'' गाँव के हमारे घनिष्ट सम्पर्क के व्यक्ति साधुराम बोले।

''क्या बोलूँ बजिया जी! गाड़ी पलट गई है, मैं बड़े बाबू को लेने आया हूँ।'' पंडित बहुत धीरे

से बोला। अब मेरा चौंकना स्वाभाविक था, ''और वे खुद? गाड़ी पलटने का मतलब.....?''

''नहीं....नहीं बीबी जी! बाऊजी तो दिल्ली गए हैं, वे गाड़ी में थे ही नहीं। आप परेशान न हों।'' बहुत पुराना ड्राइवर एकदम बेचैन-सा दिखाई दिया। मैं बहुत गौर से उसे देख रही थी। ''बस गाड़ी सीधी करने के लिए मालिक का होना जरूरी है, इसलिए बड़े बाबू को मेरे साथ भेज दो।'' उसने मुँह दूसरी तरफ कर लिया। मेरे पति और पंडित ड्राइवर में नौकर-मालिक का कम और दोस्ती का अधिक रिश्ता था। फिर थोड़ी ही देर बाद वे सब लोग घटना स्थल की ओर चले गए। न तो किसी ने चाय पी और न कुछ खाया। घर में मेरे साथ रह गई मेरी बहू और राजेश या गाँव के लोग। शायद गाँव में सब को पता चल चुका था कि क्या हुआ है। साधुराम धीरे से मेरे पास आ बैठे तो राजेश वहाँ से उठ गई। वे धीरे से बोले, ''बहन! जो होना था, हो गया। क्या कर सकते हैं।''

मुझे कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था, कि ये लोग क्या कह रहे हैं और क्या कर रहे हैं। मुझे याद है, मैंने पीले गहरे संतरी रंग की चौड़े लाल बॉर्डर की साड़ी पहन रखी थी। न जाने क्यों मुझे आभास हुआ कि अब मुझे ये साड़ी नहीं पहननी चाहिए। तभी मेरे माथे पर लगी बिंदिया गिर गई। मैं उठने लगी तो सब मेरे गिर्द इकट्ठे हो गए। मैंने कहा, ''मेरी बिंदिया गिर गई है। दूसरी लगाकर आती हूँ।'' कोई कुछ नहीं बोला। बस राजेश की माँ ने पकड़कर वहीं बैठा लिया। अजीब-सा सन्नाटा घर में पसरा हुआ था। न कोई चाय की मांग कर रहा था न खाने की। इसी तरह दो दिन गुजर गए। दूसरे दिन बाज़ार से कुछ लोग और आ गए थे। घर में फोन मेरे कमरे में था जो वहाँ से हटा दिया गया था।

मुझे लग रहा था मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा, बड़ी अजीब सी बात है ऐसी किसी भी घटना के समय मुझे रोना नहीं आता। जब आरती गई तब भी ऐसा ही हुआ था। लोग मेरे गले लगकर रो रहे थे पर मैं चुप थी। बस एक सन्नाटा-सा लगता है, जो कुछ कोई कह दे कर दो। जो कुछ पूछा जाए उसका जवाब दे दो और बस। इस समय भी वही अजीब सन्नाटा सा मुझ पर था। तीसरे दिन मुझे बताया गया कि हमारे पतिदेव उसी गाड़ी में थे। बस थोड़े घायल हैं और अस्पताल में हैं। अब मेरा हठ करना सहज था कि मुझे जाना है वहाँ। दुर्घटना हमारे घर से सौ किलोमीटर दूर हुई थी। अब कुछ-कुछ समझ में आने लगा कि फोन मेरे कमरे से क्यों हटाया गया है। क्यों शहर और गाँव के लोगों का आना-जाना बना हुआ है। अब साधुराम, जिन्हें मेरे पति बजिया कहा करते थे और वे उन्हें, फिर मेरे पास आ बैठे और बड़े डरते-डरते कहने लगे, ''बहन! बजिया घर से कब गए थे?''

मैं हैरानी से उनका चेहरा ताक रही थी क्योंकि गाड़ी में सेब की पेटियाँ भरते समय वे गाड़ी के पास खड़े थे। वे फिर खिसियाए से कहने लगे, एक्सीडेंट वाले दिन मैंने उनको घर से उतरकर सड़क पर जंगल की तरफ भागते देखा था। उन्होंने सफेद कुर्ता-पायजामा और पीले रंग का स्वेटर पहन रखा था। (ये उनके घर में पहनने के कपड़े थे।) मैं सोच भी रहा था कि बाबू तो चंडीगढ़ गया था, आया कब? फिर मैंने सोचा, शायद रात को आ गया हो। पर ये उस तरफ को भाग क्यों रहा है? फिर सोचा शायद कहीं पेट खराब हो तो जंगल को दौड़ लगा रहा है।''

''आप घर तक क्यों नहीं आए, मिलने? आप लोगों का तो बड़ा प्रेम था न?''

''मुझे खुद बड़ा अजीब लग रहा था। मेरे दिमाग में तुरन्त ही आ गया कि इनके तो घर में सारा इंतजाम है, जंगल क्यों जाएँगे? फिर मैं घर के दोनों तरफ गाड़ी देखने के लिए गया पर मुझे कहीं गाड़ी दिखाई नहीं दी। मुझे क्या पता था कि यह शमशान की ओर दोड़ लगा रहा है। मैं आवाज़ लगाता तो शायद वह बच जाता। मुझे क्या पता था।'' तभी मैंने देखा मेरा छोटा पुत्र सिर पीट-पीटकर रो रहा था और कह रहा था, ''अब समझ में आया, सुबह सवेरे मेरे कमरे में कौन आया था। मेरे बाप को मेरी चिन्ता रहती थी। बाजी (दोनों बेटे पिता को बाउजी कहते थे जो जल्दी कहने से बाजी बन जाता था।) कहते थे, ये बिगड़ रहा है। इसका क्या होगा? हाय! मेरा बाप मुझे देखने आया था, आखरी समय में। मुझे क्या पता था, कम से कम मैं मुँह न ढंकता, आँखें बंद न करता तो जाते हुए बाजी को देख तो लेता।'' मैं आज भी सोचती हूँ कि वह क्या था? यदि महेंद्र को वैसा कुछ आभास न हुआ होता तो वह इस तरह का व्यवयहार नहीं करता। खूब गुस्से में था, सुबह सवेरे। बिल्कुल लड़ने को तैयार। इसे आप नाटक तो नहीं कह सकते। फिर साधुराम ने जब उन्हें देखा तो वह वही समय था जो महेंद्र ने बताया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में उनकी हृदयगति रुकने का वही समय था। बताइए, कैसे न विश्वास किया जाए कि कुछ तो है।

दास्तान क्या बयान करूँ?

सब तरफ ख़ामोशी का आलम।
दास्तान क्या बयान करूँ ?

लबों के संग दिल भी ख़ामोश है दास्तान
क्या बयान करूँ?

न जाने कब से सूखे अश्क गालों
पर अपना पता बता देते हैं।

ख़ुश्क आँखों। काँपती पलकों की
दास्तान क्या बयान करूँ ?

भूली-बिसरी यादों की पगडंडियाँ दिल में
ख़्वाब सजाये बैठी हैं।

मंज़िल तक न जा सकने की उनकी
दास्तान क्या बयान करूँ?

क्या लिखूँ ?शायद यह कलाम उनको
आख़िरी सलाम है मेरा।

उजड़े दामन की सिलवटों की दास्तान
क्या बयान करूँ?

बहुत चाहा पर रोका दिल को मन में उनकी
तस्वीर बसाने से।

मन की चाहत में उलझे दिल की दास्तान
क्या बयान करूँ?

शील निगम

काँटेदार

दो बोगनबेलिया खड़े हैं
जैसे ओहदेदार अकड़ के
अगल बगल के सारे पौधे
रहते हैं दोनों से डर के

गहरे हरे एक के पत्ते
और दूसरे के हैं धानी
छिपे हुए काँटे फलने में
दोनों का ही नहीं है सानी

शकल और आदत कहती है
दोनों हैं मौसी के लड़के

आते पीले फूल एक में
और दूसरा खिले गुलाबी
ना तो गन्ध और ना गोदे
मगर नहीं अफसोस जरा भी

तितली। भौंरे और पखेरू
मिलते मगर दूर से उड़ के

है उदास तुलसी का बिरवा
ध्वज वाहक है परम्परा का
बिगड़ रहा है धीरे-धीरे
घर का आँगन का हर खाका

पहल नहीं करता है कोई
कौन मरे काँटों से लड़ के

बुधुवा ने देखा था ऐसे
जाने कितने पेड़ शहर में
किसे पता था दर्शन होगा
काँटों का मुखिया के घर में

इन्हें कोसते रहते सारे
राम करे गिर जायें सड़ के

सूर्य प्रकाश मिश्र

आदमी

कौवे ने कहा
बहुत सुंदर हो
कोयल तुम।
कौवे राजा
तुम भी तो
गाते हो बहुत मीठा
कोयल बोली।

अरे घुग्घी
तुम तो
निडर हो बहुत
बगुला बोला।
तुम भी तो
साधू हो, संत हो
तपस्वी हो
घुग्घी ने कहा।

टिटहरी रानी
बड़ी अच्छी हो तुम
सबकी प्यास बुझाती हो
पपीहे ने कहा।
कम नहीं हो तुम भी
पपीहा मित्र
तुमसे ही बादल हैं
तुमसे ही धूप है
टिटहरी बोली।

बया के साथ बैठा
हंस कड़कड़ाया
कवि मैं लेखक तुम
ऊंचा में विद्वान तुम
नतकटत सीख गए हैं
तुम अब पक्षी सब
आदमी हो गए हैं।

-०००-

कृष्ण चंद्र महादेविया

रिश्तों की मधुरता

अंजना छलोत्रे 'सवि'

कात्यानी कॉलेज में अपनी पढ़ाई में तल्लीन थी उसी समय उसके घर वाले उसके लिए अच्छा घर वर देखने में मशगूल। माता-पिता तो चाहते ही हैं कि अच्छा खाता पीता परिवार मिले और लड़का सुदर्शन न भी हो तो साथ में अच्छी नौकरी अवश्य हो तब भी चल जायेगा।

पढ़ाई के अंतिम वर्ष में ही तय हुआ कि गर्मियों में जुगल किशोर और कात्यानी की शादी कर दी जायेगी।

कात्यानी पीएचडी करना चाह रही है, लेकिन माता-पिता हाथ पीले कर गंगा नहाने की फिराक में है। घर वालों के दबाव में कात्यानी ने शादी कर ली, खुश भी है यह सोच कर की सुलझे विचारों का जुगल किशोर के साथ पटरी ठीक-ठाक बैठ जायेगी।

घर में सभी प्रशन्न, पढ़ाई को बदस्तूर जारी रखा गया और कात्यानी ने पी एच डी कर ली, नौकरी तलाशने लगी और नौकरी मिल भी इसी शहर में गई अब वह कॉलेज पढ़ाने जाने लगी, समय के साथ दो बच्चों की माँ बन गई कात्यानी।

सास, ससुर भी उम्र के पड़ाव को पार करते जा रहे हैं, अब उनको बच्चों की देखरेख करने में परेशानी होने लगी। घर पर आया है, फिर भी उस पर नजर रखना भी गवारा नहीं हो रहा। कात्यानी ने कॉलेज से लंबी छुट्टी ली और घर पर रहने लगी।

कहते हैं न समय अच्छे अच्छों के दबे राज खोलता है। यह बात कत्यानी के सामने आने लगी। सासू माँ यदा कदा उसे सुनाने लगी की तुम्हें इतनी आजादी मिली है, जुगल भी तुम्हारे पक्ष में ही बात करता है हमसे पूछो हम कैसे रहे हैं तुम्हारे ससुर के साथ।

"ऐसा क्या करते थे माँ जी।"... दो चार बार सुन लेने के बाद कात्यानी ने एक बार पूछ लिया।

"पूछो मत, क्या कहें तुम्हें।"...लम्बी सांस लेती हुए कड़वा सच कहाना चाह रही थी माँ जी।

"माँ जी कह भी दो, दिल हल्का हो जायेगा।"... कात्यानी ने सहलाने के लहजे में बोली।

"अरे बहु, तुम्हारे ससुर तो हम पर हाथ छोड़ देते थे।"...

"क्या ?... कात्यानी जड़ हो गई, इतने ऊँचे विचार रखने वाले ससुर जी की इज्जत उसकी नज़रों में एक झटके में धराशाई हो गई।

"तुम्हें क्या बताये, हमारी सास भी महा जख्खड थी, जब देखों उल्टी-सीधी पट्टी पढ़ा देती और तुम्हारे ससुर का क्या कहना दना दन धुनक देते।"...कराह ही तो उठी माँ जी।

भौचक हुई कात्यानी इस प्रसंग को सुनकर सुन्न हो गई, प्रतिष्ठित पढ़े-लिखे परिवारों में यह सब उसने तो अपने मायके में ऐसा कुछ देखना तो दूर सुना भी नहीं है। कात्यानी आगे नहीं सुन पाई, उठकर कमरे में आकर लेट गई। क्या यह कहावत इस परिवार पर लागू नहीं होती की खाने के दांत कुछ और दिखाने के कुछ और। वह जब से इस घर में आई है ज्यादातर पढ़ाई के लिए बाहर जाती

रही फिर नौकरी लग गई, ज्यादा समय घर पर तो रही ही नहीं, पता नहीं उसके आने के बाद भी कहीं माँ जी को यह यातना तो झेलनी नहीं पड़ी।

कात्यानी बेचैनी से करवटें बदलती रही इतना घोर अनर्थ वह तो बर्दाश्त नहीं करेगी और न ही माँ जी पर यह अत्याचार होने देगी।

कात्यानी इस गुथ्थी को कैसे सुलझाएँ की फिराक में थी कि एक सुबह नीचे से ससुर जी के चिल्लाने की आवाजें आ रही है, माँ जी को उनके मायके और उनके होने पर उलाहना दिया जा रहा है।

माँ जी धीरे बोलने के लिए कह रही होगी, क्योंकि ससुर जी की आवाज सुनाई दी..."मैं किसी से नहीं डरता।"

कात्यानी ने इतने दिनों में यह ठान लिया था कि अब यह खत्म ही होना चाहिए जुगल किशोर को कहाँ की जाकर देखो तो वह अनसुना कर ऑफिस के लिए तैयार होने चला गया तब तो ओर भी आश्चर्य हुआ की किस तरह का बेटा है यह।

नीचे से आवाजें आनी बंद हो गई सासू माँ बहुत देर के बाद रसोई में आई तो आँखें लाल है, उन्हें बहू के सामने इस तरह सुनना बेइज्जती महसूस हो रही होगी, कात्यानी अनुमान बखूबी लगा सकती है जब उसे इतना बुरा लग रहा है तो जिसे कहाँ गया है उसे कितना बुरा लग रहा होगा।

पुरा दिन माँ जी उससे बचती बचाते ही नजर आई। कात्यानी भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं है। न पूछ पा रही है कि क्या हुआ है ?

साठ वर्ष की माँ जी अपनी क्षमता से अधिक ससुर जी का काम करती रहती है, जहाँ तरस आ रहा है, वहीं खींज भी होने लगी की विरोध क्यों नहीं किया?

माँ जी को अपने लिए आवाज उठाने को तैयार करने के लिए कात्यानी को काफी समय लगा। उनके अंदर इतने बरसों से डर की मोटी परत जमी बैठी है, जिसे कुरेद-कुरेद कर निकालने में वक्त लगा।

धीरे-धीरे माँ जी कात्यानी की बातों से सहमत होने लगी। इस उम्र में ससुर जी को माँ जी की ज्यादा जरूरत एक सहयोगी की है न कि माँ जी को। दस वर्ष छोटी है माँ जी, ससुर जी से। दुनिया भर की बीमारियों से ग्रसित है और आज भी पुरुष होने का दंभ भरने से नहीं चूकते।

"माँ जी, यदि आप तैयार हो तो एक योजना है मेरे पास उस पर अमल करके देखते हैं।"... कात्यानी ने एक दोपहर माँ जी से बोली।

"क्या करना होगा बहू ?"....

"ज्यादा कुछ नहीं आप दो दिनों के लिए मेरी मम्मी के घर जा कर रहना, हम यहाँ यह बात किसी को नहीं बतायेंगे।" कात्यानी ने माँ जी के चेहरे की तरफ देखा, जहाँ धीरे-धीरे डर की बदली छा गई है।

"नहीं बहू, फिर वह घर में घुसने नहीं देंगे बहुत अड़ियल हैं।"... माँ जी तौबा करते हुए बोली।

"मैं, आपके साथ हूँ माँ जी, एक बार हिम्मत करके देखे कद्र समझ आती है या नहीं।"... कात्यानी ने हौसला अफजाई की।

"लेकिन बहू मुझे डर लग रहा है।"...

"आप हिम्मत दिखाएं, मैं यह जो अभी तक होता आया है अब आगे आपके साथ ऐसा होने नहीं देना चाहती माँ जी।"... कात्यानी दृढ़ निश्चय है।

बेमन से ही सही माँ जी तैयार हो गई। कोई रूठा राठी नहीं, न कोई झगड़ा हो रखा है इस समय, घर सामान्य है।

हँसी खुशी के माहौल में दोपहर में ससुर जी बाजार तक गए। यही मौका कात्यानी ने चुना क्योंकि इस समय जुगल किशोर भी टूर पर

गया हुआ है। माँ जी को अपनी मम्मी के घर दो दिनों के लिए भेज दिया, मुख्य सड़क के पार मम्मी गाड़ी लेकर आ गई है।

ससुर जी शाम तक इंतजार करते रहे फिर आवाजें देने लगे।

"आदी, तुम्हारी दादी को भेजना बेटा।".. उन्होंने पौते को आवाज लगाई।

"पिताजी, माँ जी तो नीचे ही होगी।"... कात्यानी ने जवाब दिया।

"यहाँ तो नहीं है, सब्जी लेने गई है क्या ?"...

"मुझसे तो कह कर नहीं गई।"...कात्यानी ने अनभिज्ञता दर्शा दी।

"ऐसा तो नहीं करती है, कहाँ चली गई।"... पिताजी के स्वर में चिंता साफ नजर आ रही है।

"आ जायेगी पिताजी, सत्संग में बैठ गई होगी कोई बात नहीं, मैं आपका खाना लगा लाती हूँ"... कात्यानी बोली।

"हाँ ले आओ।"...स्वर फिक्र से लबरेज है।

"पिताजी, खाना खा लीजिए।"...वह अनमने मन से खाने बैठ गए ससुर जी किसी सोच में डूबे बैठे हैं, कुछ देर बाद कात्यानी कुछ और लाऊ का पूछ आई।

दो मंजिला मकान है नीचे सास-ससुर रहते हैं ऊपर रसोई और कत्यानी परिवार सहित रहती है। बाबूजी का रात दस बजे सब्र का बाँध टूट गया।

"बहू, पता करो कहाँ गई तुम्हारी सास।"... स्वर मैं खींज के साथ-साथ चिड़चिड़ाहट भी है।

"जाने दो न पिताजी, वैसे भी कौन सा वह आपको सुकून दे रही थी आ जायेगी, जब आना होगा।"... कात्यानी ने कड़वा बोल बोला।

"कैसी बात कर रही हो बहू।"... वह झुंझला कर बोले।

"और क्या पिताजी, आप की मार और डांट तमाम उम्र खाती रही हैं, उब गई होंगी, इसलिए चली गई।"... कात्यानी ने लापरवाही से कहां।

"बहू, अभी तो कोई लड़ाई भी नहीं हुई, फिर क्यों, कहाँ चली गई, तुम क्या कह रही हो यह सब ?"...उन्हें अनुमान नहीं था की बहू को यह पहले की बातें पता होंगी।

"ठीक ही कह रही हूँ पिताजी, आप फिक्र क्यों कर रहे हैं गई होंगी मामा जी के घर आ जायेंगी।"... कात्यानी ऊपर से ही जवाब दे रही है वह भी जानती है कि सामने जाकर बोलने की हिम्मत उसमें भी नहीं हैं।

"जुगल, को फोन कर पूछो उसे कुछ बता गई होंगी।"..

"पिताजी, आप फिक्र न करें, यह तो इस समय ट्रेन में होंगे, फोन लगाया था, नेटवर्क नहीं मिल रहा है।".. कात्यानी झूठ पर झूठ बोले जा रही है।

बहुत देर तक बड़बड़ाने की आवाजें आती रहीं, "ऐसा करती नहीं है, सच में दिमाग तो नहीं फिर गया, क्या सोच कर गई, आने दो फिर बताता हूँ, फिर कुछ देर बाद खुद ही कह देते, नहीं... नहीं कुछ नहीं कहूँगा, उससे आगे से कभी झगड़ा नहीं करूँगा, कुछ नहीं कहूँगा,"... कात्यानी सब सुन रही है।

रात बारह बजे जाकर देखा तो थक कर सो गए हैं पिताजी, कात्यानी को नींद नहीं आई। डर भी है कि पिताजी ज्यादा परेशान न हो जाये, सुबह चार बजे ही नीचे खटर पटर सुनाई दी। कात्यानी भी उठ बैठी चाय बना ले गई।

"आ गई तुम्हारी सास।"... पिताजी ने पूछा।

"नहीं पिताजी।"...

"कहीं कट मर न गई हो।"... झुंझलाकर बोले।

"ऐसे क्यों कह रहे हैं आप, आ जायेंगे।"...कात्यानी आश्वासन देने के लहजे में बोली।

"ऐसा तो कभी किया नहीं, पता नहीं क्या सूझा।"... पिताजी कह रहे हैं कात्यानी सारा काम यथावत करती रही और नजर जमाए रखी कि क्या मन स्थिति है, डर बढ़ता जा रहा है अब उनके चेहरे पर।

खाने से निपटकर दोपहर में वह भी जाकर लेट गई और आगे के प्रोग्राम के बारे में सोचने लगी की क्या करना है।

"जुगल को पूछा क्या बहू, कब तक पहुँच जाएगा ?"... दोपहर में आवाज लगाकर पूछा पिताजी ने।

"शाम छः बजे तक आ जायेंगे पिताजी, हाँ पूछा है उनसे भी कुछ नहीं कहा है माँ जी ने।".. कात्यानी झूठ फिर बोल गई।

अब इस नाटक का अंत तो करना ही था जुगल के आने के पहले-पहले वरना स्थिति बिगड़ सकती है। पांच बजे करीब माँ जी को बुलवा लिया मम्मी छोड़ गई, पैदल चलकर घर आ गई।

कात्यानी उनके आने के पांच मिनट पहले, बच्चों को लेकर नीचे पहुँच गई। माँ जी आई, चुपचाप आकर पलंग पर बैठ गई, बच्चे दादी से लिपट गए, पिताजी चुपचाप देखे जा रहे हैं । सासू माँ को उदास ही दिखना है यह तय था। कात्यानी दौड़ कर गई पानी, चाय ले आई।

"कहाँ गई थी माँ जी, आपके बिना हमारा बुरा हाल हो गया था, आपका बेटा भी यहाँ नहीं है, पिताजी बहुत परेशान हो गये थे माँ जी।"... कात्यानी रुदन करती सी बोली।

दोनों सांस बहू ने आँखों आँखों में इशारा किया, अब बोलने की बारी माँ जी की है।

"क्यों बहू, क्यों परेशान थी मैं तो वैसे भी तमाम उम्र बोझ ही रही हूँ, मेरी किसे जरूरत पड़ गई, अच्छा होता मर खप जाती।"... माँ जी यह ससुर जी को सुना रही है।

"ऐसा न कहे माँ जी, आपके बिना हम अधूरे हैं।"... कात्यानी ने भी अपना रोल अदा किया।

"कैसी बात कर रही हो, इन बच्चों का ख्याल नहीं आया तुम्हें, बिना बताये कहाँ चली गई थी।"...पिताजी अब तक चुपचाप बैठे थे, माँ जी जब कुछ नहीं बोली तो अपना न कहकर बच्चों की आड़ ले ली।

माँ जी अभी भी चुप लगाये रही।

"कोई ऐसे घर से जाता है क्या, तुम्हारे बेटे को क्या जवाब देता मैं ?"... पिताजी की आवाज में आद्रता आ गई, वह सच में अंदर से हिल गए हैं।

माँ जी ख़ामोश रही।

"अच्छा चलिए माँ जी, ऊपर चलो, कुछ खा लो और आराम करो, बाद में बात करेंगे।"... कात्यानी ने माँ जी की बाह पकड़ कर उठा लिया।

पिताजी देखते ही रह गए, कुछ समय बाद जुगल किशोर भी आ गया, पिताजी को खाना कात्यानी देने गई।

"तुम्हारी सास ने खाना खा लिया।"... पिताजी ने पूछा।

"अभी नहीं खाया, खिला दूँगी मैं।"... कहती हुई कात्यानी वापस आ गई।

उस रात माँ जी ऊपर ही सोई। घबराहट तो सास बहू दोनों को है लेकिन धैर्य रखना ही है, कात्यानी नहीं चाहती कि उसके बड़े होते बच्चों के सामने दादा दादी के लड़ते झगड़ते की तस्वीर आये।

दूसरे दिन भी दोपहर के खाने तक माँ जी ऊपर ही रही, अब तो छटपटाहट की बारी पिताजी की हो गई। उन्हें तो लग रहा होगा कि इतनी हिम्मत कैसे कर रही है कि अभी तक उनके पास नहीं आई। कात्यानी चाहती भी यही है कि विछोह का दंश उन्हें डस ले ताकि माँ जी की अहमियत वह समझ जाये।

दोपहर में चाय लेकर माँ जी गई। कात्यानी कान लगाये रही कोई आवाज नहीं आई, बातें करने की सामान्य आवाजें आ रही हैं उसमें भी पिताजी की ही आवाज है।

दो घंटे बाद माँ जी ऊपर आई, कात्यानी को गले लगा कर रो दी।

"क्या हुआ माँ जी।".. कात्यानी उनकी पीठ सहलाते हुए पूछा।

"आज पत्थर पिघल गया।"...माँ जी रोती रही मगर खुश है।

"मैंने, पढ़ लिया है, तुम पढ़ो।"...अपना हाथ आगे कर दिया यह एक पर्ची है जिसे वह कात्यानी को दे रही है।

कात्यानी की उत्सुकता चरम पर पर्ची खोली पढ़ी, अपने सारे गुनाह की माफी माँगते पिताजी आगे कभी भी दूरव्यवहार नहीं करेंगे की कसम खा रहे हैं और आग्रह कर रहे हैं कि आगे कभी ऐसे छोड़कर मत जाना।

कात्यानी ने खुशी से माँ जी को गले लगा लिया, दोनों के आँखों से आँसू बह निकले।। थोड़ा सा कष्ट और ढेर सारी खुशियाँ बटोर ली। सच अगर नारी, नारी की पीड़ा समझने लगे तो सास बहू का रिश्ता ममत्व से भरा हो सकता है, पहल करने और सहयोग देने की जरूरत है।

पारमिता षड़ंगी

सम्बित मिश्र के पास जब मैं नहीं थी

आ कर्षण और प्यार की परिभाषा में कितना फर्क है। आज तक समझ नहीं पाई थी। सात साल मेडिकल कॉलेज में पढ़ने के बाद भी हृदय के अनुभव। मन की उपज और मस्तिष्क का गणना के बारे में सचमुच मैं कितना अनभिज्ञ हूँ! दिल की धड़कनों की गति तो पढ़ सकती थी मगर उसकी व्यथा किस सब्जेक्ट में पढ़ाया जाता है। वो पता नहीं था। रह रह कर नहीं । सम्बित हमेशा याद आता था। उस से दूर जाने के लिए खुद को तो मना लिया था मगर वो ही नहीं माना बैठ गया मेरे हृदय के किसी एक कोने में अपना डेरा डाल कर। उसकी यादें मन को जकड़ कर रखी थी और मेरा मस्तिष्क तो सम्बित के अलावा कुछ और नहीं सोच सकता था।क्षण भर भी फुर्सत मिले तो उसके साथ बिताए हुए पल हावी हो जाते है। मेरे मन। शरीर और चिंतन में।

अचानक कुछ कोलाहल से मेरा ध्यान टूटा। हस्पताल के परिसर में इतनी भीड़ क्यों?एक स्ट्रेचर में बिमार को लेकर भाग रहे थे दो वार्ड बॉय। जैसे हस्पताल भी सुबह सुबह शांत नि: शब्द परिवेश में आँखे मलते मलते एकाएक उठकर भागने लगा था।भाग रहे थे कुछ नर्स और डॉक्टर। मैं भी भागने लगी थी। क्या हुआ है? आक्सिडेंट ?वी। आई। पी होंगे शायद।सब ओ। टी के तरफ भाग रहे थे और मैं रिसेप्शनिस्ट के पास।

"कौन है? क्या हुआ है?"

"डॉक्टर त्रिपाठी। जल्दी आइए प्लीज़। एमरजेंसी है।" रिसीवर में बोलते बोलते मेरी तरफ देख कर संगीता बोली। "मंत्री सत्य प्रकाश मिश्र के बेटे सम्बित मिश्र एड्मिट हुए हैं। उनके तबियत बहुत ख़राब हो गई है।"

'सम्बित ' । नाम सुनते ही मन में छुपी कुछ वेदनाएं सुनामी बन शरीर में विस्तार करने लगी। सालों पहले सम्बित को जब छोड़कर चली गई थी तब ऐसा लगा था कि किसी एक दुर्ग को जीत लिया है। मगर आज उसे ऐसे देख कर.... पता नहीं क्यों एक पराजय और संवेदना से मुझे जकड़ लिया था।

** ** ** **

"हैलो क्यूटि।"

सुनकर भी अनसुना कर मैं आगे चलती जा रही थी। कि अचानक वो सामने आकर खड़ा हो गया। जान गई कि ये रैगिंग थी।पलक झपकते ही उसने मेरा दुपट्टा खिंच लिया और अपने हाथों में लपेटने लगा। मैं घबरा गई । अवश्य थोड़ी देर के लिए। फिर नज़र उठाकर उसे देखा तो वो भी मुझे देख रहा था।क्या सोचा। पता नहीं। दुपट्टे को मेरे कंधे में रख "सॉरी" बोलकर चला गया।

वो थी मेरी सम्बित के साथ पहली मुलाकात। बाएं कान में कुंडल। स्टाइलिश हेयर कट। ब्रांडेड कपड़े। । । थोड़ी देर के लिए देखा था उसे।

ऐसा नहीं हुआ कि हम फिर कभी नहीं मिले। सबेरे सबेरे होस्टल के सामने सिगरेट फूंकता रहता था तो कभी मेरे क्लास रूम के

बाहर खड़ा हो कर झांकता था।उसका ऐसा बर्ताव मुझे अच्छा नहीं लगता था। मगर मै कुछ बोल नहीं पा रही थी। मंत्री का बेटा जो था। शिकायत कर के भी क्या फायदा।

मेडिकल कॉलेज में पढ़ाई जितनी। प्रैक्टिकल भी उतने ज्यादा है। खूब मेहनत करनी पड़ती है। उसके साथ साथ भूख भी कभी कभी परेशान कर देती है। बहुत बड़ा कैंपस है। प्रैक्टिकल रूम्स के बांए तरफ। लगभग चार सौ मीटर दूर लाईब्रेरी और दाहिने से तीन सौ मीटर दूर कैंटीन। आने जाने के रास्ते के दोनों तरफ गुलमोहर के पेड़। चार बजे के बाद पता नहीं कौन से अनजाने गीत की धुन पर गुलमोहर के फूल सारे नाचते हुए अपनी महक फैला देतें है।वो गीत। वो नाच। वो महक ... मैं महसूस करती। ... विवश हो जाती चलते चलते थोड़ी देर वहीं खड़े हो जाने के लिए।

पाँच बज चुका था। प्रैक्टिकल रूम से निकलने के बाद खूब थक गई थी। गुलमोहर फूल की महक खिंच रही थी। मन किया थोड़ी देर उस रास्ते पर जा कर खड़ी हो जाऊं। ठीक उसी वक्त।

"चल कैंटीन चलतें है"रोमा ने कंधे पर हाथ रख कर कहा।

"लाइब्रेरी जाना है।"

"नहीं पहले चाय और नाश्ता। फिर बाकी काम। मतलब बिना पेट्रोल। गाडी कैसे चलेगी। वापस लाइब्रेरी आने के लिए लगभग एक किलोमीटर चलना पड़ेगा। हे! भगवान। । । ।!"

रोमा का शरीर थोड़ा मोटा है। चलने के नाम से उसे घबराहट होती है।वो मेरे तरफ ऐसे देख रही थी जैसे कितनी लाचार है वह।

"चलना। गप्पे लड़ाते हुए चलेंगे।इस बहानें तेरा वजन थोडा कम हो जाएगा।"

दोनों कैंटीन में पहूँचे। अंदर जाते ही नजर पड़ी सम्बित के उपर।एक अजीब से आदमी के साथ बैठा था वह। हिप्पी जैसा दिखता था।भूरे बाल ऐसा था जैसे न जाने कितने दिनों से कंघी नहीं की है। सेविंग के बिना अस्तव्यस्त दाढ़ी। लाल आँखे। कमीज़ के आधे बटन खुले हुए थे- ये तो बिल्कुल इस कॉलेज का नहीं है। कौन है। सम्बित इसके साथ क्या कर रहा है? सोचते सोचते मैं उसके तरफ देखा.... मुझे वहाँ देखकर वो असहज हो गया।मूँह में कोई भाव न लाते हुए मैं और रोमा एक जगह पर बैठ गए।

"पता है। वो तुझे लाइन मार रहा है" रोमा ने अचानक उसकी तरफ देख कर कहा।

"चुपचाप आर्डर कर। उसकी तरफ मत देख। और आइंदा ऐसी बातें मेरे साथ मत करना" मैंने गुस्से में बोला।

क्या सचमुच मै गुस्से में थी।

"तु थोड़ा उसे लिफ्ट दे न!"

" ये कैसी भाषा बोल रही तू! मैं यहाँ पढ़ने आई हूँये सब करने नहीं। बहुत परेशानी उठाकर माँ और बाऊजी पढ़ा रहें हैं मुझे। फिर कभी ऐसी बातें मत बोलना" रोमा के उपर गुस्सा कर रही थी। मगर मन में यह रह कर ये ख्याल आ रहे थे। 'सचमुच मैं गुस्सा हूँ!'

" बुद्धु। । । । नासमझ। । । देख वो मंत्री का बेटा है। तेरा कैरियर कहाँ से कहाँ । । । कितना उपर पहुँचा देगा वो।तू उसकी पसंद है इसलिए तेरे साथ कोई रैगिंग नहीं करता है।"

"अच्छा। तुझे कैसे पता?"

"अरे! पूरा कॉलेज को पता है।"

"ठीक है। अब चल लाइब्रेरी।फालतू बातें छोड़कर पढ़ाई में ध्यान लगाएंगे तो कैरियर अपने आप उपर उठ जाएगा।"मैं रोमा का हाथ खिंच रही थी।

"आजकल काली लड़कियाँ ज्यादा भाव खातें हैं।"रोमा की बातें सुनकर मुझे हंसी आई।

"एक तो मैं काली नहीं। साँवली हूँ। और साँवली होने के साथ साथ सुंदर भी हूँ।"

हम दोनों उसी रास्ते में वापस आ रहे थे। वही गुलमोहर के फूल। वही खुशबु। वही पवन। फिर भी कुछ तो बदले हुए थे।मृदु मलय की धुन में गुनगुनाते फूलों के महक मेरे कानों में उसका नाम ले रहे थे।

"सम्बित.... सम्बित..... "

कुछ और नहीं सुनाई दे रहा था।न जाने रोमा क्या बड़बड़ कर रही थी। मेरा मन शायद कैंटीन में रह गया था।

मेरे साथ ये सब घटने के बाद भी आने वाले दिनों में खुद को संभाल रही थी। पढ़ाई में और ज्यादा समय बीताने लगी।पहले कि तरह सम्बित रोज़ मेरा क्लासरूम के सामने खड़ा रहता। कुछ देर फॉलो भी करता। टकटकी लगाए देखता रहता। कभी सामने आ जाए तो मैं रास्ता बदल कर चली जाती। फिर पिछे मुडकर देखती। कहीं वह देख तो नहीं रहा है।मन ही मन हँस देती। ऐसे ही शाय़द। दिन बीत जाते। अगर उस दिन वो घटना न घटती....

बात कुछ ऐसी थी – होस्टल से क्लासरूम। फिर लाइब्रेरी। फिर प्रैक्टिकल।

उसके साथ देर रात तक पढ़ाई अबसन्न शरीर और थका हुआ मस्तिष्क। । । । उस दिन साथ छोड़ दिए।नजर के सामने घूम रहा था बिना मांस चमड़े का एक हिलता हुआ कंकाल। । । कल रात से कुछ सलूशन को याद रखने कि विफल चेष्टा। । । । दूर दूर उड़ कर जाते हुए इंस्ट्रक्टर्स के शब्द। । । । । ओहो पूरा क्लासरूम घूम रहा है। । । । । "रोमा। । सुन। । । । "। नहीं आवाज नहीं निकल रही है। । । । । धडास। । । । गिर गई शायद।

आँखे खुली तो हस्पताल के बिस्तर में थी। । । सालाईन के साथ। "अरे बाप रे!। परीक्षा पास आ रहा है। "सोच कर खुद ही डर गई।मेरे चेहरे के बदलते भाव को देख कर। "परेशान होने की कोई बात नहीं। स्ट्रेस के कारण चक्कर आ गया। मेडिसिन और खाने का ध्यान रखो। सब ठीक हो जाएगा"प्रिस्क्रिप्शन सम्बित के हाथ में देते हुए डॉक्टर त्रिपाठी बोले। सम्बित को यहाँ देखकर मैं आश्चर्य नहीं हुई।पता था ये रोमा का ही काम होगा। "बदमाश। आने दे मुझे होस्टल में। फिर देखती हूँ तुझे" मन ही मन बड़बड़ कर रही थी।

"कब डिस्चार्ज मिलेगा। डाक्टर"सम्बित का स्वर सुनाई दिया।

"आज शाम को"

शाम को फ्रूट्स और मेडिसिन के साथ मुझे होस्टल तक छोड़ने आया था सम्बित।बस। उस दिन से मेरे जीवन में सम्बित मिश्र के नाम के अध्याय की शुरुआत हो गया।

कुछ दिनों के बाद मैं ठीक हो गई थी। जिंदगी पटरी पर आने लगी थी। मैं और रोमा कैंटीन में चाय पी रहे थे कि अचानक।

" चाय क्यों पी रहे हो। ज्यूस पीना चाहिए। हेल्थ के लिए अच्छा है।" मैं पिछे मुडकर देखा तो सम्बित था।"क्या मैं तुम्हें जॉइन कर सकता हूँ?"

"जी बिल्कुल। " बोलते हुए रोमा ने पास में पड़ा चेयर की तरफ इशारा किया।

सम्बित के बैठते ही वह उठ कर खड़ी हो गई। और बोली। "एक्सक्यूज मी। मुझे ए। टी। एम्। सेंटर जाना है। आप दोनों चाय एन्जॉय किजिए।" रोमा की बातें सुनकर मेरे पाँव के नीचे की जमीन खिसकने लगी।लगा वक्त वहीं थम गया। । । चारों तरफ नि: शब्दता फैली हुई है। और मैं पत्थर में बदल गई। मुझे न कुछ सुनाई दे रहा था । न दिखाई। हृदय जोर से धड़कने लगा था। जैसे उछल कर निकल आएगा।ये कैसा अनुभव है!

"अब कैसे हो?"

"ठीक हूँ।"

फिर ऐसे ही कुछ मुहूर्त बीत गए बिना शब्दों के।

"देर रात तक पढ़ाई करते हो शायद।"

"हाँ"

"ओके। ये मेडिसिन अपने पास रखो। जब स्ट्रेस फील होगा तब खाना। बहुत हल्का महसूस करोगे और एनर्जेटिक भी।"

"कोर्स कंप्लीट करने से पहले डॉक्टर बन गये क्या?"

"अरे नहीं। यहाँ पढ़ने। कौन आया है। मेडिकल में किसे इंटरेस्ट है। पापा ने जिद किया । । । । मंत्री है । । । । इसलिए ऐडमिशन मिल गया।खाली उनके जिद पूरा कर रहा हूँ।"

"हाँ। मेडिकल कॉलेज में पढ़ने के लिए इंटेलिजेंट भी होना चाहिए न!"

"मैं इंटेलिजेंट हूँ।"

मेरे मूहँ से हँसी निकल गई।उसे शायद बुरा लगा।

वो बोलता रहा। "मुझे मेडिकल पढ़ने में कोई दिलचस्पी नहीं है। अच्छा। बताओ! कभी इस शरीर के अंदर झांककर देखा हो। हाँ देखा होगा। तब भी तो मन में झांकने का समय नहीं मिलता है। शरीर के भीतर कितनी कॉम्प्लिकेशन है । वो सब पढ़ने के लिए आग्रह है। मगर एक सरल मन की निष्पाप इच्छा को जानने के लिए कोशिश

भी नहीं करती हो।"वो कुछ क्षण चुप हो गया और फिर बोला। "जानती हो। अगर मैं डाक्टर बना न तो ऑपरेशन थियेटर में पेसेंट का इंटरनल बॉडी पार्ट्स को जोड़ कर एक कर दूंगा। ताकि किसी और डॉक्टर के पास जाने कि जरूरत नहीं पड़ेगी। । । । । हा। । । । हा। । । हां। । । । ।"

वो हंस रहा था। मुझे लगा वो मज़ाक उडा रहा है शायद इस प्रोफेशन का। । । उसके पापा का। । । । या भगवान का। । । । पता नहीं। फिर खड़ा हो कर बड़े बेपरवाही से उसने चैयर को पाँव से धक्का मारकर पीछे हटाया और वहाँ से चला गया। मैं मूर्ति के जैसा बैठी रही। चार साल मेडिकल कॉलेज में पढ़ने के बाद भी ये कैसी सोच है। कि शरीर के सारे हिस्सों को जोड़कर एक कर दें। । । । उसके माता पिता क्यों नहीं समझाते । उसको।बहता हुआ पानी अगर एक गड्ढे में गिर कर बंध जाए तो उनकी वेदना को कोई नहीं जानता है। ठीक वैसे ही वेदनाओं में धीरे सम्बित की मनोदशा । । । । । किसी को पता ही नहीं था

या किसी को फ़िक्र नहीं थी ..... मैं गहरी सोच में थी। कि अचानक....फिर से वही बेपरवा ढ़ंग से वो आया। चैयर को खिंचकर बैठ गया।

"क्या द्वितीय ईश्वर बनना चाहते हो?"मैंने पूछा

"डोंट गेट अपसेट। यह मेरा स्टाइल है।"उसने कहा। "जीवन का हिसाब किताब। मैं नहीं करता। बस। उसकी धारा में बहता रहा हूँमन तो कभी कभी नहीं मानता है। सोचने पर मजबुर करता है।

मगर....ये सोच कर चलना मेरे बस कि बात नहीं। छोड़....ये लो.... तीन टैबलेट्स .... आपने पास रखना। कभी स्ट्रेस या थकान फील करो तो खा लेना।हाँ....क्या बोल रहे थे तुम....द्वितीय ईश्वर....कभी मौका मिला न। प्रमाणित कर दुंगा....तब वो वक्त भी मेरा होगा....ये शरीर भी मेरा होगा और वो इच्छा भी मेरा होगा। ओके...." उठ कर जाने लगा वो।

"सुनो। इसका नाम तो बताओ।"

"नाम जान कर क्या करोगे? क्यों विश्वास नहीं है मुझ पर? डरो मत।ये काम की टैबलेट्स है।"फिर पास आया। एकदम पास। झुक कर मेरे होंठो के पास। बोला। "इसका नाम बिल्ली....हाहा....म्याउं....म्याऊं....म्याऊं।।।।"इतना कहते ही तुरंत मुड़ कर चला गया। मैं कुछ समझ नहीं पाई। मगर उस वक्त मुझे गुस्सा आया कि इतना भी तमीज नहीं था उसके पास कि एक लेडी के साथ चाय पीने के बाद बिल पे करना चाहिए।

सम्बित की दी हुई टैबलेट्स कुछ दिन तो ऐसे ही पड़ी रही मेरी पर्स में।मगर थोड़े ही दिनों के बाद सचमुच उसकी जरुरत महसूस हुई।ये टैबलेट सही है कि नहीं ? लूं कि नहीं लूं....इस असमंजस में कब एक टैबलेट निग़ल गई पता ही नहीं चला। मुझे इफेक्टिव लगा।दिन भर की थकान हवा में उड़ गई थी।उपर से एनर्जेटिक महसूस हुआ।

एक्जाम टाइम में और दो तीन बार

सम्बित से वो टैबलेट लेनी पड़ी। कैसी मेडिसिन थी। खाने के बाद शरीर से ख़ाली थकान गायब नहीं हो गई। मन में ताजगी महसूस हो रही थी। जैसे हवा में थी मैं।बीच बीच में मन के किसी एक निवृत्त कोने से छोटा सा संदेह झांक रहा था। कोई ख़राब साइड इफेक्ट तो नहीं। । । खुला टैबलेट है।....नाम पता नहीं चल रहा था। ....सम्बित ने भी बताया नहीं।पता था ऐसे टैबलेट का सहारा लेना ठीक नहीं। ....मगर। ....एक्जाम टाइम में.... थोड़ी सी चलेगी। ....अपने आप को तसल्ली दे रही थी।

एक्जाम खत्म होने के बाद की शाम।।। जैसे एक अलग ऋतु आ गई थी।सब खुशी से झूम उठे थे। होस्टल के सामने बैठ कर बातें चल रही थी। छुट्टियों में घर जाना है। भले ही थोड़े दिन के लिए।।।। पैकिंग करना है। सब के मुखड़े में खुशी की झलक झांक रही थी। ऐसा लग रहा था कि एक नये ऋतु की मलय बह रही है। और गुलमोहर पेड़ की डालीं झुक कर हमारी हंसी में लहरा रही है। कुछ इधर उधर की भावनाओं में। मैं फंस कर अन्यमनस्क हो गई थी कि....

"हैलो। छुट्टी में क्या कर रही हो" अचानक सामने खड़ा हो गया सम्बित।

"घर जाना है और क्या!"

"ओके। जाओ। पर आज रात को मेरी पार्टी अटेंड करने के बाद।" उसका वही बेपरवा ढ़ंग।

"पार्टी! किस खुशी में?"

"तुम्हें पता नहीं क्या? मुझे इस इंस्टीट्यूट से मुक्ति मिल गई ....सॉरी मतलब पांच साल खत्म....जब रिजल्ट आएगा तब देखा जाएगा।"उस की ऐसी बातों से मुझे चिढ़ थी।

"ये एक नोबेल प्रोफेशन है। मुक्त हो गए मतलब। कैरियर बनाना है कि नहीं" अब चिढ़ ने कि बारी उसकी थी।

"नहीं। मैंने कहा था न। मुझे डॉक्टर नहीं बनना। ....खेर छोड़ो। मम्मी पापा दिल्ली गए हैं। घर पूरा ख़ाली है। हम भी फ्री है तो मिलतें है। तुम तो मेरी स्पैशल गेस्ट हो।आना ही पड़ेगा। तुम्हारे होस्टल से आठ गर्ल्स आ रही है। होस्टल से पर्मिशन और आने जाने का जिम्मा मेरी है। तैयार रहना। ठीक सात बजे गाड़ी आ जाएगी। "वो चला गया।

उसे 'ना' नहीं बोल पाई। शायद उसने मौका नहीं दिया या होस्टल से बाहर जाने कि लालसा ने मुझे भी 'ना' बोलने से रोक रखा था।जो भी हो अब शाम का इंतजार था।

मेडिकल कॉलेज से लगभग एक किलोमीटर दूर है सम्बित का गेस्ट हाउस। उसने ठीक समय पर गाड़ी भेज दी थी।हम सब पाँच मिनट में ही उसके गेस्ट हाउस पहुंच गए थे। लाउडस्पीकर में आधुनिक गाना।।।।। उसकी ताल में नाचते हुए जोड़े। ये सब मैं पहली बार देख रही थी। मतलब खाली फिल्मों में देखा था। मैं तो गाँव से आई थी। मुझे ये फिल्मी परिवेश कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। मैं चुपचाप एक कोने में खड़ी हो गई। सामने वेटर कोल्डड्रिंक ले कर उस ओर चला गया। काश! यहां आता।।। एक ग्लास उठा लेती। बुलाने में शर्म आ रही थी।

"यहाँ अकेली क्यों खड़ी हो?"

"ऐसे ही। तुम अपने गेस्ट को अटेंड करो। मैं ठीक हूँ।"

"हा। । । । हा। । । । । । यहाँ किसी को अटेंड करने को जरुरत है क्या?सब तो एक दूसरे में मस्त हैं।हाँ। एक ऐसी गेस्ट मेरी है। जो यहाँ बोर हो रही है। उन्हें अटेंड करने की इच्छा है। बस पाँच मिनट में आया। "

सम्बित ने वेटर के कान में कुछ कहा।दो कोल्डड्रिंक्स की ग्लास पकड कर कहा। "आओ। तुम्हें कुछ दिखाना है। "मैं भी उसके पीछे पीछे चल दी।

एक कमरे के दरवाजे को पाँव से धक्का मारकर खोला। बहुत बड़ा कमरा था।एक सिंगल बेड और उसके सामने स्टडी टेबल। एक बिन बुलाए मेहमान की तरह पड़ा था। मगर असली आकर्षण का केंद्रबिंदु तो सुसज्जित होकर रखे हुए कुछ पेंटिंग्स थे।

"वाह! आपके चॉइस और कलेक्शन की तो दाद देनी पड़ेगी। बहुत सुंदर पेंटिंग।कहाँ कहाँ से कलेक्ट किए हैं आप ने।"मैं बिना रुके तारीफ करती जा रही थी।

"कलेक्शन! क्या तुम सोच रही हो कि ये सब ख़रीदा है मैंने! ना। । । । ना। । । । ये सब मैंने बनाया है।"

"रियली!आप तो बहुत टैलेंटेड निकले।" अब सरप्राइज होने की बारी मेरी थी।

"हाँ। । हूँ। । । । मैं। सबको पता है। । । मुझे पता है। । । । मगर मेरे मम्मी। पापा को कोई फर्क नहीं पड़ता।"उदास हो गया वो। फिर दोनों ग्लास को स्टडी टेबल पर रख कर ड्रायर खोला। अंदर से एक छोटा सा बटुआ और उसमें से पुड़िया निकाल कर थोड़ा सा पाउडर अपनी ग्लास में डाल दिया।

"क्या मिलाया ग्लास में?"मैंने पूछा।

"ओनली कोल्डड्रिंक्स सिर्फ लड़कियों के लिए। बॉयज़ नीड्स स्ट्रांग।"

"ये किस किताब में लिखा है?"

"ओहो। !यू वांट टू ट्राय। फाइन।"सम्बित ने थोडा सा पाउडर मेरी ग्लास में मिलाकर। मुझे देते हुए कहा। "चियर्स।"

"उस दिन के लिए माफी चाहती हूँ।मैंने आपका मजाक उड़ाया था। सचमुच आप द्वितीय ईश्वर हो। आपके सृष्टि बहुत सुंदर है।" कोल्डड्रिंक्स को हाथ में लेते हुए मैंने कहा।

"ये ख़ाली मेरी पेंटिंग्स नहीं है। । । । मेरी दुनिया है। । । मैं इसमें रहता हूँ। । । । रंग भरता हूँपर आनेवाली पेंटिंग इससे भी सुंदर होगी। जिसमें मेरी कल्पना के साथ किसी का प्यार भी मिल जाएगा।" हो सकता है जो वो बोल रहा था। मैं वोही समझ रही थी। कैसे रिएक्ट करुं। सोच रही थी कि। उसने पूछा"विल यू मैरी मी?"

मैं डर गईये सब सोचा नहीं था। ऐसे परिस्थिति में क्या कहना चाहिए पता नहीं था। । । । यहाँ से चली जाऊं। । । । ।'कितनी हिम्मत है। शर्म नहीं है' ये बोलूँ। । । । या कह दूँ। । । । तुम भी मुझे अच्छे लगते हो। । । । तुम्हारी यादों ने ठीक उस गुलमोहर की

खुशबु की तरह मुझे जकड़ लिया है। मैंने सिर झुका लिया। दरवाजे की ओट से समय झांककर मुस्कुरा रहा था।

मैं अपने आप को तैयार कर रही थी। मगर उसका बेपरवा ढ़ंग। । । । मेरे हाथ से ग्लास को लेकर टेबल पर रखा और "चलो डान्स करते हैं" । । । अरे!मेरी इच्छा अनिच्छा का कोई मोल नहीं। । । सब कुछ उसके मर्जी से होगा क्या? जैसे पृथ्वी। सूर्य। ग्रह। नक्षत्र सब उस की इच्छा से है। । । कल नहीं रहेंगे तो वो भी उसकी इच्छा से। मेरे बारे में क्या जानता है वह। । । । नहीं। मैं उसके इच्छा की परिधि में नहीं हूँ। । । । मेरा अपना अस्तित्व है। । । । ख़ाली सोच ही रही थी कि सम्बित ने आपने ओर खींच लिया मुझे। चिपक गई उसके छाती में। फंस गईं उसकी बलिष्ठ बाहों में।विवश शरीर। । । लाचार आत्मा। । । । क्लांत मन। हार रहा था अभिमान। । । । आँखे बंद कर ली।खो जाऊं। । । खुद को हार जाऊं। । । उफ़। ये कैसा मृदु। मधुर द्वंदाक्षण भर में आकर्षण तो क्षण भर में अभिमान। । । । उसके शरीर की ऊष्मा। महक मेरी श्वास के साथ घुल रही थी। गुलमोहर की खुशबु को लेकर बनी मेरी सपनों के झूले में झूल रहा था मेरा कुंवारा मन।एक अलग अनुभव को महसूस कर रही थी कि। उसका स्वर। । ।

"इसे फ्रेंच किस। । । । । । । "

अचानक अंतर्मन एक चाबुक पकड़ कर खड़ा हो गया। अपनी भीतर की सारी शक्ति को इकट्ठा कर जोर से उसे धक्का दिया।उसका ऐसा बर्ताव बिल्कुल स्वीकार किया नहीं जा सकता है। फिर उसका वो शब्द (फ्रेंच किस)। क्या समझा उसने मुझे। । । । । खुद के उपर भी ग़ुस्सा आ रहा था। इतनी कमजोर कैसे हो गई! मेरे पाँव लड़खड़ाने लगे। पता नहीं कैसा एक अजीब सी नशा आपने आगोश में जकड़ रहा था मुझे।

तुफान की तरह बाहर निकल आई। पीछे मुडकर नहीं देखा। । । न कभी देखुंगी। । । । अपने आप से वादा किया।

जल्दी जल्दी चल रही थी। । । दिल जोर

जोर से धड़क रहा था।।। कोई तो पीछा कर रहा है।।।। डर लग रहा है।।।।। आठ तो बज गया होगा।।।। नहीं डरना नहीं।।।। मुड़ कर देखा तो।।। मेरी परछाई।।।। जान में जान आई।

"टैक्सी" मैंने आवाज़ दी।

टैक्सी आई।।।।। नहीं आई।।।। पता नहीं।।। ऐसा लगा मानों ड्राइवर ने दरवाजा खोला।।।। मैं बैठ गई और।।।।। दोनों बाजु में दौड़ रही थी दुकानें। कुछ छोटे छोटे बस स्टॉप और सुनसान सड़क।।। मैं और मेरी परछाईपहुँच गई होस्टल के सामने।चौकीदार सो रहा था। आहिस्ता गेट खोल कर अंदर कमरे में आ गई।बिस्तर पर पर्स रख लेट गई।दो तीन घंटा पहले क्या क्या घटा था सोचने लगी। वहां जाना नहीं चाहिए था। नहीं जाती तो इतना अपमानित नहीं महसूस करती।अरे! मैंने टैक्सी को पैसे दिए न।।।।।! नहीं।।।। नहीं दिए।।।।। ड्राइवर ने तो माँगा भी नहीं।।।।। गाड़ी में बैठी थी।।।।। शायद हाँ।।।।। शायद नहीं।।।।। गाड़ी की आवाज़ होती तो चौकीदार की नींद अवश्य खुल जाती।।।। तो क्या पूरा रास्ता मैं भाग कर आ गई।।।। है भगवान!ये मुझे क्या हो गया!

नींद उड़ गई थी। शरीर में थकान बिल्कुल नहीं था।खाना नहीं खाया था। फिर भी भुख नहीं थी! बस थोड़ी सी तो कोल्डड्रिंक्स।।।।।।। खाना खाया था क्या? कुछ याद नहीं आ रहा है।

छोड़ो ये सब फ़ालतू बातें।जो कुछ घटित हुआ है वह याद न आए तो बेहतर।अगले सत्र में सम्बित कहाँ होगा कालेज में जो चिंता करुं! पैकिंग शुरू कर दी। सुबह सुबह निकल जाऊंगी। गाँव जाना है।।।। मन में कई दिनों से दबी हुई खुशियों में उफ़ान आने लगा।

दो पहर बीत ने पहले घर पहुंच गई। अम्मा और बाऊ जी बहुत खुश थे।

"थक गई होगी। जा पहले नहा ले। मैं गर्म गर्म दाल भात परोसती हूँ। खा के सो जाना।"अम्मा बोली।

"क्यों आज कमर नहीं पकड़ लिया है।।।। सर में दर्द नहीं है।।। आज तो बूढ़ी के पाँव ज़मीं पर नहीं टिकती।।।। बेटी जो आ गई"। बाऊ जी अम्मा को चिढ़ा रहे थे।

"जाओ। तुम्हारे साथ बात करने के लिए टेइम् नहीं है" अम्मा अजीब सा मुँह बना कर रसोई में चली गई।

नहा कर खाना खाने के बाद सचमुच बहुत नींद आ रही थी। रात भर सोई नहीं थी। इसलिए। अपना छोटे से कमरे में सुकुन भी सुकुन से था और मुझे देखते ही अपने आगोश में ले लिया।पता ही नहीं चला में कब और कितनी देर तक सो रही थी।

कुछ अस्वाभाविक स्वर से नींद खुली तो सबेरा हो चुका था। ओहो। कल दोपहर से आज सुबह तक सोती रही। कैसे!कमरे से बाहर आई तो देखा गाँव के कुछ लोग घर में जमा है। क्या हुआ है? अम्मा को पूछने के लिए मुड़ कर देखा उसे तो।।।।। ऐसा लगा कि पूरी रात रोई है। उसका रोना जब अपनी सीमा पार कर गया तब कुछ थकान अम्मा के शरीर में घुल कर हिलकने की प्रक्रिया में बदल गए।मैले आँचल में आँखे पोंछ कर न जाने कौन से अदृश्य ईश्वर के सामने क्या क्या माँग रही थी। मैं कुछ समझ नहीं पा रही थी। माँस बिना। हड्डी को जकड़ रखा अम्मा की बूढ़ी चमड़ी में मुझे कैल्शियम। आयरन विटामिन की कमी दिखाई देती थी।मन व्याकुल हो उठा। मैं अम्मा के पास जा कर बैठ गई। "क्या हुआ है अम्मा?"

रो रो कर अधमरा हो चुके मुँह में एक सूखी हंसी का लेप लगाकर। वो बोली। "क्या होगा मुझे। कुछ नहीं!"

"फिर ये भीड़ क्यों।।।।।?"कुछ और भी सवाल मन में उमड़ रहे थे।उसे पूछने से पहले पीछे से किसी ने कंधे पर हाथ रखा। मुडकर देखा तो ताऊजी थे। मैंने पाँव छुएं तो उन्होंने माथे पर हाथ रख कर पूछा। "तू ठीक है न?"

"जी। बड़ेपापा। मैं ठीक हूं। मगर ये लोग ऐसे मेरे दरवाजे के सामने क्यों खड़े हो कर झांक रहें हैं?"

"अरे। नहीं बेटा। कुछ मत सोच।गाँव के लोग हैं। भीड़ जमाना तो उनके आदत है।तु एक काम कर। नहा धोकर थोड़े फूल ले आ। मंदिर चलेंगे।" ताऊजी की इन बातों ने मुझे दुसरे दिनों में पहूँचा दिया। बचपन से मतलब जब से होश संभाला है। याद है मुझे। रोज़ ताऊजी के ऊँगली पकड़ कर मंदिर जाती थी।जाते वक्त उनसे न जाने कितने कहानियाँ सुनती थी।रावण जन्म। सीता माता की अग्नि कुंड में प्रवेश। द्रौपदी के पाँच पति होने के कारण। ख़ाली यह कहानी नहीं इसके पीछे के गूढ़ रहस्य। तथ्य ताऊ जी बताते थे।शायद इसलिए घटनाओं के पीछ छुपे कारणों को ढूंढना मेरी आदत बन चुकी थी। मंदिर में प्रवेश करने से पहले ताऊजी पास के हैंडपंप से पाँव धोते थे और मैं भी।पाँव धोते धोते वो ज़ोर ज़ोर से मंत्र पढ़ते थे। मैं डब डब आँखों से उन्हें देखती और मंत्र को समझने कि कोशिश करती थी। मंदिर में प्रवेश करते ही ताऊजी "शम्भु...। भोले शम्भू" चिल्लाते थे। मैं भी ठीक वैसे ही करती थी। वो मेरी भक्ति देखकू खुश हो जाते थे और मैं अपनी आवाज की गूंज सुनकर।

मंदिर के रास्ते में हम दोनों चल रहे थे। मुझे लगा वो कुछ बोलना या पूछना चाहते हैं। शायद शब्दों को तराश रहे थे। चलते वक्त कुछ लोग मुझे घूर भी रहे थे। जैसे मैं कोई चिड़ियाघर से आई हूँ। मुझे अजीब सा लग रहा था।क्या किसी ने संबित के घर से भाग कर आते हुए मुझे देख तो नहीं लिया?

"होस्टल का खाना पीना कैसा है? मैं समझ गई ताऊजी किसी असमंजस में है।

"बडेपापा। आप कुछ और कहना चाहते हैं न ? सीधे सीधे बोलिए प्लीज़।" मैंने कहा।

"कल इतनी जल्दी क्यों सो गई थी? क्या उसके पहले दिन तु नहीं सोई थी" उन्होंने पूछा।

" मेरी धड़कने तेज होने लगी। क्या पता है बडेपापा को। गाँव वालों को! अपनी इस अवस्था को काबू में रख कर कहा। "सही

कहा आपने। गाँव आने की खुशी में पिछले दो दिनों से सोई नहीं थी।उपर से बस में आई। खूब थक गई थी। शायद इसलिए दोपहर से जो सोई। आज सुबह को आँख खुली। मगर क्या हुआ है? मैं आश्चर्य से पूछ रही थी। बढ़ती हुए उत्कंठा और उद्वेग को धारण करने की शक्ति मेरे पास नहीं थी। चैत्र मास के आखिरी दिन। सुबह दस बजे से ही मिट्टी में नंगे पाँव रखना मुश्किल हो रहा था। उसके उपर पवन भी मुँह फूलाए कहीं और बैठा था जो फूल पत्ते भी हिल नहीं रहे थे।समय। पवन और ताऊ जी की शिथिलता मुझे एक भारीपन का एहसास करा रही थी।

ताऊजी ने हैंडपंप से पाँव धोए...मैंने भी। वो मंदिर में प्रवेश किए...। मैंने भी। वो शम्भू...शम्भू... उच्चारण किए मैंने भी। उन्होंने साष्टांग प्रणाम किए...।। मैंने भी। फिर मंदिर से बाहर निकल कर। मंदिर के परिसर में स्थित एक मंडप में बैठ गए।आँखे बंद कर कुछ सोचने लगे।शायद शब्दों को टटोल रहे थे। कुछ क्षण बीत गए। स्पष्ट और सीधा शब्दों में पूछा। "कल रात लगभग ग्यारह बजे तु नींद में तो थी। फिर भी कुछ मांग रही थी खाने के लिए।आँखे बड़ी बड़ी थी। अपने ही बालों को खुद ही खींच रही थी। मैंने पूछा क्या चाहिए। तो तु बोली "म्याँउ"। कुछ समझ में नहीं आ रहा है।"

ताऊजी के बातों ने मुझे डरा दिया था। तभी मंदिर के भीतर कोई हाथ वाली घंटी बजा रहा था। मुझे लगा कि मैं एक ठोस पीतल गोल प्लेट की तरह हूँ। जिसको एक लकड़ी से मारकर बजाया जा रहा है।रात को कितना कुछ घट गया है। सुबह तो मुझे कुछ भी याद नहीं है। कुछ देर बाद हम घर वापस जा रहे थे। मुझे चारों तरफ अँधेरा दिखाई दे रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे सामने टेढ़ा मेढा रास्ता। मुझे बिच्छू बन डसने को तैयार है। मगर मेरे पाँव तो अप्रतिहत। रुकना नहीं सिर्फ आगे बढ़ना जानती है।

घर पहुँच कर अपने कमरे के तरफ़ जाते समय। अम्मा की धीमी आवाज सुनाई दी।"इसे ले जाओ। रघुनाथ को दे देना...।। वज़न बराबर देखना। कहीं ठग न ले वो। पूजा करना जरूरी है नहीं तो अम्मा की दी हुई सोने कि चेन कौन बेचता!"अम्मा की नम आँखों से उसके शब्द भी गीले हो गए थे। ऐसी कौनसी पूजा है जिसके लिए नानी की दी हुई चेन बेचने की जरूरत आन पड़ी।

दोपहर बीता। शाम भी।रात को अम्मा ने बिना कुछ बोले। चुपचाप खाना बनाया। परोस दिया। सब के खाने के बाद आंगन में हैंडपंप के पास बैठ बर्तन धोने लगी। अन्य दिन होता तो मुझे डांटती। "जितना भी पढ़लो। घर का काम करना चाहिए।औरत जात ...।। कल को ससुराल में सब बोलेंगे। माँ ने कुछ नहीं सिखाया।"

पिताजी बोलते। मेरी बेटी तुम्हारी तरह गोबर से घर लिपापोती थोड़ी ही करेगी। वो तो डाक्टर बनेगी। महलों में रहेगी।"

आज कोई कुछ नहीं बोल रहा है। मैं भी खाना खाकर सोने के लिए अपने कमरें में चली गई।

कमरें में पड़े पड़े खाली करवटें बदल रही थी। नींद तो कहीं उड़ गई थी जैसे।अम्मा नानी की दी हुई चेन क्यों बेचना चाहती थी? क्या हुआ है?कई प्रश्न। कितने चिंता मन में उमड़ रही थी।

अचानक पूरे शरीर में कंपन होने लगी। चमड़े के भीतर मांसपेशीयों ने जैसे तांडव शुरु कर दिया। मुझे कोई अपने वश में कर रहा था।मैं छटपटा कर खुद को दो अनजाने हाथों से मुक्त करना चाहती थी। भीषण कष्ट...। "अम्मा...।। चिल्ला रही थी। मगर आवाज को कोई दबारहा था। और कोशिश की। मुँह से अम्मा तो नहीं निकला। एक अजीब सी शब्द। "गाँ। । गँ..."। निकलने लगा।भाग कर आए बाऊ जी। साथ में चार लोग भी।उन लोगों ने मुझे पकड़ लिया। हाथ पाँव बाँधकर आँगन में ले आए। मुक्त होने के लिए मेरा संघर्ष चालु था।आँगन में रंगोली। उसमें कुछ पूजा के सामन के साथ नींबू। मिर्ची और एक झाड़ू भी था।उन लोगों ने मुझे आँगन में बिठा दिया। सामने ओझा पितवास (तंत्र-मंत्र से भूत-प्रेत झाड़ने वाला व्यक्ति) खड़ा था।माथे में सिंदूर। गले में माला और देह में राख। मुझे देखते ही बोला। " कौन है तु? लड़की को छोड़ दे। चला जा...। " ऐसी दृश्य मेरे लिए नया नहीं था। मगर मेरे साथ ये घटेगा सोचा नहीं था। मैं चुप रही।उसको खूब गुस्सा आया।धूनी में कुछ लालमिर्ची को डाल कर मुझे झाड़ू से मारने लगा। मेरी तकलिफ और बढ़ गई। मैं उसे रोकना चाहती थी। पर मेरे जुबान मेरे बस में नहीं थी। मैं कुछ तो बोल रही थी...। पर क्या...शायद 'म्याऊं...। म्याऊं। । '। कैसे ...क्यों...। ओझा पितबास ने पूछा "बिल्ली मारकर छुपायी थी क्या। इसलिए प्रेत योनि में घूम रही है?छोड़ दे हमारी लड़की को। नहीं तो ऐसा मज़ा चखाऊंगा कि...।। "फिर से झाड़ू मारने लगा।

मुझे पता चलता था कि मेरे साथ क्या हो रहा है। मगर कुछ चीजें मेरी अख्तियार में नहीं थी। मैं ऐसा क्यों कर रही थी वो भी समझ नहीं पाई।रह रह कर सम्बित की दी हुई दवाईयां याद आ रही थी।आधी रात तक ऐसे सिलसिला चलता रहा। आखिरकार उसके एक जबरदस्त झाड़ू के प्रहार से मैं बेहोश हो गई।

सुबह को आँख खुली तो अपने कमरे में थी। कुछ कुछ बातें याद आ रही थी। समझ में आई थी कि दवाई के नाम से सम्बित ने मुझे क्या दिया होगा। शायद उसकी आदत से उसी वक्त में अपनी मानसिक संतुलन खो बैठी थी। होस्टल में तो मेडिसिन खाकर सो जाती थी। पर यहाँ...।। ।सम्बित के उपर खूब गुस्सा आया।कमरें से बाहर निकली तो देखा कि ओझा अपनी तारीफ़ करने में लगा हुआ है। "अरे। अच्छे अच्छे के छुट्टी किया है। ये क्या चिज़ है। जल्दी पूजा कर सही किया आप लोगों ने। नहीं तो देर हो जाती।" सचमुच देर तो हुई थी। काश! मेरी समझ में पहले आ जाता तो नानी की दी हुई चेन बेचने की जरूरत नहीं होती।पर कल रात मैं "म्याऊं ... म्याऊं" क्यों बोल रही थी। जो भी हो अब मुझे भी ख़ुद को संभालना होगा।

*** *** ***

क्री.....क्रीं। फोन की आवाज़ से मैं

तंद्रावस्था से बाहर निकली। रिसीवर उठाया तो लाइन में अम्मा थी।

"क्या हुआ? थक गई है। काम ज्यादा है?"

"हाँ। अम्मा। कुछ बताना है तो जल्दी बताओ। ओ। टी में जाना है।"

" और क्या बात करनी है। वही बात। क्या ज़बाब दूँ उन लोगों को?तु तो कुछ बोलती नहीं। इतना अच्छा रिस्ता हाथ से निकल न जाए कहीं...।"

"अच्छा। ठीक है।' हाँ' बोल दे।"

"सच बोल रही है...मान गई तू...। बाद में 'ना' तो नहीं बोलेगी न!"

"नहीं बोलुगीं"

"अजी। सुनते हो...। बिटीया ने 'हाँ' कह दी।सुन तु जल्दी छुट्टी लेकर घर आने कि कोशिश कर।"इतना बोलते ही आम्मा ने तुरंत फ़ोन कट दिया। मुझे पता है उसके पाँव आज ज़मीन पर नहीं होंगे।

'हाँ। ' कह दिया। कैसे हिम्मत जुटाई। मुझे पता नहीं। अभी तक तो सम्बित के अनजाने आकर्षण में खुद को जकड़ी हुई पा रही थी। बहुत कुछ खो देने का अफ़सोस। शायद थोड़ी सी प्रतीक्षा। उस से खुद कभी भी न मिलने का निर्णय लेने के बाद भी। उसके 'साथ' की एक अहेतुक इच्छा...।। ये सब मैं छटपटाती मैं कैसे 'हाँ' कह दी। ... क्या अब सम्बित के पास अपने आप को न पाने के अहसास को महसूस कर रही थी।उस के साथ जितना आकर्षण था उतना बिकर्षण भी।अब उस से मिलने का वक्त आ गया था। शायद आखिरी बार।

उस के कमरे के तरफ़ चल रही थी। अचानक वही गुलमोहर की खुशबु हवा में तैर रहे थे।आँखो के सामने सम्बित ...उस दिन वो पार्टी...। टैबलेट का प्रभाव...। ओझा का झाड़ू से मारना...नानी की दी हुई चेन का बिक जाना...।। ओहो!

अम्मा का कितने अदृश्य ईश्वर के सामने हाथ जोड़ना...। ओझा की पूजा। ठीक समय में मेरा खुद को संभाल लेना -पता नहीं। कौनसा नुस्खा काम किया था।

ये कोरिडोर कितना लंबा है!

सोच रही थी। चल रही थी।उस के कमरे के सामने पाँव रुक गया। अंदर जाऊं कि न जाऊं। पेंडुलम के जैसा मन में 'हाँ' 'ना' झूल रहा था।तब भी नर्स ने दरवाजा खोला और मैं उसके साथ अंदर आ गई। बिस्तर पर लेटे हुए शरीर को पहचानने की कोशिश कर रही थी। क्या ये वही सम्बित है जिसे मैं कॉलेज में मिली थी। मैं सिर्फ उसको देख रही थी। उसके दुर्बल शरीर में से नसें सर उठाकर हँस रही थी।उस ने नर्स को बाहर जाने की और मुझे अपने पास आने के लिए इशारा किया। मैं उसके बिस्तर पर बैठ गई।वो कुछ बोलने की कोशिश कर रहा था। मैं सुनने के लिए झुकी।

"कहाँ चली गई थी!उस दिन इतना डर गई जो एकबार पिछे मुडकर भी नहीं देखा। क्या सचमुच तूने मुझे जानवर समझा?" उसका स्वर अस्पष्ट था

मैं चुप रही।

"डाँट ने के लिए या झगड़ा करने के लिए ही सही एक बार फोन तो करती!"

"तूम भी तो माफी मांगने के लिए कॉलेज मिलने आ सकते थे।" मैंने कहा

"सच कहुँ। पहले तो कुछ दिन गुस्से में था कि तु ऐसे उस दिन क्यों चली गई।जब गुस्सा शांत हुआ तो मिलने के हिम्मत नहीं जुटा पाया।"

"पता है कि तूम हिम्मत क्यों नहीं जुटा सके।सम्बित तुम ने मुझे ड्रग्स दिये थे। ऐसे कैसे कर सकते हो?" मेरे स्वर में आक्रोश था।

उसने अपने होंठों पर झांकती। फीकी हँसी को रोक कर। कहा "एक तो तू काली फ़िर उसके उपर इतनी घमंडी...।।"वो कुछ बोल रहा था कि मैं उसकी बात काट कर बोली। "मैं काली नहीं साँवली हूँ। और सुंदर भी। और घमंडी क्यों न हूँ! पढ़ाई में अच्छी थी।मेरीट में मेडिकल कॉलेज में एडमिशन मिला था।जो भी है मेरे पास। ख़ुद की मेहनत से है। "

"यही एडमंट् मुझे तेरी तरफ़ खिंचता था। मैं जानता था तुझे पाना इतना आसान नहीं है। इसलिए पहले तेरी दिमाग को कंट्रोल करना चाहता था।माना मैं ग़लत था। पर तू मेरी जिद बन गई थी। तुझे मेफेड्रोन दिया था।उस दिन तुने पूछा था। क्या मिलाया ड्रिंक्स में। मैंने 'म्याऊं" कहा था।तु बुध्दू समझी नहीं।"

"मगर बाद में तो जान गई थी। आश्चर्य कि बात। इतना ड्रग्स लेने के बाद तुम्हें ये सब अभी तक याद कैसे हैं?"

"सिर्फ तू और तेरी ही बातें याद है। बाकी कुछ नहीं। "

"ऐसा क्यों किया?"मुझे अपने अंदर बहुत कुछ टूटने की शब्द सुनाई दे रहा था।

"तु नहीं थी मेरे पास। पता है। तुझे मिलने से पहले तु नहीं थी। मिलने के बाद भी तु नहीं थी। ईश्वर ने कैसी सुक्ष्म तार से तुझे मुझे जोड़ा था। वही जाने। तेरे जाने के बाद तो मेरे दुःखों में रोज गुणन होता था।"

" ये कैसा दुःख जो खुद को संभाल नहीं पाए?"

" पता है अँधेरे में अपने आप को अच्छे से हम देख सकते हैं। अगर स्विच ऑन कर दो तो एक मास्क पहनना पड़ता है। डुप्लीकेट का।वो मुझसे नहीं हुआ। तो मैंने अँधेरे को चुन लिया।"

"इसे आत्महत्या कहते हैं।"

"तु जो समझे। अब ये शरीर मेरे वश में नहीं। मैं ऐसे बंधन में नहीं रह सकता। अब मुझे शांति चाहिए। नींद चाहिए।जब आंख खुलेगी फिर एक नया सबेरा होगा। नए फूल खिलेंगे। रंग बिरंगी तितलियाँ होंगे।उस मुहुर्त में पुल्कित पवन नाचने लगेगा। तब मैं आऊंगा गुलमोहर की खुशबु बन कर। तुझे छूने के लिए।"

गुलमोहर की खुशबु मुझे पसंद है । ये कैसे पता उसे? ओहो रोमा ...बदमाश लड़की।"तुम्हारे ऐसी बातों से मैं सहमत नहीं हूँ।"मैने फिर से उसकी बात को काटा।

"पता है! तुझे समझाने के लिए न मेरे पास शक्ति है न समय।अब जा यहाँ से।"मैं चुपचाप उसके कमरे से बाहर आ गई।

कमरे के बाहर सम्बित की माँ बैंठी थी। मुझे देख कर खड़ी हो गई। उनकी आँखें गुहार लगा रही थी। 'बचालो मेरे बेटे को'। क्या करूं ? मंदिर में जाऊं। उस ओझा को बुलाऊं। मगर अब वक्त कहाँ है? एक डाक्टर भी कितना असहाय हो सकता है!

सम्बित के पास मैं नहीं थी...न हूँ...न रहूंगी...।एक कंगाल होने की अवस्था को महसूस कर मेरे हृदय से दीर्घ निश्वास शरीर को झिंझोडे बाहर निकल आई। कोरिडोर से चलते चलते पीछे मुडकर देखा। मेरी आँसुओं में भिगा मुहूर्त सर झुकाए खड़ा था सम्बित के माँ की पास।

***

हम कलमकार हैं-हम कलमकार हैं!

गीत जीवन के लिखते रहें रात-दिन।
हम कलमकार हैं-हम कलमकार हैं।
हमसे उम्मीद दुनिया की जाए न छिन।
हम सृजनकार हैं-हम सृजनकार हैं।

लाख पत्ते दरख़्तों के मुरझा गए।
हम नई कोपलों की सदा आस दें।
धुन्ध में रोशनी बस दिखाया करें।
हम मददगार हैं-हम मददगार हैं।
हम कलमकार हैं.....

तारा वीणा का कोई टूटे नहीं।
साथी अपना कोई पथ पे छूटे नहीं।
वेदना को गले से लगाते रहें।
हम मिलनसार हैं-हम मिलनसार हैं।
हम कलमकार हैं.....

भाव जिनके न अब तक हैं स्वर पा सके।
स्वप्न जिनके न अब तक हैं घर पा सके।
नीड़ उनके लिए हम बुनें रात-दिन।
हम सृजनहार हैं-हम सृजनहार हैं।
हम कलमकार हैं.....

फिर से पूँजी कभी श्रम को लूटे नहीं।
भाग्य गेंहू का अब और फूटे नहीं।
नींव विचलित न होगी कँगूरे से अब।
हम खबरदार हैं-हम खबरदार हैं।
हम कलमकार हैं.....

हम हैं साधक रहें साधना में ही रत।
दुर्गुणों से रहेंगे सतत हम विरत।
दण्ड हरगिज़ ज़माने में हैं हम नहीं।
हम पुरस्कार हैं-हम पुरस्कार हैं।
हम कलमकार हैं.....

□□

डॉ. शरद श्रीवास्तव शरद

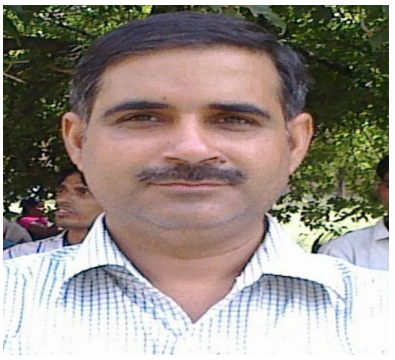

अनगिन नदियों के मिलने से एक समुन्दर बनता है |
इक-इक ईंटें जब जुड़ती हैं, तब जाकर घर बनता है |

यूं तो कितने आते हैं, जीते हैं, फिर मर जाते हैं;
विष का प्याला पीने वाला ही तो शंकर बनता है |

पानी से गलकर बह जाती इतनी ज्यादा कोमल है,
कुछ सदियाँ लगती हैं इस मिट्टी से पत्थर बनता है |

इतने ज्यादा युद्ध हुए सदियों से लोग मरा करते,
लेकिन दुःख की बात यही है अब भी बंकर बनता है |

बनती और बिगड़ती हालत होता है यह जीवन में,
लेकिन उसका क्या कहना जो फिर से उठकर बनता है !

औरों को जो दुःख देते हैं, साधारण इन्सान यहाँ;
आज हँसाता सबको कोई,जब वो जोकर बनता है |

जीवन में सबकुछ अच्छा हो, हो सकता है ये कैसे;
सुख-दुःख का जब मेल 'अनघ' हो जीवन सुन्दर बनता है |

- प्रसन्न वदन चतुर्वेदी 'अनघ'

प्रकाश-स्तम्भ की भांति हैं शिक्षक

शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) पर विशेष

आकांक्षा यादव

भारतीय संस्कृति का एक सूत्र वाक्य है- 'तमसो मा ज्योतिर्गमय।' अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने की इस प्रक्रिया में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान है। भारतीय परम्परा में शिक्षा को शरीर। मन और आत्मा के विकास द्वारा मुक्ति का साधन माना गया है। शिक्षा मानव को उस सोपान पर ले जाती है जहाँ वह अपने समग्र व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का आंरभ से ही उच्च स्थान रहा है। प्राचीन काल से ही आचार्य देवो भवः का बोध-वाक्य प्रचलित है।भारत में गुरु-शिष्य की लम्बी परंपरा रही है। बहुत सारे कवियों। गद्यकारों ने कितने ही पन्ने गुरु की महिमा में रंग डाले हैं।

गुरु गोविंद दोउ खड़े काके लागू पाय
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।

कबीरदास द्वारा लिखी गई उक्त पंक्तियाँ जीवन में गुरु के महत्त्व को वर्णित करने के लिए काफी हैं। गुरुओं की महिमा का वृत्तांत तमाम ग्रंथों में भी मिलता है। जीवन में माता -पिता का स्थान कभी कोई नहीं ले सकता।

आकांक्षा यादव,
पोस्टमास्टर जनरल आवास, वाराणसी

क्योंकि वे ही हमें इस खूबसूरत दुनिया में लाते हैं। उनका ऋण हम किसी भी रूप में उतार नहीं सकते। लेकिन जिस समाज में रहना है। उसके योग्य हमें शिक्षक ही बनाते हैं। यद्यपि परिवार को बच्चे के प्रारंभिक विद्यालय का दर्जा दिया जाता है। लेकिन जीने का असली सलीका उसे शिक्षक ही सिखाता है। समाज के शिल्पकार कहे जाने वाले शिक्षकों का महत्त्व यहीं समाप्त नहीं होता। क्योंकि वह न सिर्फ विद्यार्थी को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। बल्कि उसके सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है।

गुरु-शिष्य परंपरा भारत की संस्कृति का एक अहम और पवित्र हिस्सा है। जिसके कई स्वर्णिम उदाहरण इतिहास में दर्ज हैं। कई ऋषि-मुनियों ने अपने गुरुओं से तपस्या की शिक्षा को पाकर जीवन को सार्थक बनाया। प्राचीनकाल में राजकुमार भी गुरूकुल में ही जाकर शिक्षा ग्रहण करते थे और विद्यार्जन के साथ-साथ गुरु की सेवा भी करते थे। राम-

विश्वामित्र, कृष्ण-संदीपनी, अर्जुन-द्रोणाचार्य से लेकर चंद्रगुप्त मौर्य-चाणक्य एवं विवेकानंद -रामकृष्ण परमहंस तक शिष्य-गुरू की एक आदर्श एवं दीर्घ परम्परा रही है। उस एकलव्य को भला कौन भूल सकता है। जिसने द्रोणाचार्य की मूर्ति स्थापित कर धनुर्विद्या सीखी और गुरुदक्षिणा के रूप में द्रोणाचार्य ने उससे उसके हाथ का अंगूठा ही माँग लिया था। श्री राम और लक्ष्मण ने महर्षि विश्वामित्र। तो श्री कृष्ण ने गुरु संदीपनी के आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण की और उसी की बदौलत समाज को आतातायियों से मुक्त भी किया। गुरुवर द्रोणाचार्य ने पांडव-पुत्रों विशेषकर अर्जुन को जो शिक्षा दी। उसी की बदौलत महाभारत में पांडव विजयी हुए। द्रोणाचार्य स्वयं कौरवों की तरफ से लड़े पर कौरवों को विजय नहीं दिला सके क्योंकि उन्होंने जो शिक्षा पांडवों को दी थी। वह उन पर भारी साबित हुई। गुरु के आश्रम से आरम्भ हुई कृष्ण-सुदामा की मित्रता उन मूल्यों की ही देन थी। जिसने उन्हें अमीरी-गरीबी की खाई मिटाकर एक ऐसे धरातल पर खड़ा किया जिसकी नजीर आज भी दी जाती है। विश्व-विजेता सिकंदर के गुरु अरस्तू को भला कौन भुला सकता है। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने तो अपने पुत्र की शिक्षिका को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि उसकी शिक्षा में उनका पद आड़े नहीं आना चाहिए। उन्होंने शिक्षिका से अपने पुत्र को सभी शिक्षाएं देने का अनुरोध किया जो उसे एक अच्छा व्यक्ति बनाने में सहायता करती हों।

वस्तुतः शिक्षक उस प्रकाश-स्तम्भ की भांति है। जो न सिर्फ लोगों को शिक्षा देता है बल्कि समाज में चरित्र और मूल्यों की भी स्थापना करता है। शिक्षा का रूप चाहे जो भी हो पर उसके सम्यक अनुपालन के लिए शिक्षक का होना निहायत जरूरी है। शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं बल्कि चरित्र विकास। अनुशासन। संयम और तमाम सद्गुणों के साथ अपने को अप-टू-डेट रखने का माध्यम भी है। शिक्षा मानव जीवन को परिष्कृत करने का सशक्त माध्यम है। कहते हैं बच्चे की प्रथम शिक्षक माँ होती है। पर औपचारिक शिक्षा उसे शिक्षक के माध्यम से ही मिलती है। प्रदत शिक्षा का स्तर ही व्यक्ति को समाज में तदनुरूप स्थान और सम्मान दिलाता है। शिक्षा सिर्फ अक्षर-ज्ञान या डिग्रियों का पर्याय नहीं हो सकती बल्कि एक अच्छा शिक्षक अपने विद्यार्थियों का दिलो-दिमाग भी चुस्त-दुरुस्त बनाकर उसे वृहद आयाम देता है। शिक्षक का उद्देश्य पूरे समाज को शिक्षित करना है। शिक्षा एकांगी नहीं होती बल्कि व्यापक आयामों को समेटे होती है।

आजादी के बाद इस गुरु-शिष्य की दीर्घ परम्परा में तमाम परिवर्तन आये। 1962 में जब डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन देश के राष्ट्रपति के रूप में पदासीन हुए तो उनके चाहने वालों ने उनके जन्मदिन को "शिक्षक दिवस" के रूप में मनाने की इच्छा जाहिर की। डॉ0 राधाकृष्णन ने कहा कि- "मेरे जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने के निश्चय से मैं अपने को काफी गौरवान्वित महसूस करूँगा।" तब से लेकर हर 5 सितम्बर को "शिक्षक दिवस" के रूप में मनाया जाता है। डॉ। सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षकीय आदर्श को न सिर्फ भारत में अपितु वैश्विक स्तर पर स्थापित किया। उन्होंने न सिर्फ शिक्षकीय पद की गरिमा बढ़ायी। बल्कि उपराष्ट्रपति एवं राष्ट्रपति के रूप में भी भारत को अपना नेतृत्व प्रदान किया। अपने ज्ञान को दूसरों में बाँटने की अद्भुत प्रतिभा उनमें निहित थी तथा इसी उत्कृष्ट कला के कारण वे एक आदर्श शिक्षक के रूप में विख्यात हुए। डॉ। राधाकृष्णन एक महान शिक्षाविद थे। वे वर्ष 1916 में मद्रास रेजीडेंसी कॉलेज में दर्शन शास्त्र के सहायक प्राध्यापक नियुक्त हुए। उन्होंने शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् विश्व के महत्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थानों में व्याख्यान दिया। वे दर्शनशास्त्र के प्रख्यात विद्वान थे। उन्होंने अपने लेखों और भाषणों के द्वारा विश्व को भारतीय दर्शन शास्त्र से परिचित कराया। पश्चिम देशों में एक आदर्श दार्शनिक के रूप में उन्हें ख्याति प्राप्त थी। वे 1931 से 1936 तक वाल्टेयर विश्वविद्यालय आंध्रप्रदेश के वाइस चांसलर रहे। 1936 से 1952 तक वे

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रहे। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय अंतर्गत आने वाले जार्ज पंचम कॉलेज में भी सेवाएं दीं। डॉ। राधाकृष्णन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के चांसलर रहे। वर्ष 1940 में वे प्रथम भारतीय के रूप में ब्रिटिश अकादमी में चुने गए तथा 1948 में उन्होंने यूनेस्को में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। उन्हें भारत में संविधान निर्मात्री सभा का सदस्य बनाया गया। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण गैर राजनीतिज्ञ होते हुए देश की स्वतंत्रता के पश्चात् 1952 में वे भारत के पहले उपराष्ट्रपति बनाए गए। 1957 में वे दूसरी बार उप राष्ट्रपति चुने गए। उन्होंने अपने जीवनकाल में 150 से अधिक रचनाएं की। वे देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से विभूषित हुए।

निश्चिततः डॉ। राधाकृष्णन बहुआयामी प्रतिभा के धनी। सादगीपूर्ण जीवन शैली निर्वहनकर्ता तथा देश की संस्कृति का सम्मान करने वाले व्यक्ति थे। एक उत्कृष्ट शिक्षक। दार्शनिक। देशभक्त और निष्पक्ष एवं कुशल राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने राष्ट्र को अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दीं। वे उच्च पदों पर रहते हुए भी शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहे। डॉ। राधाकृष्णन ने शिक्षा को एक मिशन माना था और उनके मत में शिक्षक होने का हकदार वही है। जो लोगों से अधिक बुद्धिमान व विनम्र हो। अच्छे अध्यापन के साथ-साथ शिक्षक का अपने छात्रों से व्यवहार व स्नेह उसे योग्य शिक्षक बनाता है। मात्र शिक्षक होने से कोई योग्य नहीं हो जाता बल्कि यह गुण उसे अर्जित करना होता है। वे शिक्षा को सामाजिक बुराइयों के अंत करने का एक महत्वपूर्ण जरिया मानते थे। डॉ। राधाकृष्णन का मानना था कि व्यक्ति निर्माण एवं चरित्र निर्माण में शिक्षा का विशेष योगदान है। वैश्विक शान्ति। वैश्विक समृद्धि एवं वैश्विक सौहार्द में शिक्षा का महत्व अतिविशेष है। उनका मानना था कि शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे। बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे। उनके यह शब्द समाज में शिक्षकों की सही भूमिका को दिखाते हैं- ''शिक्षक का काम सिर्फ किताबी ज्ञान देना ही नहीं बल्कि सामाजिक परिस्थितियों से छात्र को परिचित कराना भी होता है।'' शिक्षा के व्यवसायीकरण के विरोधी डॉ0 राधाकृष्णन विद्यालयों को ज्ञान के शोध केंद्र। संस्कृति के तीर्थ एवं स्वतंत्रता के संवाहक मानते थे। यह उनका बड़प्पन ही था कि राष्ट्रपति बनने के बाद भी वे वेतन के मात्र चौथाई हिस्से से जीवनयापन कर समाज को राह दिखाते रहे।

वास्तव में देखा जाये तो शिक्षक उस माली के समान है। जो एक बगीचे को भिन्न -भिन्न रूप-रंग के फूलों से सजाता है। जो छात्रों को काँटों पर भी मुस्कुराकर चलने को प्रोत्साहित करता है। उन्हें जीने की वजह समझाता है। शिक्षक के लिए सभी छात्र समान होते हैं और वह सभी का कल्याण चाहता है। शिक्षक ही वह धुरी होता है। जो विद्यार्थी को सही-गलत व अच्छे-बुरे की पहचान करवाते हुए बच्चों की अंतर्निहित शक्तियों को विकसित करने की पृष्ठभूमि तैयार करता है। बच्चे तो कच्चे घड़े की भांति होते हैं। ऐसे में उन्हें जिस रूप में ढालो। वे ढल जाते हैं। वे स्कूल में जो सीखते हैं या जैसा उन्हें सिखाया जाता है। वे परिवार और समाज में वैसा ही व्यवहार करते हैं। उनकी मानसिकता भी कुछ वैसी ही बन जाती है। जैसा वह अपने आस-पास होता देखते हैं। ऐसे में शिक्षक प्रेरणा की फुहारों से बालक रूपी मन को सींचकर उनकी नींव को मजबूत करता है तथा उसके सर्वांगीण विकास के लिए उनका मार्ग प्रशस्त करता है। किताबी ज्ञान के साथ नैतिक मूल्यों व संस्कार रूपी शिक्षा के माध्यम से एक आदर्श शिक्षक ही शिष्य में अच्छे चरित्र का निर्माण करता है। तभी तो कहा गया है कि-

गुरुब्रह्म गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।

गुरूः साक्षात परब्रह्म। तस्मैं श्री गुरूवे नमः।।

पोस्टमास्टर जनरल आवास
नदेसर, कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी-221002

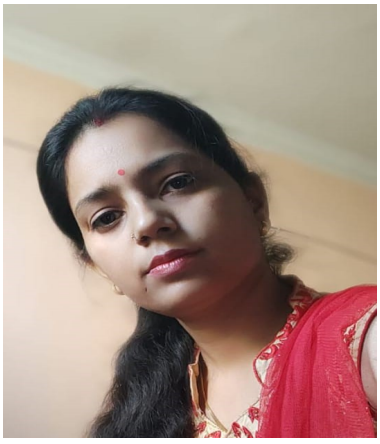

बात करते हुए उसने गांव कहा
और बहुत देर तक कुछ न कह सका
जैसे आंखों के सामने दिख गया सारा बचपन
वो बड़ा सा आंगन जिसके बीच में थी तुलसी
माँ संग करता था परिक्रमा और उसकी पुनरावृत्ति
महुआ की खुशबू से भीग जाती थी सुबह
बाग की हर डाली थी मां की गोद
जो झूला झुलाती सपने दिखाती
उसने कई बार चूमा था उसके साथ आकाश
ताल किनारे बैठ गाता था लोकगीत
और मंद मंद मुस्कराते हुए सुनता था
आम के बौर से बतियाती बयारों की बात
गुलमोहर के फूल सिखाते थे
विषमताओं में सुगम जीवन रहस्य
पगडंडी पर जब चलती थी प्रियतमा
उसकी लचक पर शरमा जाती थी रति
अब ये सारी बातें स्वप्न हो गई है
अब गांव में विकास के नाम पर कट रहे पेड़
आधुनिकता कम कर रही संवेदनशीलता
आजकल गांव अग्रसर हैं शहर बनने की ओर.....

अलंकृता राय

प्रभु चरणों में समर्पित

किसका कौन यहां पर होता
माया के बन्धन में जकड़ा,
मोह निशा में सोता ...
किसका कौन यहां पर होता

आया था निज कर्म निभाने,
बुनता फिर क्यों ताने बाने ,
साथ नहीं जब कोई तेरे ,
व्यर्थ सभी से रोता ....
किसका कौन यहां पर होता

झूठा सुख दुख ये माटी तन ,
खोज रहा किसको मूरख मन
रोज समेट रहा है कांकर
हरि भक्ती को खोता ....
किसका कौन यहां पर होता

जिसने सारी सृष्टि बनाई
देख रहा तेरी चतुराई
"कंचन" मणि माणिक सब पाया
अब क्यों नयन भिगोता ....
किसका कौन यहां पर होता
किसका कौन यहां पर होता

कंचन सिंह परिहार

रिश्ते

*****

ये जो रिश्ते हैं ना
ये झट से नहीं टूट जाते
इनके टूटने की भी
एक सतत प्रक्रिया होती है
पहले दीवारों पर जैसे दरारों की
अनुभूति होती है ना
ठीक वैसे ही दरकते हैं रिश्ते
हम सहानुभूति के
'व्हाइट सीमेंट'
का करते हैं उपयोग
भरती हैं दरारें कुछ दिनों के लिए
मगर सभी को नज़र आते हैं
वो दाग
हम संतुष्ट होते हैं पल भर को
चलो हमने दरकते छत को
ठीक कर लिया
अगली बार फिर से दरकते हैं 'अपने'
थोड़ी बड़ी हो जाती है दरार
हम बुलाते हैं राजमिस्त्री को
प्रयास करता है वह
फिर से दरार के हिस्से को गिराकर
खड़ी करता है एक नयी दीवार
सब कुछ अच्छा लगता है
कुछ दिनों तक
परंतु दरकते दीवार की आत्मा
दरकने को तड़पती रहती है
ईश्वर से मांगती हैं 'दीवारें'
'इच्छामृत्यु'
ईश्वर तथास्तु कहकर
मुक्त हो जाता है
तड़पते 'रिश्ते'की आत्मा
शांत हो जाती है
कोई नहीं मिल पाता
बस एक तड़प सी
सभी के दिल मे रह जाती है।
रिश्तों का 'भूगोल'
जब भी 'राजनीति' का शिकार होता है
रिश्ते 'इतिहास' बन जाते हैं।

अनिल कुमार मिश्र

"तक़लीफ़ें ज़िंदगी और लेखन को तराशती हैं" भूमिका द्विवेदी अश्क...

वर्ष 2023 प्रतिष्ठित और बहुचर्चित साहित्यकार भूमिका द्विवेदी अश्क की साहित्यिक यात्रा का दशक वर्ष है। साल 2013 में उनकी पहली कहानी प्रकाशित हुई थी। jiska ज़िक्र वार्ता में मौजूद है। सुखद संयोग ये भी है कि उनके "श्रीमती अश्क" यानी हिंदी और उर्दू साहित्य में मील के पत्थर अप्रतिम साहित्यकार श्री उपेंद्रनाथ अश्क जी की पुत्रवधू बनने का भी यही दसवाँ साल है। **इस विशिष्ट मौके पर हमारी पत्रिका के सम्पादन मण्डल की ओर से उन्हें अशेष बधाइयाँ। और इस विशेष प्रयोजन में उनकी ख़ास बातचीत प्रकाशित कर रहे हैं।** साक्षात्कारकर्ता हैं डॉ अरविंद कुमार :

डॉ अरविंद कुमार : भूमिका जी आपका हमारे मंच पर बहुत बहुत स्वागत है। सबसे पहले आपकी साहित्यिक यात्रा और विवाह के दशक वर्ष की अनंत बधाइयाँ स्वीकार करें। नीलाभ जी उपस्थित होते तो आज जश्न का दिन था। लेकिन आपने उनके बग़ैर भी एक बहुत ऊँचा मक़ाम बना लिया है। आज पूरे दस साल इस साहित्यिक दुनिया में गुज़ारने के बाद कैसा महसूस कर रहीं हैं? आप आज के दौर की एक बहुचर्चित लेखिका हैं। आपने बहुत कम समय में ही साहित्य की दुनिया में अपनी एक खास पहचान बना ली है। आपके पाठक जानना चाहेंगे कि जिस उम्र में लड़कियां अक्सर सपनो की रूमानी दुनिया में ही विचरती रहती है। आप साहित्य की दुनिया में कैसे आ गईं? और सिर्फ आई ही नहीं। इतनी सक्रिय कैसे हो गईं?

भूमिका द्विवेदी अश्क :
"उग रहा है दर-ओ-दीवार से सब्ज़ा 'ग़ालिब'
हम बयाबाँ में हैं और घर में बहार आई है"
आपको और सभी शुभेच्छु पाठकों को हृदय से आभार और कृतज्ञता सम्प्रेषित करती हूँ। स्वाभाविक है। अच्छा लग रहा है। नीलाभ जी होते तो और भी अच्छा लगता। मेरी किसी भी उपलब्धि की ख़ुशी मुझसे ज़्यादा उन्हें होती। विवाह भी। दरअसल उनकी इसी ख़ुशी। इसी समझ और इसी नेह के कारण किया था। तो उनकी इंतहाइ कमी महसूस कर रही हूं। और बहुत कुछ लिखना है। तो आज इस एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी का भी अहसास है मुझे। ईश्वर और नियति मैं कुछ हद तक मानती हूँ। भले ही वाम्पन्थी न मानें। तो नियति सबको एक सा जीवन नहीं देती। जो कुछ भी दिया गया है। वो निभा रही हूँ वही आगे भी निभाऊँगी। मेरी बाहरी दुनिया जितनी असीमित और व्यापक है। भीतर से उतनी ही सीमित और कागज़ कलम के इर्द गिर्द। तो रूमानी सपने। कठोर यथार्थ सबकुछ यहीं किताबों में समा जाता है। इसलिए ज़िम्मेदारियों को निभाने। सपनों से असल ज़िंदगी जीने का ज़रिया हमेशा कलम रहती है। वही रहेगी।

डॉ अरविंद कुमार : इतनी युवावस्था में

भूमिका नीलाभ अश्क

आपको "वरिष्ठ साहित्यकार" कहा जाने लगा है। जिसकी वजह एकमात्र आपका धीर गम्भीर और प्रचुर मात्रा का लेखन है। इस अल्पायु की इस दीर्घ यात्रा को कैसे देखती हैं आप?

भूमिका द्विवेदी अश्क : बहुत पहले पढ़ाई के दौरान बाण भट्ट की कादम्बरी में एक जगह पढ़ा था। जहाँ मुल्क़ के नरेश की प्रशसा में ये कहा जा रहा था कि। "युवक होने पर भी प्रौढ़ जीवन जीता था। प्रौढ़ निर्णय लेकर प्रजा का पालन करता था। " उस वक़्त बाणभट्ट की ये बात मुझे बहुत हैरान करती थी। अब समझ आता है उन्होंने ऐसा क्यूँ कहा होगा। वैसे मेरी निगाह से देखें तो अभी मेरी शुरुआत ही है। बहुत कुछ ज़ेहन में भरा हुआ है जिसे कलमबद्ध करना मेरी प्राथमिकता है। हाँ ये भी कहूँगी जितने उतार चढ़ाव मैंने इतनी कम उम्र में देखे। लोगों को कम मयस्सर होते हैं। इस दौर ने मुझे अथाह तजुर्बे दिये हैं। लेखन बहुत बहुत समृद्ध किया है।

डॉ अरविंद कुमार : वाह वाह वाह। क्या बात कहीं है। तीन चार साहित्य में आपकी मजबूत पकड़ है। संस्कृत। अंग्रेजी। उर्दू और जर्मन। तीन विषय से मास्टर्स है। एक में डिप्लोमा। इस दौर की सबसे ज़्यादा विदुषी लेखिका आप मानी जाती हैं। फिर भी हिंदी भाषा को ही लेखन के लिए आपने क्यूँ चुना?

भूमिका द्विवेदी अश्क : क्योंकि ये मेरी मातृ भाषा है। My mother tongue। मैं ख़ुद को सबसे बेहतर तरीके से इसी भाषा में व्यक्त कर सकती हूँ। जर्मन के सिवा तमिल और फ्रेंच भी सीखा था। अभ्यास छुटने के चलते वो भूल सी गई हूँ। अब हिंदी से ही कुछ आगे अध्ययन की सद्इच्छा भी है।

डॉ अरविंद कुमार : आप अपने बारे में विस्तार से बताइए। मसलन आपका जन्म कहां हुआ? बचपन कहां बीता? कैसा था आपका बचपन? परिवार का माहौल कैसा था? आपके आरंभिक शिक्षा कहां हुई? आपका दिल्ली आने का मकसद?

भूमिका द्विवेदी अश्क : मैं मूलतः पिछली कई पीढ़ियों से इलाहाबाद से हूँ। बचपन पहाड़ों और बंगलौर में भी बीता है।

बहुत विविधताओं से भरा हुआ और बेहद ख़्याली दुनिया जैसा बचपन देखा था मैंने। पारिवारिक माहौल सियासत। अदब। मुआशरे की चर्चाओं में डूबा हुआ मिला। संगम नगरी वैसे भी बहुत सियासी और अदबी रूप से सक्रिय रहने वाली जगह है। अदबी। सियासी और धार्मिक रूप से बहुत ज़्यादा समृद्ध है। "को कहि सकय प्रयाग प्रभाउ" आपने खुद भी महसूस किया होगा बाहर से आनेवाले भी ख़ुद को इल्लाबादी इल्लाबादी कहने लगते हैं। तो उसी इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शुरूआती पढ़ाई हुई। दिल्ली आगे की पढ़ाई के लिए ही आई थी। आज से बारह साल पहले। साल 2011-12 बैच में JNU में दाख़िला लेने। फिर यहीं दिल्ली विश्वविद्यालय से M. Phil की डिग्री मिली।

डॉ अरविंद कुमार : देश के तीन विश्वविद्यालयों में आपका अध्ययन। और दो दर्ज़न किताबों का लेखन। हज़ारों हजार पढ़ी गई किताबें। क्या सबसे अच्छा और क्या सबसे बुरा लगा ऐकेडमिक्स की दुनिया में। इलाहाबाद से दिल्ली आने पर तो आपको काफी समय लगा होगा। यहां की जिंदगी। यहां की संस्कृति में एडजस्ट करने में? इससे जुड़ी कुछ रोचक घटनाएं। यदि आप बताना चाहें।

भूमिका द्विवेदी अश्क : अरे क्यूँ नहीं। छुपाना क्या और क्यूँ भला। तीनों शानदार विश्वविद्यालय हैं। इलाहाबाद से चूँकि पहला कदम उठाना सीखा। पहली बार किसी इतनी विस्तृत दुनिया में दाख़िल हुई। और इलाहाबाद चूँकि होमटाउन भी है। माँ बाप समेत पूरा कुनबा वहीं जन्मा। पला बढ़ा। इसलिए इलाहाबाद से विशेष अनुराग है। दिल्ली विश्वविद्यालय ने पहली अंग्रेजी भाषा की किताब छापी। थे Last Truth। पहली बार प्रोफेशनल बनने का पाठ उसी ने पढ़ाया। उसकी अपनी जगह है। हालाँकि प्रोफेशनलिज़म मैं बिल्कुल सीख नहीं सकी। ये मेरी निजी नाक़ामयाबी है। अब अगर बात करें JNU की। तो घर से दूर वो जगह पहली पनाह। पहला आसरा। पहली अभिभावक बनी। सब पराये और अपने दोनों एक साथ थे वहाँ। बहुत उन्मुक्त। बहुत खुली। पूरी लोकतन्त्र की बस्ती है JNU। वो चार जानिब खुलते चार दरवाज़ों के भीतर एक अपना अलग शहर। अलग संविधान। अलग माहौल। अलहदा बेगानी बेहद दूर दराज़ बसी हुई एक दुनिया है वो। तीनों जगह से अपरिमित बेहिसाब चीज़े सीखीं हैं मैंने। एक से बढ़कर एक गुरुजन लगातार मिले तीनों विश्वविद्यालयों में। I love all the institutions similarly. I have been connected with।

रोचक घटनाएं इलाहाबाद की ज़िंदगी में हर लम्हा घटती है। न भी घटे। तो हम लोग उसे रोचक बना लेते हैं। अनेकानेक हैं। कितनी गिनाऊँ। कितनी सुनाऊँ। किताबों में दर्ज़ करती चलती हूँ। मेरी किताबें मेरी ज़िंदगी और तजुर्बों का आईना है। सबकुछ खारा खट्टा वहाँ दर्ज़ है। Have a look।

डॉ अरविंद कुमार : आज से ठीक दस साल पहले मई माह में आपकी पहली कहानी आई। छपते ही ब्याह हुआ। क्या ये एक प्रेम विवाह था या परिवारिक सहमति वाला कोई विवाह था? आप नीलाभ को क्या पहले से जानती थीं? उनसे परिचय कैसे हुआ? विस्तार से बताइए।

नीलाभ आपसे उम्र में काफी बड़े थे। इस शादी को लेकर आपके और नीलाभ के घर वालों। मित्रों व रिश्तेदारों की क्या प्रतिक्रिया थी?

भूमिका द्विवेदी अश्क (कुछ सोचकर मुस्कुराते हुए) : असल में तो ये एक साहित्यिक विवाह है। दो साहित्य प्रेमियों का आपसी गठबन्धन। दो पक्के इलाहाबादियों का पराई धरती पर मेल। पारिवारिक विवाह से कहीं ज़्यादा अनुशासन था हमारे विवाह में। न हम लोग पहले मिले। न फोटो और जन्मपत्रियाँ ली दी गई। न साथ में समय गुज़ारा। बस मिले और उसी शाम विवाह हो गया। हम दोनों अपनी अपनी सौतेली दुनिया से बहुत उकताए हुए बहुत अकेले प्राणी थे। दिल्ली महानगर की बेगानेपन और अजनबी ज़िंदगी ने हम दो इलाहाबादियों को एकदम से मिलाया और हमेशा के लिए जोड़ दिया। मैं उनसे परिचित नहीं थी। उन्होंने भी महज मुझे एक प्रकाशित कहानी पढ़कर ही जाना था।

6 जून 2013 को उस रोज़ बहुत बारिश हो रही थी। हम पाँच लोग पहले कार में बैठे दो किलो जामुन खाते रहे। हम दो। और तीन हमारे गवाह। यानी नीलाभ जी के मित्र। बारिश थमने पर हम सब मण्डप में पँहुचे थे। यही था हमारी शादी का जश्न। बाद में कोर्ट में शादी के बाद बड़ी दावतें दी थी। पहली तो मजिस्ट्रेट ने अपनी ओर से ही केबिन में मिठाई बन्टवा दी। क्योंकि वो पिताजी अश्क साहब के प्रेमी निकल आये। उसके बाद तो दिल्ली और इलाहाबाद के कॉफी हाउज में। मुंबई में। हैदराबाद में। कुछ विलायत मे। कई सारी जगह होती रही।

प्रतिक्रिया का ये है कि इस दुनिया में जहाँ जिसका मजबूत और कानूनी अधिकार बनता है। वहाँ से उस मूल अधिकारी को दूर रखने के भीषण प्रयास किये जाते हैं। विशेष कर स्त्रियों को। सुप्रीम कोर्ट को मायके में भी अधिकारों के लिए कानूनों की ज़रूरत क्यूँ पड़ गई। पति न होने पर देवर। जेठ या अन्य ससुरालियों पर क्यूँ बहू की आजीविका चलाने का कानून बनाना पड़ गया। इन्हीं कोताहियों के चलते ऐसा किया जा रहा है। तो प्रतिक्रिया वही है जो परिपाटी से चला आ रहा है। मुँह पर मीठा। बाक़ी दूर दूर। मेरे बहुत प्रिय शायर। फ़ैज़ साहब। जो कभी हमारे घरेलू मेहमान भी बन चुके हैं। उन्होंने कहा है। "सुना है वो बात उनको बहुत नागवार गुज़री है। । । " जिस हक़। जिस ना ख़तम होने वाली बात। जिस उपेक्षित न किये जाने वाले वजूद और जिस अमिट प्रतिभा का ज़िक्र ज़बानी न होकर भी हर वक़्त लोगों के ज़ेहन से चिपका हुआ है। यही सबकुछ much more than enough है।

डॉ अरविंद कुमार : आपकी हरेक रचना में एक टीस होती है। दर्द और समस्या होती है। एक से दूसरी रचना में जबरदस्त विविधता भी होती है। समस्याओं से निजात और निवारण भी होता है। कैसे इतना लिख पाती हैं। कैसे इतने विविध विषयों को समेट पाती हैं? क्या ये तक़लीफ़ नीलाभ की बीमारी से उपजी है या अश्क परिवार के तजुर्बों से?

भूमिका द्विवेदी अश्क (लम्बी सांस लेते हुए) : बहुत कम वक़्त में बहुत उतार चढ़ाव वाली ज़िंदगी जी है मैंने। ख़ास कर नीलाभ जी से जुड़ने और उनकी बीमारी के बाद से बहुत बहुत ज़्यादा। अकेले ज़िंदगी की बागडोर थामकर निरंतर सफ़र में रहतीं हूँ। लेखन में यही सब एलिमेंट्स हैं जो विविधता। तक़लीफ़ और निवारण की राह लगातार निकालते रहते हैं। वो तीनों विश्वविद्यालयों ने जहाँ जहाँ मैंने पढाई की। वहाँ के गुरुजनों ने। माहौल ने भी बेहिसाब तजुर्बों से ज़ेहन को बहुत सम्वर्धित और असीम समृद्ध किया है। तक़लीफ़ ज़िंदगी और लेखन को तराशती है। इसलिए खुशनसीबों को ही बेपनाह तक़लीफ़ों

का ईनाम मिलता है।

डॉ अरविंद कुमार : आज के साहित्यिक खास करके दिल्ली के साहित्यिक माहौल को आप किस तरह से देखती हैं? एक बेबाक लेखिका की बेबाक टिप्पणी को आपके पाठक जरूर जानना चाहेंगे।

भूमिका द्विवेदी अश्क : साहित्य सृजन। ठहरे हुए समाज को लगातार आगे ले जाने की एक प्रक्रिया है। अब ये कुछ हद तक कोलकाता और इलाहाबाद से दिल्ली में शिफ्ट हो चुका है। बहुत तरक्कीशुदा और बेहतर माहौल है। बेशक। अपनी ज़मीन से बिछड़े हुए लोग यहीं इसी माहौल में आत्मीयताएं तलाशते हैं। थोड़ा सा और निस्स्वार्थी होता तो मुझे और भी पसन्द आता। दिल्ली की साहित्यिक बिरादरी से ये कहूँगी। "रूठे सुजन मनाइये। जो रूठे सौ बार"

डॉ अरविंद कुमार : सैकड़ों कहानियाँ। दस उपन्यास। बहुत सारी किताबें। खूब यात्राएँ। असंख्य तजुर्बे। ढाई सौ से ज़्यादा साक्षात्कार।

इन सबमें भूमिका द्विवेदी अश्क जी को सबसे प्रिय क्या है?

भूमिका द्विवेदी अश्क : कलम से इश्क़ है मुझे। इसलिए सबकुछ सबसे प्यारा है। क्योंकि सबकुछ अपना है। मुहब्बत की ये बहुत प्यारी दुनिया। ये बेहद हसीन देश। ये अदब की पुरकशिश महफ़िल। ये सबकुछ सबसे ज़्यादा खूबसूरत है। जहाँ ख़ुद को बयान करने के लिए। ख़ुद को बिखराने के लिए कलम हो। प्रिय लेखन विधा उपन्यास है। और प्रिय रचनाओं पर लगातार काम कर रहीं हूँ। "ख़ुदा का ज़िक्र करें या ख़ुदी की बात करें हमें तो इश्क़ से मतलब। किसी की बात करें फरिश्ते तुम भी नहीं हो। फरिश्ते हम भी नहीं हम आदमी हैं तो बस इसी की बात करें"

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।
प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

कहानी

प्रतिमा पुष्प

गुलाबी आंखों का दर्द

मम्मी जी देखिए आज फिर बाल्कनी के कोने वाले गमले में कबूतरों ने अंडे दे दिए हैं। ओह, फिर तो उधर कुछ सामान रख कर ओट कर दो वर्ना बाज या दूसरे शिकारी पक्षी मौका पा कर अंडे फोड़ देंगे।

जी मम्मी जी,इधर का दरवाजा भी बंद रखना होगा ताकि साफ्टी उधर न जाने पाए, है तो कुत्ता ही क्या पता वही अंडे तोड़ दे। ओह मां इधर ही तो थोड़ी धूप आती है, अब इधर का दरवाजा बंद कर दिया जाएगा तो इस ठंड में कपड़े सुखाने कहां जाएंगे और थोड़ी धूप तो हर इंसान को चाहिए होती है न।

तो क्या करें फिर, उजाड़ दें कबूतरों का बसेरा और कर दें इन्हें बेघर। पहले ही इंसान ने जंगल और पेड़ काट काट कर पक्षियों को बेघर कर दिया और तान दी ऊंची मीनारें जो गर्मियों में शोले की तरह तपती हुई लगती है और जाड़े में ठंडी, बिल्कुल तापमान का तो सत्यानाश हो गया है। महानगरों में तो ये समस्या इतनी ज्यादा हो गई है कि पक्षियों को भी इधर-उधर घरों में ही शरण लेनी पड़ती है।

इन्हें भी कोई काम नहीं है,न जाने कितना प्रेम करते हैं कि अंडे से बच्चे निकले और पंख फैलाए नहीं कि फिर से अंडे दे दिए ये कह कर किंजल हंस पड़ी।

पागल हो तुम ...पक्षी हैं इंसान नहीं। इन्हें अपने जीवन के लिए तमाम संघर्षों से गुजरना होता है। ये तो बस अपना जीवन बचाने में लगे रहते हैं।

एक ही काम है इनके पास .... कितनी गंदगी फैलाते रहते हैं और उधर जाओ तो गुलाबी आंखें मटकाते घूरते रहते हैं, इन्हें भी हमारा ही घर मिलता है। मकान मालिक को चाहिए कि कम से कम बाल्कनी में जाली लगवा देते लेकिन हमारे पहले तो इन आधे मकान मालिकों ने कब्जा जमा रखा है। दरवाजे खुले रह गए तो पूरे घर में पंख फड़फड़ाते एकांत तलाशते घरौंदा बनाने के लिए जगह तलाशते मिलेंगे, अब इनकी सुरक्षा के लिए यदि गर्मियों के दिन हैं तो तुरंत पंखा बंद करो। कितनी मुश्किल से तो निकाल पाती हूं इनको। तिनके और पंख साफ करते फिरो, जैसे कि मेरे पास और कोई काम नहीं है।

कबूतर का जोड़ा अपनी गुलाबी आंखों से किंजल को देखते हुए मुस्कुरा उठा।वे आपस में एक दूसरे को देखते हुए मानो गुटर गूं करते हुए कह रहे हों....देखो तो इस पगली को, एक तरफ तो हमारे अंडों की सुरक्षा के लिए चिंतित है दूसरी तरफ हमारा मजाक बना रही है।अरे हम घरेलू पक्षी हैं और वैसे भी अब वन तो रह नहीं गए हैं तो हम जाएं तो कहां जाएं।

किंजल बड़बड़ाती हुई काम करती रही। कभी बच्चे का होमवर्क तो कभी प्रोजेक्ट और गृहस्थी के कार्यों में किंजल इतनी व्यस्त रहती कि उसे अपने लिए समय निकालना मुश्किल हो जाता है। साफ्टी भी बेचारा घर में बंद बाल्कनी तक नहीं देख सकता। इन कबूतरों के अंडों को लेकर मन में खिजलाहट बनी रही।दिन भर की भागा दौड़ी में ठंड और थकान महसूस कर असमय

ही किंजल कंबल में घुस निद्रा के आगोश में समाती चली गई।

किंजल के आंख बंद करने के बाद ही कबूतरों का जोड़ा निश्चिंत हो कर पंख फड़फड़ाते हुए पूरे घर में उड़ने लगा। कबूतरी ने रोशनदान में तिनके जमाते हुए कबूतर से कहा..

सुनते हो, थोड़े तिनके तुम भी लाओ मेरे अंडे देने का समय आ ही गया समझो। हां जानू, बस तुम इन्ही तिनकों को समेट कर बैठो तब तक मैं और तिनके लाता हूं, फिर तुम्हारे लिए कुछ खाने के लिए ताजे कीड़े-मकोड़े भी तो लाना है।

आह.. लगता है कि अंडे अब किसी भी समय निकल जाएंगे।

ओह प्रिय मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं, फिर भी कुछ करता हूं..कबूतर गुलाबी आंखों से प्यार से कबूतरी को देख कर बाहर उड़ गया।

कबूतरी ने दो अंडे दिए, फिर अंडों के ऊपर ही उन्हें गर्म रखने के लिए अपने पंखों को छितरा कर बैठ गई।

यूं ही समय बीतता गया। जून की तपतपाती गर्मी पड़ने लगी। कबूतरों का जोड़ा परमानेंट कभी गमले में कभी रोशनदानों में अपने घरौंदे बनाते रहे।

कबूतरी ने पुनः अंडे दिए और पंखों को छितरा कर अंडों को छुपा कर बैठ गई। बाहर बहुत गर्मी थी, सूर्य प्रचंड वेग से तप रहे थे, गर्म हवा के थपेड़े मानों झुलसा ही डालेंगे। कुछ देर में कबूतर अपनी चोंच में एक मरा हुआ कीड़ा लेकर हांफते हुए आया और बोला.... ओह प्रिये, इतनी भीषण गर्मी में ताजे कीड़े-मकोड़े भी नहीं मिलते, बहुत मुश्किल से एक मरा हुआ कीड़ा ही ला सका, लो इसे तुम खा लो फिर मैं अपने लिए कुछ ढूंढने जाता हूं।

कबूतरी मुस्कराते हुए बोली,.. नहीं आप धूप में थक कर आए हैं, इसे आप ही खा लीजिए। मैं अब ठीक हूं, कुछ देर संभालिए अपने चुन्नू मुन्नू को मै भी जरा पंख खोल कर कुछ खा पी कर आती हूं। अचानक एक तेज आवाज से कबूतर चौंक कर उड़ गया।

तेज आवाज से किंजल की नींद टूट गई दिसंबर की ठंड में भी किंजल के चेहरे पर पसीने की बूंदें चमक उठी थी। वह भागती हुई बाल्कनी में गई वहां कबूतर और कबूतरी आराम से छाया में बैठकर अंडों की देखभाल कर रहे थे।

मां ये आवाज कैसी थी।

बाहर सड़क पर किसी गाड़ी का टायर पंचर हो गया होगा।

शाम तक कबूतर नहीं लौटा, दूसरे दिन भी नहीं लौटा, कबूतरी अंडों पर बैठी रही।

किंजल बाल्कनी में आ गई फिर भी गुलाबी आंखों से देखती कबूतरी टस से मस नहीं हुई, शायद उसे भी किंजल से कोई खतरा नजर नहीं आ रहा था। सपने में देखा हुआ जून का महीना अभी नहीं है, गुनगुनी धूप देह को सुकून दे रही है।किंजल ने बाल्कनी से नीचे सड़क पर देखा.... कुछ लड़के पक्षियों के शिकार करने वाले खिलौना गन लिए एक कबूतर को निशाना बना कर गन चलाने ही वाले थे, जब तक वह चिल्ला कर कुछ कहे और उन्हें ऐसा न करने के लिए मना करती प्लास्टिक की गोली मुंडेर पर बैठे कबूतर के पंख खोल कर उड़ने के पहले उसके सीने पर धांय की आवाज से जा लगी और कबूतर कलाबाजियां खाता जमीन पर आ गिरा .....

ओह.... अपना कबूतर कल से लौटा क्यों नहीं अब समझ में आया। किंजल की आंखों में आंसू आ गए थे और वो जब पलटी तो कबूतरी की गुलाबी आंखों की तरफ देख भी नहीं सकी। उफ़ कितने निर्दयी लोग हैं जो निरीह कबूतरों को भी नहीं छोड़ते। कानून की धज्जियां उड़ाते यूं सड़कों पर निरंकुश घूम रहे हैं।

किंजल ने देखा कि कालोनी के मोड़ पर जो बरगद का पेड़ था उसकी डालें काटी जा रही हैं।हरे पेड़ों को काटना और पक्षियों की हत्या करना कानूनन अपराध है.... लेकिन...

मां.... मां.... सामने मोड़ वाले पेड़ की डालियां काटी जा रही हैं।

हां टंडन जी का मकान बनने वाला है और बरगद की वजह से पूरे बिल्डिंग की सुंदरता ढक जाएगी और मकान में धूप व रोशनी मिलने लगेगी, इसके लिए उन्होंने

नगरपालिका से अनुमति ले ली है।

और नगर पालिका वालों ने अनुमति दे दी...

बेटा पैसा सबका मुंह बंद कर देता है....

उफ़... सिर्फ इस लिए कि उनका मकान पूरा दिखेगा नहीं इसलिए उन्होंने तो पूरा पेड़ ही मुंडा कर डाला।न जाने कितने पक्षियों को बेघर कर दिया बताइए भला।

किंजल ये कबूतरी ही कल से अकेले बैठी है इसका कबूतरवा अभी तक नहीं आया।

हूं ....कल आप कह रही थी न कि किसी गाड़ी का टायर ब्लास्ट हुआ होगा लेकिन नहीं मां, आज मैंने अपनी आंखों से एक कबूतर को शिकारी लड़कों की गोली से मरते देखा।

ओह....कैसा पाप समा गया है प्रभु जी... शिव शिव.. शिव शिव। मां मैं कबूतरी के लिए दाना पानी रख देती हूं,जब तक कबूतरी अंडे की सुरक्षा कर रही है।

सुशांत (किंजल के पति) किंजल हमें ये मकान छोड़ना पड़ेगा। मकान मालिक कह रहे थे कि उनके बेटे की शादी पड़ गई है इसलिए आप दूसरा मकान देख लें, हमें मकान की रिपेयरिंग करानी है। उन्होंने हमें एक महीने की मोहलत दी है, और मैंने ग्राउंड फ्लोर का एक फ्लैट भी देख लिया है। ओह...हम कब तक यूं ही मकान बदलते रहेंगे...जब तक सामान व्यवस्थित कर जीवन ढर्रे पर चलना शुरू ही होता है तब तक मकान बदलने की मजबूरी सर पर आ खड़ी होती है।

क्या किया जाए.. रोजी-रोटी के चक्कर में जो एक बार महानगरों की तरफ आया वो यहीं रच बस जाता है और मंहगाई इतनी ज्यादा है कि सिर्फ कमाओ- खाओ, किराया भरो और पैसे खतम... गांव में इतना बड़ा घर है और वहां रहने वाले सब शहरों में आ बसे हैं। अरे हां मां गांव से खबर मिली है कि हमारी जमीन पर सरकार ने फोर-लेन सड़क प्रस्तावित की है। सरकार जमीन का भरपूर मुआवजा भी देगी।

तो फिर तो हमारे पास जमीन भी नहीं बचेगी। क्या हम अपना खुद का फ्लैट नहीं ले सकते.किंजल ने बुदबुदाते हुए कहा।

सपना तो ये था कि रुपए कमा कर लौट आएंगे अपने गांव लेकिन महानगरों के मायाजाल से बहुत मुश्किल होता है निकलना।देखता हूं ये सरकार मुआवजा कब और कितना देती है। किंजल की मम्मी जी (सास)सोच रही थी और खेत खतम होना... जिस घर में दुल्हन बन कर उतरी थी.. सुशांत सोच रहा था...न जाने कब और कितना मुआवजा मिलेगा ... एक फ्लैट तो मिल ही जाएगा... किंजल सोच रही थी...कितने पेड़ कटेंगे...कितने पक्षियों के घर तबाह हो जाएंगे... किंजल किराए के फ्लैट में रहती है, ऊपरी मंजिल का तीन कमरे का मकान। हवा जैसी भी चले दरवाजा खोलते ही ठंडी गरम और पानी की सीधी बौछार पूरे घर में सीधे घुस कर मौसम के अनुसार घर भर में भर जाती है। ऊपर का फ्लैट होने के बाद भी किंजल यहां रच बस गई थी और कबूतरों व अन्य पक्षियों का साथ भी उसे भाने लगा था। लेकिन मकान मालिक का फरमान तो मानना ही पड़ेगा।

सामान की पैकिंग शुरू हो गई लेकिन किंजल इस बीच कबूतरी का खाना पानी बराबर रख देती।

सामान भी पैक हो चला था, अंडों से छोटे छोटे बच्चे निकल आए थे, वे भी गुलाबी व ग्रे कलर के छोटे-छोटे पंखों को लेकर कभी इधर कभी उधर घूमते रहते थे। बिल्कुल ऊपरी फ्लैट होने की वजह से बिल्ली नहीं आती थी और गमले को बिल्कुल किनारे अन्य गमलों के पीछे एक खाली टोकरी को इन्होंने अपना घर बनाया था। ऊपर से लकड़ियों से इसलिए ढक दिया गया था ताकि शिकारी पक्षियों की नजर अंडों तक न पहुंच सके। सुशांत ने बताया कि कल हम शिफ्टिंग करेंगे।

पीछे वाले गमले तो नहीं ले जाएंगे न.. नहीं उसके आगे वाले दो गमले भी छोड़ देंगे ताकि कबूतरों का घर सुरक्षित रहे। किंजल का मन आहत था, गांव का घर खेत सब खतम होने वाला है। एक आखिरी उम्मीद की हमारी गांव में जमीन और घर है...सब धूल धूसरित होता जा रहा था।

समान शिफ्ट हो रहा था, किंजल बार बार कबूतर बच्चों को देख आती। उसके मन में शायद फ्लैट छोड़ने से ज्यादा कबूतरों का साथ छूटने का दर्द भी था।इन दिनों में नन्हे कबूतरों के पंख भी बड़े हो गए थे और वो थोड़ा थोड़ा उड़ने लगे थे वे एक दो दिन में उड़ कर कर चले जाएंगे। इस बीच दूसरे कबूतरो ने भी बना बनाया घर देख कर बाल्कनी में ही पीछे वाले गमले में आपना स्थान चुन लिया था।

लगभग सारा सामान जा चुका था तभी मकान मालिक अपने फ्लैट का निरीक्षण करने ऊपर आ गए।

भाभी जी ये गमले तो अभी गए नहीं, मजदूरों से कहो इन्हें भी ले जाएं।

भाई साहब, गमले में कबूतरों ने अपने घर बना रखे हैं और मैं अपना घर तो हर वर्ष उजाड़ती और बसाती हूं,इन कबूतरों का घर बचा रहे तो शायद कभी मेरा भी घर हर वर्ष उजड़ने से बच जाए....

अरे नहीं भाभी, आपको तो गमले ले ही जाने पड़ेंगे वर्ना मुझे वैसे भी सफाई और रिपेयरिंग के दौरान गमले फिंकवा देने पड़ेंगे।

जी भाई साहब....आप ही फिंकवा दीजिएगा.... मुझसे तो नहीं होगा...न जाने किन अनजाने अपराधों की सजा हम भुगत रहे हैं कि हर वर्ष मकान बदलते हुए रह रहे हैं।

कबूतर पंख फड़फड़ाते हुए बाल्कनी की मुंडेर पर बैठा ही था कि मकान मालिक ने डंडा उठा कर गमलों पर दे मारा। गमले टूट कर बिखर गए, किंजल की आंखों में घर व खेत पर बुल्डोजर चलने लगा था और कबूतर अपनी गुलाबी आंखों में एक दर्द लिए फिर कहीं बसेरा बनाने के लिए उड़ गया और किंजल की आंखों में एक गुलाबी दर्द काफी देर तक ठहरा रहा।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

मटियामेट

लेखक : प्रभुदास पटेल
अनुवादक : डॉ॰ सोमाभाई पटेल

कहानी

दूर से धुँधली और गूंगी दिखाई देती पहाड़ी अब चहचहाने लगी थी। लक्ष्यभेदी पक्षियों की नज़र से बचने के लिए रंग-बिरंगे पक्षियों का झुंड उड़ता और सुरक्षित स्थान पर जाकर फिर से चहचहाने लगता। चौतरफ से उठती और कान फोड़ती तामार की आवाज मानो लापसी में कंकड़ समान लगती थी। हल्की हवा ने पेड़ों को झुमने के लिए मजबूर कर दिया था। हवा के झोके से झूमते पेड़ मानो पंख लहरा रहे हों ऐसा लगता था। आगे मौन पटवारी मोहनलाल और पीछे पीछे मैं। उन्होंने कहा : 'इस जंगल में जंगली जानवरों से नहीं। बल्कि सांप या अजगर से डर लगता है। इसलिए हाथ में डंडा लिया है।'

कॉलेज में जब से लोकसाहित्य पढ़ने का अवसर मिला तब से अज्ञात जातियों के जीवन की। रहन-सहन एवं पर्व-त्यौहारों के बारे में जानने की जिज्ञासा बढी थी। आज मोहनलाल के कारण उसे प्रत्यक्ष देखने और अनुभव करने का सुखद अवसर मिला था। हम थोड़ा चढ़ाव चढ़े होंगे। वहीँ मोहनलाल ने पूछा : 'साहब। वनवासी विस्तार में पहली मुलाक़ात होगी!'

'हाँ। हाँ।' कहते हुए मैंने जोड़ा : 'अच्छा हुआ जो आपसे परिचय हुआ। नहीं तो मेरा यहाँ आना नामुमकिन होता!'

'ऐसा नहीं है साहब। अज्ञात और वनवासी लोगों के बारे में जानने की जिज्ञासा तो आपको पहले से ही थी। मैं नहीं तो कोई दूसरा।' ऐसा नहीं। यार। आपको भी कहाँ ख़बर थी कि मुझे वनवासियों के बारे में जानने का विशेष रस है ? उच्च वर्ग के कर्मचारियों के प्रति सामान्य वर्ग के कर्मचारी किस प्रकार अंतर बनाए रखते हैं यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। लेकिन हमारे बीच अच्छा ट्यूनिंग या दोस्ती जैसा कुछ है|

मोहन पटेल राजस्थान बोर्डर पर पिछड़े विस्तार में पटवारी। अत: गुजरात-राजस्थान सीमा क्षेत्र के वनवासियों से परिचित है। उसे वनवासियों के जीवन-व्यवहारों। बोली से लेकर पर्व-उत्सवों एवं परम्पराओं के बारे में अच्छी जानकारी है। मेरे लिए तो 'पसंद था और वैद्य ने बताया' जैसा हुआ। पहाड़ी की चोटी पर पहुंचते ही प्रकृति का एक सुंदर नज़ारा देखा! चारों ओर धुंएँ से भरी पहाड़ियों की सौगातें। दूर तक दिखाई देने वाली पहाड़ियों की हारमाला। बीच में मिट्टी के घर धारण किये हुए नृत्य की मुद्रा में दिखती अनगिनत तलहटियाँ! 'कितना भाग्यशाली है वह जो यहाँ रहता है! 'बिलकुल प्राकृतिक। ... बिलकुल स्वर्ग!' मन ही मन बुदबुदाते हुए मैं उस सुंदर झलक को देखते हुए कहीं खो गया था। वहीँ एक बड़ी पहाड़ी पर लहराती ध्वजा की ओर इशारा करते हुए पटवारी ने कहा। 'साहब। हमें जिस जगह पहुँचना है। वह ध्वजा वाली पहाड़ी है।

और पहाड़ी से नीचे उतरते समय वहां के वनवासियों की नवरात्री-साधना। उत्सव-समारोहों में होने वाले विधि-विधान और नृत्य की रोचक कथाएँ सुनीं। माताज़ी के दरबार में साधकों द्वारा हो रही पूजा।

सजावट। आसपास के गाँवों के अनाज और घी इकट्ठा करना। माताज़ी के सान्निध्य में रहकर सेवा-पूजा और उपवास करना। भक्तों का ग़ोज आधी रात तक गाना और नृत्य करना। इन सब बातों में कब रास्ता कट गया पता ही नहीं चला। जैसे ही पहाड़ी से उतरे; ध्वजा की ओर से बज रहा ढोल स्पष्ट सुनाई दिया।

'यह ढोल क्यों पीटा जाता है ?' मैंने पूछ लिया।

मोहनलाल के मतानुसार। ढोल नवरात्रि की समाप्ति के अवसर पर बजाया जा रहा था। नवरात्रि की समाप्ति के अवसर पर पूरा पंथक उमड़ेगा। अनुष्ठानिक रूप से माताज़ी; भूत। प्रेत। डायन और जादू-टोना से पीड़ित लोगों की पीड़ा को दूर करेगी। इस पूरे आयोजन का आनंद लेने के लिए हृदय नाच रहा था। और ध्वजा वाली पहाड़ी के नजदीक पहुंचकर देखा तो बड़ी भीड़ उमड़ी थी। कोई नारियल-अगरबत्ती के साथ। कोई लोटा में घी लेकर तो कोई थाली के साथ। कोई नंगे पाँव माताज़ी के दरबार में आया था। कोई तो बार-बार ध्वजा की ओर देखकर मत्था टेक रहा था। 'आस्था का कोई विकल्प नहीं है।' मोहनलाल आगे; पीछे मैं! भावुकतापूर्ण अवस्था में ही हम दोनों माताज़ी के स्थानक तक पहुँच गये।

अर्धचन्द्राकार में चार अस्पष्ट मूर्तियाँ व्यवस्थित हैं। सामने माताज़ी का चौपड़। वहां माताज़ी का मुख्य भुआ (भक्त) प्रणाम की मुद्रा में लीन हो गया। पीछे दसेक भक्त भी उसका अनुकरण कर रहे थे। मूर्तियों के पीछे दो बुजुर्ग मिट्टी के गड्ढों से जवारा के लिए मिट्टी के बर्तन निकाल क्र उन्हें व्यवस्थित कर रहे थे। थोड़ा दूर दसेक बालिकाएँ मानो जवारा सिर पर उठाने का इंतजार कर रही थी। पटवारी और मुझे देखा कि 'हे राम राम साहेब' पधारें! पधारें!' कहते हुए गाँव के मुखी और कुछ लोग मेरी ओर दौड़ पड़े। उनके भाव और स्वागत से मेरा दिल खुश हो गया। मैंने भी प्रणाम की मुद्रा में हाथ जोड़े और सभी ने राम राम कहकर हाथ मिलाया। जैसा कि पहले हम मान चुके थे। पटवारी ने मेरा परिचय उनके मित्र के रूप में दिया। कुछ ही मिनटों में माताजी का डेरा लोगों से भर गया और हमने नीचे ही आसन ग्रहण कर लिया। अब भुए ने पात्र में अगरबत्ती जलाई और सभी मूर्तियों को धूप किया। फिर वह ध्यान की मुद्रा में बैठ कर मूर्तियों को ताकता रहा। थोड़ी देर के लिए। सभी को आश्चर्य हुआ। उसके सिर। कन्धों और पूरे गिरोह में एक कंपकंपी दौड़ गई। और वह 'अहे। अहे। सभाजनों' पुकार कर और फिर 'अहे आजी कालिका। ...आजी अम्बा ...' बोलते हुए धुनने लगा। मानो करंट लगा हो वैसे अन्य भक्त भी अपनी अपनी जगह खड़े हो गए और चिल्लाने लगे। फ़ौरन मुखिया ने 'घणी खम्मा माँ...घणी खम्मा' कहकर भुए में जोश भर दिया। उसने तीन-चार बार लोहे की जंजीर अपने पीठ पर मारी। भुए के बाद तीन-चार साधकों ने भी अनुकरण किया। यह देखकर मन में हुआ : 'अवश्य कोई सत होगा। नहीं जंजीरों की मार!' जंजीर डालने के बाद। सभी साधकों को एक अर्धवृत्ताकार में व्यवस्थित किया गया और वे धुनने लगे। और पीछे मोरपिंछ का जाडू घुमाते हुए भुआ ऐसे चक्कर लगा रहा था मानो गोपालक गाय चराने निकला हो! पंद्रह मिनट तक मनन करने के बाद भुआ माताज़ी की मूर्ति के सामने मत्था टेकते हुए बैठ गया। अपने सिर और पूरे शरीर को ज़ोर से धुनाते हुए एकदम सीधा बैठ गया। साधकों ने भी उसका अनुकरण किया। माहौल गंभीर और शांत हो गया। सभी साधक ने हाथ जोड़कर। सिर जुकाकर और अपने विचार प्रकट किये। एकाद मिनट के बाद सब चुपचाप वहीँ बैठ गये। फिर भुआ ने पहले मुखी के सामने नजर मिलाकर उसने चौतरफ़ देख लिया और मूर्तियों को फिर से धूप करते हुए प्रमुख मानी जाती मूर्ति के सामने बैठ गया। मानो नज़र बाँध रहा हो! मुखी ने पुकारा : 'चलें भई! सभी दुखीजन। चलें। माताज़ी के दरबार में बैठ जाएँ।'

माताज़ी के दरबार में कुछ लोग नीचे बैठ गये। कुछ लोगों को हल्की-सी कंपकंपी का अनुभव हुआ। कोई चिल्लाते हुए माहौल को गुंजित कर रहा था। और बाक़ी लोग माताज़ी का प्रताप मानकर माँ को बार-बार प्रणाम करते थे।

एक-एक करके दुखीजन भुए के पास अपना स्थान बना लेते हैं। बगल में बैठे हुए अनुभवी साधक ने पूछा :

'कौन-सा दुःख आ पड़ा कि माताज़ी के पास आना हुआ ?'

यदि कोई भूत-पिशाच से पीड़ित है तो वह धुनने लगता है। या उत्तर ही नहीं देता है। सामान्य तकलीफ़ वाला बोलने लगता है। भुआ सामने रखे हुए अनाज के ढेर में से अनाज उठाकर दूर फेंकता है। उसमें से वेण (दो-दो को जोड़ी) बनाकर संगीत की भाषा में कहता है। और सहायक साधक 'हाँ' कहते हुए 'माताज़ी की जय' पुकार रहा है। जादू-टोना। भूत-प्रेत के विभिन्न कारणों के उपचार में भुआ पीड़ित व्यक्ति के शरीर पर तेजी से जलती मशाल फेरता। काला धागा मंतर कर बांधता। अनाज के दाने मुट्ठी में लेकर उस पर फूंक मारते हुए पीड़ित को खिलाता। फिर उसकी पीठ पर एक हल्की जंजीर फटकारता। पीड़ित व्यक्ति संतुष्टि और ख़ुशी की भावना के साथ उठ खडा होता।

और मेरा मन उछलकूद करने लगा|

'यह सच में भुए का ढोंग है या सच ?'

'नहीं। नहीं। यदि कोई ढोंग होता तो पीड़ित लोग स्वस्थ और खुश होते ?'

'हाँ। यह सच है लेकिन...'

'उसमें ग़लत क्या है ? जहाँ आस्था है। वहां सब कुछ...' और अंत में एक दुखी महिला की बारी थी जो हमेशा फुसफुसाती और चिल्लाती रहती थी। उसे एक साधक ने आगे आने के लिए कहा। लेकिन वह आगे आएँ तब न ! दो साधकों ने खड़े होकर उसकी बांह पकड़ा तो वह आगे बढ़ने की बजाय चीखती हुई नीचे गिर जाती।

'माई के पास जाने में क्यों नानी मरती है ? कहते हुए एक साधक ने लात मार दी और चिल्लाती हुई वह भुए के सामने ढेर हो गई। अब माताज़ी के रूप में भुआ पुलिस और जज की दोहरी भूमिका निभा रहा था।

उसने औरत की चोटी पकड़ा तो चिल्लाहट के साथ वह बैठ गई और बिना पूछे ही बोलने लगी :

'मुझे छोड़ दें माँ। महीन चली जाती हूँ।'

'इस प्रकार सरलता से तू नहीं जाने वाली है।' कहते हुए भुए ने गर्जना की।

'नहीं। नहीं। खाता खुलवाकर ऐसे कैसे जा सकती है ?' इस औरत को फिर से परेशान करने का षडयंत्र रचना चाहती है ?'

औरत की बाजुओं पर मार के निशाँ उभरने लगे। बिखरे हुए बाल और फटी हुई आँखें देखकर मैं तो हैरान रह गया। मेरे मन में दया जगी। उसे कड़ी करने की कोशिश कर रहा था कि मोहनलाल ने मुझे ऐसा न करने का इशारा किया। और मैं वापस बैठ गया।

अब मामले की डोर साधक ने पकड़ी। बड़ी सख्ती से पूछा : ' तू कौन है ? और कहाँ से आयी है ?'

'मैं पहाड़ी पर रमने वाली...जंगल में भटकने वाली जोगणी माँ आयी हूँ।'

भुआ दहाड़ कर धुनने लगा और महिला को पीटना शुरू कर दिया। 'मैं पूरे मलक मैं घुमने वाली और काले सिर वाले मनुजों का दुःख दूर करने वाली; मेरे सामने ही झूठ ?' माताज़ी के दहाड़ के साथ ही दुखीयारी ने बोलना शुरू किया।

'झूठ नहीं बोलूँगी रे माई। मैं काले सिर वाला मनुज। इस बचुड़ी की जरा-सी भूल में मैं उसमें पैठी। माई।'

'इस बालक को दुःख किस बात का है ? उसका क्या गुनाह है ? बोल। बोल!'

'मैंने एक दिन थोड़ा सा दूध (छाछ) माँगा। इसने छाछ होते हुए भी मुझे धकेल दिया था। मैं दरवाजे से बाहर निकली कि इसने मेरी खिल्ली उड़ाई।'

दरमियान। सभी लोग आश्चर्य के साथ एक-दूसरे का मुँह देख रहे थे।

'तू कौन है। यह बोल...और प्रकट हो!' कहते हुए भुए ने उसके बाल खींचना

शुरू किया।

'नहीं। कहती हूँ रे...माई मारने बैठी हो ? कहते हुए औरत रोते हुए धुनने लगी : 'मुझे छोड़ दें माई...मुझे जाना है...जल गई...ओय माँ जल गई रे!' कहते हुए ज़ोर से रोने लगी। 'माई के दरबार में से कोई बिना पहचान दिए गया है क्या ? फिर तू ऐसे ही कैसे जा सकती है ?' कहते हुए भुए ने चुटकी ली और अपना इरादा स्पष्ट किया।'

'आग में मिर्च का धूप कीजिए!'

'ऐसा न कीजिए। माई!'

'ऐसा है ?' हा...हा...हा... करते हुए माँ (भुए) ने कहा : 'लें मिर्ची धूप! माफ़। और नाम नहीं देगी तो भी माफ़ ...लेकिन। तुझे कोई निशानी तो देनी होगी।'

'देती हूँ। निशानी देती हूँ।'

पूर्व में हरा नीम ही मेरा ठिकाना है।

उसके सामने वाले खेत में पानी की डंकी (हैण्डपंप) ही मेरी निशानी है।'

'बस। इतना ही ? आगे कुछ अधिक बता दे।'

'अपने दो दो बेटे। उनको मैंने ही मुई ने...' कहते हुए ज़ोर से रोने लगी।

भुआ दहाड़ा : 'सगे बेटे को ? ससुरी सापिन!'

इसी बीच एक युवक अपने आप में कुछ बुदबुदा रहा था। दो-तीन युवकों ने उसे समझा-बुझाकर बैठा दिया कि वह हट जाएँ। पर वह हड़बड़ी में मुट्ठियाँ भींचता हुआ उत्तर की ओर भागने लगा। दूसरों ने उसका पीछा किया। दूसरी तरफ़। भुए ने दुखियारी के सभी अनुष्ठानों को अचानक पूरा कर देने का आदेश किया।

इस प्रकार अनुष्ठान समाप्त हो गया। बाद में। आगे ढोली। पीछे जवारा धारण करने वाली बालिकाएँ और उनके पीछे भुए तथा साधकों के बीच रमते माताज़ी और अंत में भक्त नदी की ओर जा रहेथे। हम भी सीधे घर जाने के लिए नदी की ओर पहाड़ी पर चढ़ने लगे। उत्तर की ओर से ढोल-नगाड़ों की आवाज को भी निगल जाने वाली तबाही और चीख-पुकार सुनाई दी। मैं तो सोचता ही रह गया और आकाश को चीरती हुई जानलेवा चीख आकाश में गूंज उठी। और सुंदर पहाड़ियों के साथ ही मेरी आँखों में भी अँधेरा छाने लगा। एक झलक उस युवक और उसके साथियों की मिली। तो दूसरी। मानो घर का कोना ढूंढती और बचने हेतु भागने की कोशिश करती औरत की (चुड़ैल की) मिली। मैं सोचने लगा कि 'किसी कलयुगी बल ने इस जंगल और वनवासियों की सहज भोली भावनाओं। आस्थाओं को मटियामेट करना चाहा है।'

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय -क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

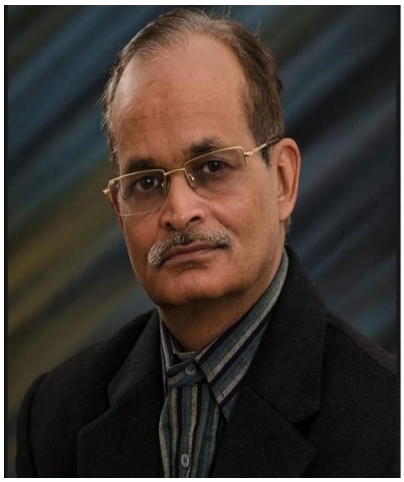

गगनचुम्बी

भवन बनवाया गया था गगनचुम्बी
बोझ से उम्मीद के भहरा गया है

पिल पड़े सब छोड़ कर अख़बार वाले
खबर मोटे अक्षरों में ही छपेगी
करवटें कुछ दिन में ही दम तोड़ देंगी
जल रही धरती भला कब तक तपेगी

मर गये वादे सभी ताजी हवा के
धुवां काली सोच का गहरा गया है

बन गया है तंत्र सारा ऊँट गाड़ी
बिना कुछ खाये जगह से क्यों हिलेगा
प्रश्न लेकर ख्वाब लाइन में लगे हैं
चल रही बैठक सही उत्तर मिलेगा

खा गया था खेत सारा वो सिपाही
क्रान्ति का झण्डा पुनः फहरा गया है

आ गया त्योहार मेढ़क गा रहे हैं
राग फिर बरसात का सदियों पुराना
गिरगिटों की फौज कसमें खा रही है
आ गई है ओढ़ कर गुजरा जमाना

लोग सारा खेल पढ़ने में लगे हैं
कौन अपराधी किसे ठहरा गया है

सूर्य प्रकाश मिश्र

जीवन की आपाधापी में

जीवन की आपाधापी में,
जाने क्या क्या छूट रहा है।
कुछ तो भीतर टूट रहा है।।

जीने की आवश्यकता ही,
जीवन का उद्देश्य हो गया।
स्वार्थ और लालच में देखा,
कैसे यह इंसान खो गया।।

अपने स्वार्थ में अंधा होकर,
अपनो को ही लूट रहा है।
कुछ तो भीतर टूट रहा है।।

मिथ्या को ही सत्य समझ कर,
उसके पीछे दौड़ रहा है।
साथ नही ले जाएगा पर,
पाई पाई जोड़ रहा है।।

समझ नही पाया है अब तक,
क्या सच है क्या झूठ रहा है।
कुछ तो भीतर टूट रहा है।।

कुछ अपनो की खातिर ही वो,
कुछ अपनो से दूर हो गया।
और बहाना समय का देकर,
कहता है मजबूर ही गया ।।

जिससे था जीवन का रिस्ता,
उससे ही अब रूठ रहा है।
कुछ तो भीतर टूट रहा है।।

जमा कर लिए सुख संसाधन,
खुशियों का एहसास नही है।
है तनाव में जीवन सारा
पूरी अभी तलास नही है ।।

किसी का गुस्सा प्रीत यहां पर,
किसी के ऊपर फूट रहा है।
कुछ तो भीतर टूट रहा है।।

संतोष कुमार 'प्रीत'

दिन हो के रात हो तेरा ही ख़याल हो

दिन हो के रात हो
बस तेरी ही बात हो।
छोटी सी हो 'चंद्रेश'
इक मुलाक़ात हो।

दिन हो के रात हो
तेरा ही ख़याल हो।
बादल बरसते हो जब
तेरा -मेरा साथ हो।

दिन हो के रात हो
हसरतें दीद तेरी हो।
ख़्वाब हो आँखों में
सपनों में बात हो।

दिन हो के रात हो
मन में मधुमास हो।
फूल खिले हो वासंती।
सनम तू पास हो।

चन्द्रकांता सिवाल 'चन्द्रेश'

जन हितैषी वाले देश-कुछ दृष्टांत

शेर सिंह

जैसे दुनिया में हर प्रकार के लोग हैं। लोगों का स्वभाव और मानसिकता है। वैसे ही दुनिया में हर प्रकार के देश हैं। जैसे कुछ लोग स्वभाव से ही दयालु और उदारमना होते हैं। तो कुछ रूढ़िवादी, कृपण। काईयां और गुस्सैल होते हैं। पहले प्रकार के लोगों की प्रतिशतता दूसरे किस्म के लोगों से बेशक कम हो। परन्तु सब उनका जैसा बनना और उन सा ही करना चाहते हैं। ऐसा करने का प्रयत्न भले ही कर लें। लेकिन ऐसा करना सबके वश की बात नहीं होती है। दूसरे किस्म के लोगों की तरह कोई भी बनना नहीं चाहता है। भले ही वह स्वयं उसी मानसिकता। सोच वाला क्यों न हो ? सद्कर्म करने वाले हमेशा दूसरों के लिए आदर्श होते हैं। दूसरों के लिए उदाहरण बनते हैं। वैसे। दुष्टों का भी इतिहास रहता है। लेकिन उनका स्मरण प्रशंसा के लिए नहीं। बल्कि घृणा। धिक्कार और भर्त्सना के तौर पर किया जाता है। उनका संदर्भ दुष्कर्मों के लिए लिया जाता है।

चलिये। हम उदारमना। अच्छे स्वभाव वाले लोगों और दुनिया के कुछ अच्छे और जन हितैषी देशों के संबंध में विचार करते हैं। पिछले कल 28 अप्रैल। 2023 और दिन शुक्रवार का था। मौसम खुला तथा वातावरण में। नर्म सी हल्की गर्मी जैसी थी। यहां का मौसम विभाग दिन का अधिकतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस बता रहा था। पिछले दो -तीन दिनों से बारिश नहीं हुई थी। इसलिए धुले भी सब कपड़े अच्छे से धूप में सूख गए थे। अन्यथा तो साफ आसमान और धूप के अभाव में। वाशिंग मशीन के ड्रायर में डालने के बावजूद कपड़े जल्दी नहीं सूखते हैं। बच्चों के बचपन के अभिन्न मित्र और शुभचिंतक रवि ने। आज हमें अपने घर में रात के भोजन पर आमंत्रित किया था।

रवि छतीसगढ़ के बिलासपुर। और उनकी पत्नी दिल्ली बल्कि राजस्थान की है। दिल्ली मे तो केवल रहे हैं। उनकी दो प्यारी - प्यारी बेटियां हैं। यहीं सिडनी के पब्लिक स्कूलों में पढ़ती हैं। यहां पब्लिक स्कूलों का मतलब सरकारी स्कूलों से है। रवि का कई कमरों वाला बड़ा सा घर है। लंबी -चौड़ी लॉन। लॉन में ट्रेडमिल सहित कसरत। व्यायाम के कई उपकरण। बड़े- बड़े पेड़ों के साथ ट्रेम्पोलिन तक। जैसे कोई रिसॉर्ट हो ! अपने ऑफिस के काम के सिलसिले में रवि का अमेरिका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, जर्मनी जैसे देशों में अक्सर जाना- आना लगा रहता है।

खाने की टेबल पर बैठे। तो यूं ही चर्चा के चलते रवि बता रहे थे कि उन्हें यहां आए लगभग 12 वर्ष हो गए हैं। यहां आने से पहले सिंगापुर में थे। ऑस्ट्रेलिया में जॉब के बेहतर मानकों। स्थितियों के कारण यहां आ गए। मेरी इस जिज्ञासा पर कि यहां नस्लवाद से संबंधित कोई मानसिकता तो नहीं है ? रवि ने बताया कि यहां आने से पहले लोगों ने उन्हें रेसिस्म। यानी नस्ली मानसिकता और भेदभव की प्रवृत्ति से

आगाह किया था। परन्तु जब यहां आए। तो उन्हें ऐसा कुछ लगा या दिखा नहीं। उनकी जॉब ऐसी है। जहां अभिजात वर्ग के लोगों से ही वास्ता पड़ता है। ऐसे लोगों के बीच ही सर्विस। रहन- सहन के कारण। उन्हें ऐसा कुछ कभी लगा नहीं। लेकिन एशियन अथवा अन्य देशों के लोग। जो अकुशल कारीगर। अर्ध शिक्षित होते हैं। उनके साथ संभवत: नस्लवादी व्यवहार या घटनाएं होती हों ? पक्के तौर पर फिर भी उन्हें जानकारी नहीं थी। लेकिन नस्ली टिप्पणी। कमेंट्स के बारे रवि ने एक किस्सा सुनाया। एक अंग्रेज ने लंदन में रवि के श्रीलंकन दोस्त को कहा- "ब्हाई यू हेव कम हेयर... गो टु इंडिया..."
" आई लव टु गो इंडिया... इफ हैव वीज़ा फॉर इंडिया। " उसने उस श्रीलंकन को इंडियन मानकर कमेंट्स किये थे।

रवि बता रहे थे कि यहां लोग नियम- कानून और अपने कार्यों के प्रति बहुत ईमानदार तथा सजग हैं। बल्कि अति की हद तक जागरूक। ऑफिस में भी सुबह 9 बजे से पहले और शाम को 4। 30। या ज्यादा से ज्यादा 5 बजे के बाद कोई नहीं बैठता है। लेकिन अति आवश्यकता के मामले में कभी -कभार आधा। पौना घंटा बेशक देर से ऑफिस से निकले।

हम आम जनों एवं विभिन्न देशों की सोच और मानसिकता का उल्लेख कर रहे थे। आईये। उसी विषय पर विमर्श करते हैं। उदारमना एवं आम लोगों की भलाई। कल्याण से संबंधित कार्य ऑस्ट्रेलिया की विशेषता है। मेलबोर्न कहें या मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। यहां बहुत सहायता और सहयोग करने वाले लोग हैं। अजनबियों का बहुत अच्छा मार्गदर्शन करते हैं। वहां लोकल ट्रेनों में सफर करने वाले चाहे कोई भी हो। कहीं का भी हो। किसी भी देश का हो। टिकट नहीं लगता है। कोई भाड़ा- किराया नहीं लिया जाता है। यानी कि बिलकुल मुफ्त

यात्रा। शहर के भीतर कहीं भी जाएं। दिन में चाहे कितनी बार भी जाएं। कोई टिकट नहीं। कोई चेकिंग नहीं! किसी भी प्रकार से बेटिकट पकड़े जाने का डर नहीं। हैरानी तो होती है। लेकिन है यह बिलकुल सच। यात्रा मुफ्त होने के बावजूद परन्तु लोग। इस सुविधा का दुरूपयोग नहीं करते हैं। ऑस्ट्रेलिया के जिन रेलवे स्टेशनों को मैंने देखा है। कभी- कभी ट्रेनों में सफर भी किये हैं। लेकिन कहीं भी प्लेटफार्म टिकट का प्रावधान नहीं देखा। बड़े जंक्शन वाले स्टेशनों में कार्ड स्वाईप करने पर ही

प्रवेश द्वार खुलता है। लेकिन स्टेशन में प्रवेश करने वाले केवल यात्री ही होते हैं। अन्य छोटे -बड़े स्टेशनों में प्लेटफार्म पर जाने के लिए। किसी प्रकार के कार्ड को स्वाईप करने। अथवा टिकट लेने का कोई प्रावधान नहीं है। अपने भारत में तो बिना टिकट सफर करना अपराध है। प्लेटफार्म टिकट खरीदे बिना आप रेलवे स्टेशन में प्रवेश नहीं कर सकते हैं। यह अलग बात है। ऐसा कानून होने के बावजूद लोग इसका पालन करना जरूरी नहीं समझते हैं।

न्यूजीलैंड तो और भी अच्छा है। और भी जन हितैषी वाला देश है। रवि बता रहे थे कि न्यूजीलैंड कई विषयों के लिए उदार तो है ही। खाने- पीने के मामले में भी अद्भुत है। खाने के स्टॉल। फूड प्लाज़ा आदि में ताजा पकाकर रखे हुए भोजन सामग्री को। शोरूम। शोकेस की तरह सजाकर रखे होते हैं। आप अपने मन पसंद खाना को पैकेट्स या डिब्बों में भरें। जैसे वेफे। टेबल के ऊपर भी करीने से सजाए कंटेनरों में भी खाने को ऐसे सजाकर रखते हैं। मानो शोरूम में खास प्रदर्शन के लिए रखे हुए हों। प्रदर्शित किये गए इन कंटेनरों से। आप अपनी पसंद और अपेक्षित मात्रा में अपने डिब्बे में भरिये। काऊंटर पर बैठा व्यक्ति उसे तौलेगा। जितना वजन होगा। उतने का पेमेंट करिये। बस! फिर डिब्बा या पैकेट को लेकर अपने घर आराम से बैठकर खाएं। यानी खाने को तौल कर

दिया जाता है। ऐसे ही। जैसे सब्जी मण्डी से तरकारी -भाजी इत्यादि को तौल कर खरीद लाते हैं।

मुझे इस बात पर भी आश्चर्य हो रहा था कि न्यूजीलैंड के सभी रेस्टोरेंट्स। होटलों में आप दाल। सब्जी या किसी भी प्रकार की करी आदि खरीद लें। तो उसके साथ उसी अनुपात में। मुफ्त में ही अच्छी पैंकिंग करते हुए भात। मतलब पका हुआ चावल दे देते हैं। चावल की मात्रा चाहे कितनी भी अधिक हो। उसके दाम या पैसे कभी नहीं लेते हैं। अपने देश में इस प्रकार की उदारता की हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। यह लोगों की मानसिकता और कुछ देशों की उदामना होने के उदाहरण हैं। कुछ लोग इसे बिजनेस टेक्टिस। या युक्ति मानते हैं। दाल। सब्जी का रेट अधिक लगाने की बात कह सकते हैं। लेकिन अपने देश की तुलना में ऑस्ट्रेलिया। न्यूजीलैंड सरीखे देशों में हर प्रकार के सामान। भोजन। पेय पदार्थ सभी सस्ते हैं। अपने देश में महीने में लाखों रूपये का वेतन लेने वाला मंहगाई से त्रस्त रहता है। यहां लाखों में नहीं 15- 20 हजार डॉलर की तनख्वाह पाने वाले बहुत कम लोग होते हैं। इतनी सी तनख्वाह को बहुत अधिक मानते हैं।

ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में 50 -55 वर्ष की आयु से ऊपर वाले लोग। अपनी पसंद तथा अपनी इच्छा। मर्जी से ऐसे जगहों में रहना शुरू कर देते हैं। जहां उनकी उम्र वाले लोग ही अधिक होते हैं। वे सभी एक बड़े से परिवार के सदस्यों। अथवा कुटुंबों की तरह मिल- जुल कर प्रेम। सौहार्द से रहते हैं। मनोवांछित सभी सुविधाओं से युक्त। कौतूहल से भरे चेहरे। शीघ्र ही एकमेव हो जाते। मानो जीवन का उद्देश्य अब धीरे- धीरे समझ आ रहा हो। अपने बीच में मौजूद लोगों को ही अपना रिश्तेदार। संबंधी। परिवार का सदस्य और अभिन्न मित्र मानते हैं। किसी प्रकार की कोई चिंता या तनाव में नहीं रहते हैं। बल्कि खुश रहते हैं। अपने मन पसंद का कार्य करते हैं। अपनी सुविधा और उपलब्ध साधनों- संसाधनों के अनुसार रहते हैं।

न्यूजीलैंड की प्राकृतिक एवं भौगोलिक विशेषताएं अनूठी हैं। गर्मियों की ऋतु में जहां सूरज रात दस बजे तक चमकता है। तो भौगोलिक दृष्टि से कई द्वीपों का समूह वाला यह देश। दुनिया के अग्रणी एवं सम्पन्न। विकसित देशों में शुमार है। जनसंख्या की दृष्टि से देखें। तो भारत के कई राज्यों से भी बहुत कम आबादी है। न्यूजीलैंड में इतनी अंधिक भेड़ हैं कि प्रति व्यक्ति के हिस्से में 6 से 7 भेडें आ जाएंगी। कहीं भी जाना हो। तो भेड़ ही भेड़ नजर आती हैं। ऊन से भरी अथवा भारी जिस्म वाली उन्नत नस्ल की भेडें। ऊन एवं दुग्ध उत्पादन के लिए भी यह देश प्रसिद्ध है। न्यूजीलैंड में डेयरी फार्म राष्ट्रीय आय के प्रमुख स्त्रोतों में से एक है।

इन देशों में प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में हैं। बस। मानव संसाधन सीमित है। इसीलिए अन्य देशों के प्रवासी लोगों की आमद यहां अधिक है। जबकि अपने भारत में मानव संसाधन अधिक है। तो प्राकृतिक संसाधन लगातार कम होते जा रहे हैं।

दुनिया के इन देशों में आम नागरिकों के लिए कितनी अच्छी और व्यवस्थित सुविधाएं सरकारे उपलब्ध कराती हैं। इसकी चर्चा। वर्णन किसी अन्य स्थान में फिर कभी। फिलहाल तो मैं आम लोगों और विभिन्न देशों की सरकारों की उदारमना पर ही मनन कर रहा हूं। आप भी सोचिये!

शेर सिंह

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

चलो सखि

बढ़ गया है मन बहुत
जुगनुओं का
कि सूरज को ये
मुँह चिढ़ाते हैं
रात के अंधेरों में
नाच - नाच
काला जश्न मनाते हैं
मार आते हैं ठोकर
उनके माथों पर
जो सूरज को
जल चढ़ाते हैं
लाल खिला गुड़हल
सजाते हैं
सखि री
कब तक
सोता रहेगा वो
कि कब तक
अंधकार ठठाता रहेगा
कि कब तक
उजाले की आस में
मन गहराता रहेगा
कि कैसे जगाऊँ उसे
कौन है
जो राह बताएगा
पखार तो आई हूँ
कई - कई बार
उसके पाँव
आँगन बुहार आई
इन पलकों से
पर उसकी
सुध तो लौटती नहीं
ओ सखि
उसका टूटता गुमान
मुझसे देखा नहीं जाता
मैं जानती हूँ
इन जुगनुओं की
कोई बिसात नहीं
उसके आगे
इनकी कोई
औकात नहीं
पर मन अब
हताश होता जाता है
शायद कुछ
निराश होता जाता है
सखि री
ओ सखि री
चलो न
एक बार और
जागते हैं उसे
मेरी नहीं सुनता वो
शायद
तुम्हारी सुन ले
गर जगा दिया तुमने
तो बची सारी उम्र
तुम्हारी बलाएँ लूँगी
गली - मुहल्ले
शहर - दर - शहर
तुम्हारा जस गाऊँगी
तुम्हारी राहों के काँटें
अपनी पलकों से उठाऊँगी
चलो न सखि
चलो न ....

प्रतिभा प्रभा

ग़ज़ल

1
आपने छीन ली रोशनी चाँद की।
खल रही क्यों भला अब कमी चाँद की।

जब तलक आसमां पर चमकता रहा,
आप करते रहे बंदगी चाँद की।

एक सूरज मय्यसर नहीं हो सका,
बस यही बदनसीबी रही चाँद की।

दिन तपाकर गया, रात जलती रही,
बढ़ गई हर तरफ तिश्नगी चाँद की।

नैन से नीर बरबस बरसने लगे,
पीर बादल ने ज्यों ही सुनी चाँद की।

चाँद के दाग नाहक गिनाए गए
भूल कर ताजगी, सादगी चाँद की।

तोड़कर तिरगी की सलाखें सभी,
फिर बिखरने लगी चाँदनी चाँद की।

विकास पाण्डेय 'विदीप्त'

तुम कब आओगे?

गाँव देवगढ़, अँधेरे में डूबा हुआ, ऊपर से रुक-रुक कर हो रही बरसात से तंग आकर रामरती कंदील की टेम मंद कर लेट गई और अपने आप बड़बड़ाने लगी, 'जून-जमाना कइसन है, एको पता नै, गाँव मा सबरे भितरे ओलिआन हाँ, केहू के रता-पता नै, पै ई लरिका के निता अबे तक सुरिज नहीं डूबा।' वह दरवाजा खोलकर अनेक दफे बाहर की टोह ले आई थी, गहरे अँधियारे के सिवा कुछ नहीं, हाथ पसारो तो अपना भी हाथ न दिखे।

ऊपर से आँसू टपकाता आसमान, जैसे यह संसार खत्म हो गया हो, शोक में आसमान रो रहा हो और वह संसार में अकेले बची हो। दो साल पहले पति के निधन हो गया था। तब वह बहुत रोई-चिल्लाई थी किंतु पति के देह में सुगबुगाहट तक नहीं हुई। वही राम आसरे, जब जिंदा थे तब पत्नी की एक पुकार पर काम-धाम छोड़कर आँधी की तरह दौड़ पड़ते थे। अब वह घर मे नाती (लड़की का बेटा) के साथ रहती है। उसका नाम शंकर है। वह गाँव से बीस किलोमीटर दूर शहर के एक बड़े नामी डॉक्टर की क्लीनिक में नौकरी करता है। आठ बजे तक रोज घर आ जाया करता था। आज अभी तक नहीं आया नौ बज गए फिर धीरे-दस, साढ़े दस, ग्यारह का समय हो चला होगा। शंकर की छाया तक घर नहीं पहुँची, न डॉक्टर की क्लीनिक से कोई चिड़िया ही उड़कर खबर बताने आई।

रामानुज 'अनुज'

रामरती, शंकर के समय पर घर न पहुँचने पर बेचैन तो उठी, तिस पर यह हठी बरसात उसे और परेशान किए थी। वह उठकर पुनः दरवाजा खोलकर बाहर आई, टोह लेने की गरज लिए पड़ोस के लड़के को पूरी ताकत से आवाज दी, 'चौबे---ओ चौबे! सो गइल का? तनिक संकरबा के पता करियो, अब्बे तक घर नईं आओ।'

चिंता से पागल, उमर को बहत्तर नम्बर पर खींचती विधवा औरत की सामर्थ्य बस इतनी था। तीन-चार बार आवाज लगाने के बाद भी चौबे के घर तरफ से जवाब न पाकर वह बुदबुदाई, 'सबरे मर गओ लगत है।'

वह निराशा और चिंता में डूबी हुई पलटकर दरवाजा बंद करना चाह रही थी, तभी काले रंग का मरियल काया का कुत्ता दुम हिलाता

हुआ सामने आकर खड़ा हो गया। रामरती कुत्ते से बोली 'अब का है रे?'

कुत्ता क्या जवाब दे, ले दे के संकेत के लिए उसके पास पूँछ है, सो फिर से हिला दिया। वह भीगा हुआ था, बरसात की ठंडी हवा खाकर कमजोर काया का पशु कांपने लगा था। रामरती को दया आ गई, वह कुत्ते से बोली, 'चल ओलर।'

संकेत समझकर कुत्ता भीतर आ गया। रामरती ने दरवाजा बंद कर लिया और जाकर तख़्त पर बैठ गई। चिंताओं ने साथ नहीं छोड़ा था, अब बुरे व बेअंत खयाल भी परेशान करने लगे थे, 'कहीं अइसन तो नाह, कहीं ओइसन त नाह।'

वह रोने लगी थी, आदमी जब खुद से, अपनी ताकत से, पराजय मंजूर कर लेता है, तब भगवान की याद आती है, वह दसों इंद्रियों से मदद की गुहार लगाता है। रामरती अति साधारण महिला थी, वह कब तक खुद को सम्हालती। रोते हुए तख्त से नीचे उतरी और दोनो हाथ जोड़कर निवेदन करने लगी, 'हे सन्नासी बाबा! संकरबा के रकछिया कीन्हे महाराज। दौड़ा महराज, गोहार लागा।'

सन्यासी बाबा या कोई भी देवी-देवता या भगवान प्रकट होकर मदद को तभी आते हैं, जब मानव के भीतर बैठा हुआ भगवान जागा हुआ हो, साहस-हिम्मत में शक्ति हो। रामरती की पुकार पर सन्यासी बाबा नहीं आए, अलबत्ता वह कुत्ता कूँ-कूँ करते हुए रामरती के निकट आ गया था।

'अब का है रे?' वह कुत्ते से सम्बोधित हुई।

'कूँ-कूँ-कूँ।'

रामरती ने समझा, यह भूखा है, रोटी माँग रहा है। वह उठकर रसोई में गई, जो रोटी शंकर के लिए रखी थी, उठा लाई और कुत्ते के आगे रखती हुई बोली, 'ले भकोस, संकरबा के भाग मा आज रोटी नै बदी।'

कुत्ता आशीषता हुआ रोटियाँ खाने लगा। इस बीच वह उस कमरे में गई, जहाँ कुल देवता का निवास था। वहीं सन्यासी बाबा का चिमटा भी रखा था। वह चिमटा उठाकर बाहर के कमरे में आई और कुत्ते को सुनाकर बोली, 'अब बहिरे जा के बइठ, हमू संकरबा के खोज निता निकरब।'

दरवाजे पर बाहर से सांकल चढ़ाकर वह घर से अंधियारे ही निकल पड़ी थी, आसमान से भीगने लायक पानी अब भी ठंडी बूँदों के रूप में टपक रहा था। इस यात्रा में वह अकेली नहीं थी उसके पीछे-पीछे कुत्ता भी चल रहा था।

*****

शहर के मशहूर डॉक्टर की क्लीनिक में शंकर नौकरी करता था। उसे शुरू में रोगी का नम्बर लगाने का काम मिला था। पहले रजिस्टर में नाम दर्ज करता फिर नम्बर लिखकर रोगी के परिजनों के हाथ में दे देता था। इसी क्रम में वह मरीजों को डॉक्टर साहब के पास भेजा करता था। इस काम में वह धीरे-धीरे पक्का हो गया तब वह चालाकी करने लगा। रजिस्टर में दो-तीन नम्बर बीच के छोड़ दिया करता था। जिसके बदले पचास रुपये लेकर नाम भर देता था। कोई पूछता तो कह देता, 'ये इमरजेंसी नम्बर हैं, जो सीरियस पेशेंट के वास्ते हैं।' इस तरह से सौ से लेकर दो सौ तक वह रोज कमा लेता था।

यह चालाकी बहुत दिन नहीं चली, डॉक्टर साहब से किसी ने शिकायत कर दी। वे दयालु थे, वे उसे गेट से हटाकर, सुई, ड्रिप वाले भाग में कर दिए। जल्दी ही वह उधर का काम सीख गया। उसके हाथ में सफाई थी, मरीज उसकी तारीफ करते और राजी-खुशी से दस-बीस रुपये हाथ में पकड़ा देते, वह नोट को माथे से छुआकर जेब में रख लेता था। यहाँ भी किस्मत ने साथ नहीं दिया, डॉक्टर साहब को पता लग गया। वे उसे पास बुलाकर प्यार से पूछने लगे, 'तुम सुई लगाने के अलग से पैसा क्यों लेते हो?'

'मैं किसी से माँगता नहीं, वे खुश होकर अपने से दे देते हैं।'

'कितना कमा लेते हो?

'भाजी-तरकारी का निकल आता है साहब!'

'तुम्हें किसी से पैसा नहीं लेना चाहिए, ऐसी छोटी-मोटी सेवाएं मेरे तरफ से निःशुल्क हैं।'

'ठीक है साहब! मैं अब किसी से कुछ नहीं लूँगा।'

घटना की रात क्लीनिक रोज की तरह शाम को सात बजे बंद हुई थी। शंकर समय से घर के लिए निकला था। रामरती को शहर पहुँचने पर सबेरा हो चला था। पूर्व दिशा से प्रकाश आने लगा था, मनुष्य सोया था, चौपाए चहलकदमी करने लगे थे, पक्षी समुदाय इधर-उधर उड़कर पंखों में जोर भरने लगे थे। उजाला बढ़ गया था, रामरती डॉक्टर साहब के द्वार में खड़ी बंगले की भव्यता देखकर ताज्जुब कर रही थी।

वह खड़े-खड़े सोचने लगी, 'रे दऊ अत्ता बड़ा घर, ई मा कित्ते मनई रहबे होई?'

उसके भीतर से अज्ञात आवाज सुनाई पड़ी, 'रमरतिया, पगलेट! ई देउतन के घर आहीं रे, तैं करमबली हए के इतने सुंदर घर का आँखिन से देखी रहे। आज के जुग मा सपन तक धोखेबाज हैं----अरे! का उनखर बिगर जात जो हमू का जिहाज़ मा बैठाइ के दऊ देखाए देतें, बड़े होटल मा लइ जाए के मलाई मार के लस्सी----!'

'चुप्प, कउन है रे, बदख़याली करत बा।' वह खुद को डाँटती हुई बोली।

रामरती, इधर-उधर नजर फेरकर देखने लगी, किंतु कुछ नहीं, सिर्फ बीच सड़क पर मरणासन्न कुतिया के प्राण को निकालते हुए, सूखे थनों को नोचते हुए चार की तादाद में कुंहकुहाते अबोध पिल्ले।'

उसे शंकर की जोर-जोर से याद आने लगी, 'कहाँ होगा? क्या खाया होगा? कहाँ सोया होगा? उसे रुलाई फूट पड़ी, किंतु वह रोई नहीं, खुद को सहेज ली, यह सोचकर कि, 'एक आतिमा दुसरे लोक मा जाय रही है, ऐसन मा रोबा न चाही, बलुक जीवात्मा का आखिरी परनाम करबे चाही।'

वह कुतिया के नजदीक गई और हाथ जोड़कर कहने लगी, 'मोर परनाम, जा अब, सरीर का जादा दुक्ख न दे। पिल्लन का असीस दे, इज्जत के दुई रोटी इनखा मिलै।'

उसे मेन गेट पर लगी डोर बेल के विषय में ज्ञान नहीं था। ये तो अच्छा हुआ कि बंगला में काम करने वाली बाई आ गई, उसके पीछे-पीछे वह भी दाखिल हो गई। किसी के पीछे चलने की आहट पाकर बाई पलटी, रामरती को देखकर डाँटने लगी, 'ऐ बुढ़िया, चल बाहर निकल।'

रामरती रोती हुई बताने लगी, 'मोर नाती संकरबा, डांकदर साहब के लघे नोकरी में था। कल्ह रतिया का घरे नहीं पहुँचा, डाकदर साहब से पूछन को आबे हूँ।'

बाई पुनः डाँटकर बोली, 'चल हट, लड़का घर नहीं गया तो पुलिस से कह, इधर कहकर क्या मिलेगा तुझे?'

'डाकदर साहब में मिलबाय दो बाई सा. तोहार कोरबा हरियर रही, बड़ी किरपा होई।'

बाई का दिल पसीजा, मनुष्यता जागी, आँखों में दया उतरी, वह धीरे से बोली, 'बाहर इंतज़ार करो, मैं साहब को मैं बताती हूँ।'

डॉक्टर साहब बाहर निकले, रामरती की आधी-अधूरी बात सुने, फिर तल्ख लहजे में बोले, 'आ जाएगा, रात किसी दोस्त के घर रुक गया होगा। दस बजे क्लीनिक खुलता है, वह ड्यूटी करने आएगा, मिल लेना।'

बड़े लोग कम बोलते हैं, थोड़े में बड़ी बात बोलते हैं। नेता, बहुत बोलते हैं, मतलब की बात कम बोलते हैं, अभिनेता, बोलना शुरू करते हैं तो चुप नहीं होते, मृत्यु उपरांत भी बोलते हैं। रामरती पूछते-पूछते क्लीनिक पहुँच गई। दस बजने लगे पर क्लिनिक का सटर नहीं उठा। प्रतिदिन क्लिनिक शंकर ही खोलता था, साफ-सफाई करता था। साढ़े दस बजे डॉक्टर साहब आए, क्लीनिक बंद देखकर सिर खुजलाए, इधर-उधर फोन मिलाए, बात किए फिर चिंतित होकर रामरती से बोले, 'अम्मा! तुम घर जाओ, शंकर जैसे ही मिलेगा, मैं छुट्टी देकर घर भेज दूँगा।'

रामरती, ठहरकर क्या करती? तरह-तरह की आशंकाओं का बोझ उठाए हुए वह इधर-उधर शंकर की तलाश में फिरती रही। बाजार करने गाँव के कुछ शहर आए हुए थे। संयोग से रामरती की मुलाकात उनसे हो गई। वे किसी तरह से समझाबुझाकर उसे गाँव ले आए।

बात फैली, रामरती के घर भीड़ जुटने लगी। खबर पाते ही शंकर के माता-पिता भी आए। जो भी आता वह रामरती में दोष तलाशता, दबी जुबान से बे-सिर-पैर की बातें भी उठी, बातों का केंद्र, किसी भूकम्प की तरफ रामरती के इर्दगिर्द होता था। दो दिन से भूखी प्यासी वह कब तक लोगों की बातों का जवाब देती, वह चक्कर खाकर भूमि पर उलट गई।

इसी तरह से खोजबीन करते हुए दो पखवारे गुजर गए। शंकर को न पुलिस तलाश पाई, न उसके माता-पिता, न उनके भाई-हितुआ, जैसे उसे जमीन निगल गई हो या कोई राक्षस आसमान में उठा ले गया हो। कुछ भी सम्भव है, क्योंकि अच्छे श्रमिकों की तादाद अभी भी दूसरे ग्रहों की तुलना में धरती पर अधिक है।

अब रामरती अकेली है, उसकी सगी बेटी-दामाद भी लांछन लगाकर किनारा कर लिए हैं। गाँव का कोई आदमी उसके पास नहीं जाता है, न उसे किसी मौके पर बुलाया जाता है। बच्चे उसे पगलिया कहकर चिढ़ाते हैं। वह किसी की बात का बुरा नहीं मानती न जवाब देती है। वह दिन भर शंकर की फोटो लिए गाँव-गाँव फिरती है। जो भी मिलता है उसे फोटो दिखाकर पूछती है, 'ई लरिका का देखबो है केतू।' वह न में सिर हिलाकर चला जाता। वह हार नहीं मानती, दूसरे से यही पूछती है। इसी तरह से दिन बीत जाता है। शाम गहराने के पहले घर लौट आती है, शंकर के लिए रोटी बनाती है, फिर द्वार पर देर रात तक कंदील जलाए हुए कुत्ते के साथ शंकर के इंतज़ार में बैठी रहती है। उसे पक्का भरोसा है कि शंकर लौटकर जरूर आएगा।

□□□□□

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

विषय-बहुत प्यार करता हूँ

मैं अपने आप से बहुत प्यार करता हूँ।
मेरा प्यार नित्य है
इसीलिए मुझसे प्यार करने के लिए
गहन निशा को चीर कर
सूरज रोज निकलता है
भोर होती है।

मुझसे प्यार करने के लिए ही
नदियाँ सलिला हैं
अंबर सूर्य-चंद्र-तारों के/
अलंकरण धारण करता है
मैं अपने आप से बहुत प्यार करता हूँ।

पवन मुझे प्यार विभोर देखने के लिए
धरती से अंबर तक प्रवाहित होता है
मेरा अपने आप से प्यार देखकर
प्रभात वेला में
खग कुल कलरव गान करते हैं
और दक्षिण दिशा से
मलय समीर प्रवाहित होता है
मैं अपने आप से बहुत प्यार करता हूँ
इसीलिए दिग्वधुएँ/
नवल परिधान धारण करती हैं
और वैज्ञानिक?
तमाम आविष्कार
मुझे अपने आप से/
प्यार करते हुए देखकर
ये हरे-भरे वृक्ष
धूप और शीत सहकर भी
मेरे लिए फल और छाया धारण करते हैं।

अपने प्यार में विभोर होकर
मैं कविताएँ लिखता हूँ
इन कविताओं में स्वयं/
भाव के रूप में व्यक्त होता हूँ
और तमाम पाठक और पाठिकाओं
के रूप में
इन भावों से भावित होकर
अपने आप से बहुत प्यार करता हूँ।

और तुम?
तुम मेरी प्रेमिका/पत्नी/अर्धांगिनी
मेरा वही गहन प्यार पाने के लिए
मेरे पास आई हो
पर इतना गुमसुम क्यों रहा करती हो
जब आर्द्रा बनकर मैं बरसता हूँ
भीगो,नाच-नाच कर भीगो
जैसे ये वृक्ष झूम-झूम कर भीगते हैं।

स्वार्थ के परिधान उतार फेंको
यह प्यार को सिमित कर देता है
जैसे कुहरा प्रकाश का अवरोधक है
मेरा प्यार बच्चों की
किलकारी में देखो
बहुत प्यार उमड़ेगा
यह प्यार का गंगा सागर है
कैलाश का पावन आरोहण है
मेरे इस प्यार की
सारे तीर्थ परिक्रमा करते हैं
प्यार विस्तारित है जितना परमात्मा।

लिखो प्यार की कविताएँ लिखो
जिसमें प्यार के सिवा और कुछ न हो
जहाँ प्यार होता है
आशा-अभिलाषा और जगत तृष्णाएँ
अपने आप पूर्ण हो जाती हैं।

तुम समझती हो मुझे लकवा हो गया है
मेरे स्वरूप तक
लकवा का प्रवेश संभव नहीं
जहाँ-जहाँ स्थूल देखना
समझ लेना वहाँ भी
लकवा हो सकता है
जितना घृणास्पद देह है
उतना ही घृणास्पद लकवा
देह और लकवा
दोनो सजातीय हैं
जब इस देह पर मैने
कोढ़ धारण कर लिया था
तब भी पार्वती
मुझे छोड़कर कहीं नहीं गई
भक्तों से आह्वान करती रही
कोई है जो मेरे पति को
गंगा स्नान करा दे
बहुत से पार्वती की देह
देखकर ललचाए थे
पर कोई ऐसा भी निकला
जो कोढ़युक्त देह को
गंगा नहलाने ले गया,
किसी के बताने पर तुलसी ने तो
कोढ़ी के चरण के चरण पकड़ लिए थे
आप मेरे इष्ट के दर्शन कराएँ
जब तक इष्ट के दर्शन का
वचन नहीं देते
आप के पग को
छोड़ने वाला नहीं हूँ
मैं अपने आप से बहुत प्यार करता हूँ
इसलिए चराचर मुझसे प्यार करता है।

गुरुदेव ने कहा,"वह चिन्मय है"
जो चिन्मय है
वही तुम हो वही मैं हूँ
वही प्रेम स्वरूप है
वही प्रेम चाहता है
मैं अपने आप से बहुत प्यार करता हूँ
वही प्यार पाने के लिए
गुरुदेव पधारे
वही प्रेम पाने के लिए तुम भी
मैं अपने आप से बहुत प्यार करता हूँ।।

बाबा कल्पनेश